૫૫

૧૯૬
કહાની

૮૦૦૨૪
૧૦-૩-૯૮
(ગુજરાત વિ.) [illegible]

१५६
कहानी
44
क्रमांक 20025
दिनांक 10-3-88

सपनों का कैदी

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के लेखक कृश्न चन्दर की रचनाएं बड़े चाव से पढ़ी जाती हैं
वे कहानीकार, उपन्यासकार, नाटककार और व्यग्यकार सभी कुछ हैं
'सपनों का कैदी' कृश्न चन्दर की बेजोड़ कहानियों का संकलन है
हरेक कहानी अपने छोटे-से आकार में उपन्यास का सा फैलाव और कविता की सी रवानी लिए हुए है
इसमें लेखक की कलम कहीं प्रकृति की रंगीनियों को चित्रित करती है तो कहीं जीवन के सपनों को और कहीं फिल्म की रंग-बिरंगी दुनिया को…

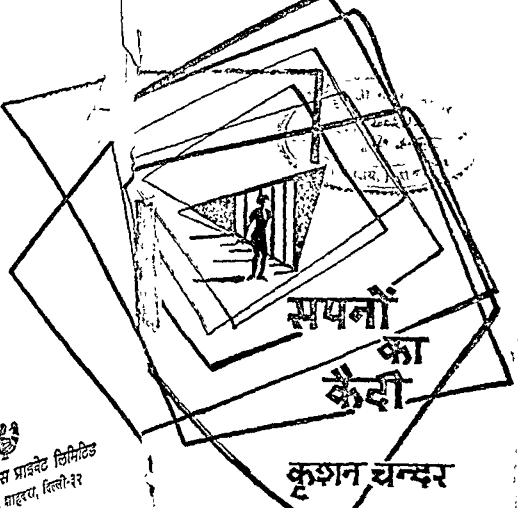

सपनों का कैदी

कृश्न चन्दर

क्स प्राइवेट लिमिटेड
, शाहदरा, दिल्ली-३२

क्रम

पहला दिन	७
काकटेल	१९
अगली बहार में	२८
शैतान का इस्तीफा	४१
मक्की के दाने	५०
चाबुक	६३
बड़ा आदमी	७५
दसवां पुल	९०
सपनों का कैदी	१०९

१

पहला दिन

आज नई हीरोइन की शूटिंग का पहला दिन था।

मेकअप-रूम में नई हीरोइन लाल मखमल के गद्देवाले खूबसूरत स्टूल पर बैठी थी और हेड मेकअपमैन उसके चेहरे का मेकअप कर रहा था। एक असिस्टेंट उसके दायें बाजू का मेकअप कर रहा था, दूसरा असिस्टेंट बायें बाजू का। तीसरा असिस्टेंट नई हीरोइन के पाँवों की सजावट में लगा था। एक हेयरड्रेसर औरत नई हीरोइन के बालों को धीरे-धीरे खोलने में व्यस्त थी। सामने शृंगार-मेज पर पेरिस, लंदन और हालीवुड के शृंगार-प्रसाधन बिखरे हुए दिखाई दे रहे थे।

एक वक्त वह था जब नई हीरोइन को एक मामूली जापानी लिपस्टिक के लिए हफ्तों अपने शौहर से लड़ना पड़ता था। इस वक्त उसका शौहर मदन इसी मेकअप-रूम के एक कोने में बैठा हुआ खामोशी से यही सोच-सोचकर मुस्करा रहा था : कैसी मुश्किल जिन्दगी थी उन दोनों की!

आज से तीन साल पहले मदन दिल्ली में क्लर्क था—थर्ड डिवीजन क्लर्क, और एक सौ साठ रुपये तनख्वाह पाता था। अभाव और गरीबी की जिंदगी थी। कभी कोट का कालर फटा है, तो कभी कमीज की आस्तीन, तो कभी ब्लाउज की पीठ। आगे-पीछे ऊपर से वह दिल्ली की जिंदगी को देखता था उसे वह जिंदगी कटी-फटी, सड़ी हुई और तार-तार नजर आती। ऐसी जिंदगी,

जिसमें कोई आसमान नहीं होता, कोई फूल नहीं होता, कोई मुस्कराहट नहीं होती। एक भूख की मारी, झल्लाई, खिसियाई हुई जिंदगी जो एक पुरानी बदबूदार तिरपाल की तरह दिनों, महीनों और सालों के खूंटों से बंधी हुई हर वक्त चेतना पर छायी रहती है। मदन उस जिंदगी के हर खूंटे को तोड़ देना चाहता था और किसी मौके की तलाश में था।

यह मौका उसे मलिक गिरधारीलाल ने दे दिया। मलिक गिरधारीलाल उसके दफ्तर का सुपरिंटेंडेंट था। उन्हीं दिनों दफ्तर में एक असिस्टेंट की नई जगह मंजूर हुई थी जिसके लिए मदन ने भी अर्जी दी थी और मदन सीनियर था और योग्य भी था और मलिक गिरधारीलाल का चहेता भी था। मलिक गिरधारीलाल ने जब उसकी अर्जी पढ़ी, उसे अपने पास बुलाया और कहा, 'मदन, तुम्हारी अर्जी में कई खामियां हैं।'

'तो आप ही कोई गुर बताइए।'

मलिक गिरधारीलाल ने कुछ देर रुककर मदन की अर्जी उसे वापस करते हुए कहा, 'आज रात को मैं तुम्हारे घर आऊंगा और तुम्हें बताऊंगा।'

मदन बेहद खुश हुआ। घर जाकर उसने अपनी बीवी प्रेमलता से खास तौर पर अच्छा खाना तैयार करने की फरमाइश की। प्रेमलता ने बड़ी मेहनत से रोगन-जोश, पनीर-मटर, आलू-गोभी और गुच्छियोंवाला पुलाव तैयार किया।

सरे-शाम ही मलिक गिरधारीलाल मदन के घर आ गया और साथ ही व्हिस्की की एक बोतल भी लेता आया। प्रेमलता ने जल्दी से पापड़ तले, बेसन और प्याज के पकौड़े तैयार किए और प्लेटों में सजाकर बीच-बीच में खुद आकर उन्हें पेश करती रही।

चौथे पेग पर वह पालक के सागवाली फुलकियां प्लेट में सजाकर लाई तो मलिक गिरधारीलाल ने बेइख्तियार होकर उसका हाथ पकड़ लिया और बोला, 'प्रेमलता, तू भी बैठ जा और आज हमारे साथ व्हिस्की की एक चुस्की लगा ले। तेरा पति मेरा असिस्टेंट होने जा रहा है।'

प्रेमलता सर से पांव तक कांपने लगी। उसकी आंखों में आंसू उमड़ आए, क्योंकि आज तक उसके पति के सिवा किसीने उसे इस तरह हाथ तक न लगाया था। फुलकियों की प्लेट उसके हाथ से गिरकर टूट गई और मदन ने गरजकर कहा, 'मलिक गिरधारीलाल, मेरी बीवी को हाथ लगाने की हिम्मत तुझे कैसे हुई ?'

मदन का चांस मारा गया। उसके बजाय सरदार अवतारसिंह असिस्टेंट बन गया। फिर कुछ दिनों के बाद किसी मामूली गलती की बिना पर मदन अपनी नौकरी से अलग कर दिया गया और उसने कई महीने दिल्ली के दफ्तरों में टक्करें मारने के बाद बम्बई आने की ठानी, क्योंकि उसकी बीवी बड़ी खूबसूरत थी। मदन के दोस्तों का ख्याल था कि प्रेमलता उतनी हसीन है जितनी नसीम 'पुकार' में थी, वहीदा रहमान 'प्यासा' में थी, मधुबाला 'मुगलेआज़म' में थी। इसलिए मदन को चाहिए कि प्रेमलता को बम्बई ले जाए। दिल्ली में खूबसूरत बीवीवाले मर्द की तरक्की के लिए कितनी गुंजाइश है ! मदन अगर असिस्टेंट भी बन जाता तो ज्यादा से ज्यादा ढाई सौ रुपल्ली पाने लगता। एक सौ साठ के बजाय ढाई सौ रुपये। यानी नब्बे के लिए अपनी इज्जत गवा देता। यह तो सरासर हिमाकत है। इसलिए मदन को सीधे बम्बई जाना चाहिए।

मगर जब मदन ने प्रेमलता से इसका ज़िक्र किया तो वह किसी तरह राज़ी न हुई। वह एक घरेलू लड़की थी। उसे खाना पकाना, सीना-पिरोना, कपड़े धोना, झाड़ू देना और अपने मर्द के लिए स्वेटर बुनना बहुत पसंद था। वह चौदह रुपये की साड़ी और दो रुपये के ब्लाउज़ में बेहद खुश और मगन थी। नहीं, वह कभी बम्बई नहीं जाएगी। वह स्कूल में काम करेगी, मगर बम्बई नहीं जाएगी।

पहले दो-तीन दिन तो मदन उसे समझाता रहा। जब वह किसी तरह न मानी तो वह उसे पीटने लगा। दो दिन चार चोट की मार खाकर प्रेमलता सीधी हो गई और बम्बई जाने के लिए तैयार हो गई।

जब प्रेमलता और मदन बोरीबंदर के स्टेशन पर उतरे, तो उनके पास सिर्फ एक बिस्तर था, दो सूटकेस थे, कुछ सौ रुपये थे,

[illegible] अमेरिका के [illegible]

[illegible] किया। [illegible]

[illegible] अध्ययन [illegible]

[illegible]

लिए चली गई। लेडी हेयर-ड्रेसर और दो नौकरानियां उसकी सेवा में थीं।

हीरोइन को यूं जाते देखकर मदन के होंठों पर विजयोल्लास की एक मुस्कराहट दौड़ गई। इस दिन के लिए उसने संघर्ष किया था। इस दिन के लिए वह जिया था। इस दिन के लिए उसने फाके किए थे। चने खाकर, मैली पतलून और मैली कमीज़ पहनकर तपती दोपहरियों या मूसलाधार बरसात से भीगी हुई शामों में वह प्रोड्यूसरों के दफ्तरों और घरों के चक्कर लगाता रहा था। आज उसकी कामयाबी का पहला दिन था। कामयाबी की पहली सीढ़ी उसे चिमनभाई ने सुझाई थी। चिमनभाई, फिल्म प्रोड्यूसरों को किराये पर ड्रेस सप्लाई करता था और अक्सर किसी न किसी प्रोड्यूसर के दफ्तर या स्टूडियो में उसे मिल जाता था। एक दिन जब मदन फटेहालों इस तरह घूम रहा था, चिमनभाई ने उसे अपने पास बुलाया और उससे पूछा, 'कहीं काम बना ?'

'नहीं।'

'तुम निरे गधे हो !'

अब मदन ने गाली सुनकर भी खामोश रह जाना सीख लिया था। इसीलिए वह खामोश रहा।

देर तक चिमनभाई बड़े गुस्से में उसकी तरफ देखकर घूरता रहा। आखिर बोला, 'आज शाम को मैं तुम्हारे घर आऊंगा, और तुम्हें कुछ गुर की बातें बताऊंगा।'

प्रेमलता ने अपनी साड़ी के फटे हुए आंचल से अपनी जवानी को ढांपने की नाकाम कोशिश की, फिर उसने बेज़ार होकर मुंह फेर लिया। जहां जाओ, कोई न कोई मलिक गिरधारीलाल मिल जाता है।

मगर उस शाम चिमनभाई ने उनके झोंपड़े में बैठकर काजू पीते हुए कोई गलत बात नहीं की। अलबत्ता पांचवें पैग के बाद चिल्लाकर बोला, 'जब तक प्रेमलता तुम्हारी बीवी रहेगी, यह कभी हीरोइन नहीं बन सकती।'

'क्या बकते हो ?' मदन गुस्से से चिल्लाकर बोला ।

'ठीक बकता हूं,' चिमनभाई हाथ नचाकर जोरदार लहजे में बोला, 'साला हलकट, किसको तुम्हारी बीवी देखने की चाहत है ? सब लोग, मिल-मजूर से लेकर मिल-मालिक तक, फिल्म की हीरोइन को कुंवारी देखना चाहता है ।'

'कुंवारी ?'

'एकदम वर्जिन ।'

'मगर मेरी बीवी कुंवारी कैसे हो सकती है ? यह तो शादीशुदा है ।'

'तो उसको शादीवाली मत बोलो, कुंवारी बोलो । अपनी बीवी मत बोलो । बोलो, यह लड़की मेरी बहन है ।'

'मेरी बहन ?' मदन ने हैरत से पूछा ।

'हां, हां, तुम्हारी बहन !'…अरे बाबा, कौन तुम्हारी इस झोंपड़ी में देखने को आता है कि यह तुम्हारी बहन है कि बीवी है । मगर दुनिया को तो बोलो कि यह तुम्हारी बहन है; फिर देखो, क्या होता है !'

चिमनभाई तो यह गुर बताकर चला गया, मगर प्रेमलता नहीं मानी । मदन के बार-बार समझाने पर भी नहीं मानी ।

'मैं अपने पति को अपना सगा भाई बताऊंगी ? हरगिज नहीं, हरगिज़ नहीं हो सकता । इससे पहले मैं मर जाऊंगी । तुम मेरी ज़बान गुद्दी से बाहर खींच लोगे तब भी मैं अपने पति को अपना भाई नहीं कहूंगी ।'

आखिर मदन को फिर उसे पीटना पड़ा । दो दिन प्रेमलता ने चार चोट की मार खाई तो सीधी हो गई और फिल्म-प्रोड्यूसरों के दफ्तर में जाकर अपने पति को अपना भाई बताने लगी ।

चिमनभाई ने मदन को अपने एक दोस्त प्रोड्यूसर छगनभाई से मिलवा दिया । छगनभाई ने प्रेमलता के फोटो एक कमर्शियल स्टूडियो से निकलवाए । अपने डायरेक्टर मिर्जा इज्ज़तबेग को बुलवाकर प्रेमलता से उसका परिचय कराया । मिर्जा इज्ज़तबेग ने बड़ी नज़रों से प्रेमलता को देखा, उससे बातचीत की । फिर स्क्रीन

टेस्ट के लिए फिल्म का एक सीन प्रेमलता को याद करने के लिए दिया गया और तीन दिन के बाद स्क्रीन टेस्ट रखा गया। तीनों दिन रोज़ शाम के वक्त चिमनभाई झोंपड़े में मदन और प्रेमलता से मिलने के लिए आता रहा और काजू पीता रहा, और उन दोनों का हौसला बढ़ाता रहा।

तीसरे दिन चिमनभाई ने मदन से कहा, 'आज स्क्रीन टेस्ट है। मेरी मानो तो तुम आज प्रेमलता के साथ न जाओ।'

'क्यों न जाऊं?'

'इसलिए कि अगर तुम साथ गए तो प्रेमलता की ऐक्टिंग न कर सकेगी। तुम्हें देखकर शरमा जाएगी और घबरा जाएगी, और अगर प्रेमलता घबरा गई तो स्क्रीन टेस्ट में फेल हो जाएगी।'

'कैसे फेल हो जाएगी?' मदन शराब के नशे में झल्लाकर बोला, 'मेरी बीवी नसीम, सुचित्रासेन, मधुबाला से भी खूबसूरत है। मेरी बीवी एलिज़ाबेथ टेलर से भी ज्यादा खूबसूरत है। मेरी बीवी नरगिस से बेहतर ऐक्ट्रेस है। मेरी बीवी किसी स्क्रीन टेस्ट में फेल नहीं हो सकती। मेरी बीवी...'

'अबे साले, बीवी नहीं, बहन बोल बहन,' चिमनभाई हाथ चलाते हुए ज़ोर से बोला।

'अच्छा, बहन ही सही,' मदन शराब का जाम खाली करते हुए बोला।

'जैसा तुम बोलोगे चिमनभाई, वैसा ही मैं करूंगा। आज तक तुम्हारी कोई बात टाली है जो अब टालूंगा! ले जाओ, मेरे भाई, अपनी बहन को तुम ही आज स्क्रीन टेस्ट के लिए ले जाओ। मगर हिफ़ाज़त से पहुंचा देना।'

'खातरी रखो। अपनी गाड़ी में लेकर जा रहा हूं, अपनी गाड़ी में लेकर आऊंगा।'

बहुत रात गए प्रेमलता स्क्रीन टेस्ट से प्रोड्यूसर की गाड़ी में लौटी। उसने वही साड़ी पहन रखी थी जो स्क्रीन टेस्ट के लिए इस्तेमाल की गई थी और उसके मुंह से शराब की बू आ रही थी।

मदन गुस्से से पागल हो गया, 'तुमने शराब पी?'

'हां, सीन में ऐसा ही करना था।'

'मगर पहले सीन में, जो तुम्हें दिया गया था, उसमें तो ऐसा नहीं था।'

'मिर्जा बेग ने सीन बदल दिया था।'

'तो तुमने शराब पी, सिर्फ शराब पी ?' मदन ने उसे गहरी नजरों से देखते हुए पूछा।

'हां, सिर्फ शराब पी।'

'और तो कुछ नहीं हुआ ?'

'नहीं,' प्रेमलता बोली, 'अलबत्ता सीन की रिहर्सल अलग से कराते हुए मिर्जा इज्जतबेग ने मेरी कमर में हाथ डाल दिया।'

'कमर में हाथ डाल दिया—क्यों ?' मदन ने एकदम भड़ककर कहा।

'सीन का ऐक्शन समझाने के लिए,' प्रेमलता बोली।

मदन का गुस्सा ठंडा हो गया। धीरे से बोला, 'सिर्फ कमर में हाथ डाला, इज्जत पर हाथ तो नहीं डाला ?'

'नहीं।' प्रेमलता ने नजरें चुराकर कहा।

'साफ-साफ बताओ, कुछ और तो नहीं हुआ ?'

'हां, हुआ था,' प्रेमलता झिझकते-झिझकते बोली।

'क्या हुआ था ?' मदन फिर भड़कने लगा।

'स्क्रीन टेस्ट के दौरान में वह जो मेरे सामने हीरो का काम कर रहा था, उसने मुझे जोर से अपनी बांहों में भींच लिया।'

'ऐसा उस बदमाश ने क्यों किया ?' मदन गरजकर बोला।

'सीन ही ऐसा था,' प्रेमलता बोली।

'अच्छा, सीन ही ऐसा था,' मदन अपने-आपको समझाते हुए बोला, 'जब सीन ही ऐसा था तो कोई हर्ज नहीं था। मगर ठीक-ठीक बताओ, सिर्फ बांहों में लेकर भींचा था न ?'

'हां, सिर्फ बांहों में लेकर भींचा था,' प्रेमलता रुआंसी होकर बोली, फिर अचानक बिस्तर पर गिरकर तकिये में सर छुपाकर फूट-फूटकर रोने लगी।

"शाट तैयार है।"

यह प्रोड्यूसर छगनभाई की आवाज़ थी। मदन इस आवाज़ को सुनकर चौंक गया और बेइख्तियार कुर्सी से उठ गया। छगनभाई मदन को देखकर मुस्कराया। बढ़कर उसने मदन से हाथ मिलाया, बड़े प्यार से उसके कंधे पर हाथ रखा और उससे पूछा, "सरोजवाला कहां है?"

छगनभाई ने अपनी नई हीरोइन का नाम प्रेमलता से बदलकर सरोजवाला रख दिया था। इससे पहले कि मदन कोई जवाब दे, नई हीरोइन खुद ड्राइंग-रूम से निकलकर सरापा-सरापा मेकअप-रूम में चली आई और नये कपड़ों, नये हेयर-स्टाइल और पूरे मेकअप के साथ हर कदम पर एक नया फ़ित्ना जगाती हुई आई। कुछ क्षण तक तो मदन बिलकुल हक्का-बक्का खड़ा उसे देखता रहा जैसे उसे यक़ीन न हो कि यह औरत उसकी बीवी प्रेमलता है। छगनभाई भी एक क्षण के लिए भौचक्का रह गया और उस एक क्षण में उसे पूरा सन्तोष हो गया कि उसने जो फ़ैसला किया वह बिलकुल ठीक था।

दूसरे क्षण में छगनभाई ने बड़े नाटकीय ढंग से अपने सीने पर हाथ रखा और चीऊं आवाज़ में कहने लगा, "शाट तैयार है, सरकारे-वाला, सेट पर तशरीफ़ ले चलिए।"

नई हीरोइन खिलखिलाकर हंस पड़ी और मदन को ऐसा लगा जैसे किसी शाही हाल में लटके हुए अस्तबोली फ़ानूस की बहुत-सी बिल्लौरी कलमें एकसाथ बज उठें। नई हीरोइन मानो मुस्कराहट के मोती बिखेरती हुई छगनभाई के साथ सेट पर चली। मदन भी पीछे-पीछे चला और छगनभाई को अपनी बीवी के साथ हंस-हंसकर बातें करते हुए देखकर मदन को वह दिन याद आया जब छगनभाई ने स्क्रीन टेस्ट के कुछ दिन बाद मदन को अपने दफ़्तर बुला भेजा था।

छगन मदन की कमर में हाथ डालकर खुद उसे अंदर के कमरे में ले गया था जो एयरकंडीशंड था और छगनभाई का अपना

वाली प्राइवेट कमरा था जिसमें फिल्मों की तमाम गहरी बातें होती थीं। जब मदन इस कमरे के अन्दर पहुंचा तो उसने देखा कि उससे पहले इस कमरे में मिर्जा इज्जतबेग और निमनभाई बैठे हुए हैं।

'आज कोई आम डायरेक्टर्स की मीटिंग है,' निमनभाई ने हंसके कहा, 'आज हम लोग एक सोने की खान खरीदने जा रहे हैं।'

'सोने की खान ?' मदन ने आश्चर्य से पूछा।

'हां, और तुम्हारा भी उसमें हिस्सा है एक-चौथाई का। और बाकी तीन तुम्हारे पार्टनर तुम्हारे सामने इस कमरे में बैठे हैं। मैं छगनभाई, यह मेरा दोस्त निमनभाई, यह मेरा डायरेक्टर मिर्जा इज्जतबेग। हम चारों आज से इस सोने की खान के पार्टनर होंगे।'

'और यह सोने की खान है कहां ?'

छगनभाई ने जवाब में मेज से एक तस्वीर उठाई और मदन को दिखाते हुए बोला, 'यह रही।'

यह प्रेमलता की तस्वीर थी।

मदन ने हैरत से कहा, 'मगर यह तो मेरी बी···मेरा मतलब है मेरी बहन की तस्वीर है।'

'यह सोने की नई खान है। तुम्हारी बहन को अपनी नई पिक्चर में हीरोइन ले रहा हूं और इंडस्ट्री के टाप हीरो के संग—देवराज के संग—जिसकी कोई तस्वीर सिलवर जुबली से इधर उतरती ही नहीं। बोलो—फिर एक पिक्चर के बाद इस हीरोइन की कीमत ढाई लाख होगी कि नहीं ? इसको मैं सोने की खान बोलता हूं तो क्या गलत बोलता हूं ? जवाब दो।'

'मगर मैं पूछता हूं कि मेरी सोने की खान आपकी कैसे हो गई ?' मदन ने हैरान होकर पूछा।

'क्योंकि मैं इसे हीरोइन ले रहा हूं,' छगन ऊंची आवाज में बोला, 'नहीं तो यह लड़की क्या है ! गोरेगांव के एक झोंपड़े में रहनेवाली पन्द्रह रुपये की छोकरी। फिर मैं उसकी पब्लिसिटी पर पचहत्तर हजार रुपया खर्च करूंगा कि नहीं···? फिर मैं इसके

टाप के हीरो देवराज के संग डाल रहा हूं। इसके बाद अगर मैं इस मात में फिफ्टी परसेंट का शेयर मांगता हूं तो क्या ज्यादा मांगता हूं···? और सिर्फ पांच साल के लिए।'

'और तुम?' मदन ने चिमनभाई से पूछा।

'अगर मैं तुम्हें छगनभाई से न मिलाता तो तुम्हें यह कांट्रैक्ट आज यहां से मिलता! इसलिए हिसाब से साढ़े बारह फीसदी का कमीशन मेरा है।'

'और तुम?' मदन मिर्जा इज्जतबेग की तरफ मुड़कर बोला।

'अपन तो डायरेक्टर हैं,' मिर्जा इज्जतबेग बोला, 'अपन चाहें तो इस पिक्चर में नई हीरोइन को फर्स्ट क्लास बना दें, चाहें तो थर्ड क्लास बना दें, इसलिए अपन को भी साढ़े बारह फीसदी चाहिए।'

'मगर यह तो ब्लैकमेल है!' अचानक मदन भड़ककर बोला।

'इज्जत की बात करो, इज्जत की! अपन अपनी इज्जत हमेशा बेग में रखता है। इसलिए अपन का नाम इज्जतबेग है। अपन इज्जत चाहता है और अपना शेयर, सिर्फ बारह फीसदी।'

अचानक मदन को ऐसा महसूस हुआ जैसे प्रेमलता कोई औरत नहीं है, वह एक कारोबारी तिजारती कम्पनी है जिसके शेयर बम्बई स्टाक एक्सचेंज पर बिकने के लिए आ गए हैं। जैसे ग्लोब कंबाइन अल्काइन और टाटा डेफर्ड। ऐसे ही प्रेमलता प्राइवेट लिमिटेड··· !

'मुझे कहां दस्तखत करने होंगे?' मदन ने लगभग रुआंसे होकर पूछा।

भूखे रहने के दिन अतीत की याद बन चुके थे। जिस दिन मदन ने कांट्रैक्ट पर दस्तखत किए, छगन ने उसे दो हजार का चेक दिया। मलाबार हिल पर उसके रहने के लिए एक उम्दा फ्लैट ठीक कर दिया, एक नई फिएट ग्लोब मोटर्स की दुकान से निकलवाकर दे दी। उसी रात मदन और प्रेमलता अपने नये फ्लैट में चले गए और मदन ने प्रेमलता को गले से लगाकर उसकी कामयाबी के लिए प्रार्थना की और मदन के पैरों को छूकर प्रेमलता ने प्रतिज्ञा की कि वह हमेशा-हमेशा के लिए सिर्फ उसकी होकर रहेगी।

आखिरकार मदन की मेहनत और उसका संघर्ष रंग लाया।

आखिरकार आसमानों से मदन के पास आई। आज उसकी बेबी हीरोइन थी। प्रेमलता, सरोजबाला थी और आज उसकी शूटिंग का पहला दिन था।

और अब यह दिन भी खत्म हो रहा था। स्टेज नं० १ के बाहर मदन अपनी फ़ियट में बैठा हुआ बार-बार घड़ी देख रहा था। अब पांच बजेंगे, फिर पैकअप होगा और तब वह अपनी दिल की रानी को अपनी फ़ियट में बिठाकर दूर कहीं समंदर के किनारे घुमाने के लिए ले जाएगा।

पैकअप की घंटी बजी। मदन का दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा। थोड़ी देर के बाद नई हीरोइन बाहर निकली। उसका हाथ हीरो के हाथ में था और वे दोनों बड़ी बेतकल्लुफ़ी से बातें करते, हंसते-बोलते हाथ झुलाते साथ-साथ चले आ रहे थे। साथ-साथ फ़ियट से आगे चले गए जहां हीरो की शानदार इम्पाला गाड़ी खड़ी थी।

मदन ने फ़ियट का पट खोलकर आवाज़ दी, "सरोज !"

"हां, भैया," हीरोइन पलटकर चिल्लाई और फिर दौड़ती हुई मदन के पास आई और धीरे से बोली, "तुम घर जाओ, मैं देवराज की गाड़ी में आती हूं।"

"मगर तुम मेरी गाड़ी में क्यों नहीं जा सकतीं ?" मदन ने गुस्से से पूछा।

"बावले हुए हो," प्रेमलता ने तैश खाकर जवाब दिया, "मैं अब एक हीरोइन हूं और अब मैं कैसे तुम्हारे साथ उस छोटी-सी फ़ियट में बैठकर स्टूडियो से बाहर निकल सकती हूं ! लोग क्या कहेंगे ?"

"सरोज !" हीरो ज़ोर से चिल्लाया।

"आई !" सरोज ज़ोर से चिल्लाई और पलटकर हीरो की गाड़ी की तरफ़ दौड़ती हुई चली गई। देवराज सामने की सीट पर ड्राइव करने के लिए बैठ गया और सरोज उसके साथ लगकर बैठ गई। फिर इम्पाला के पट बंद हो गए और वह ख़ूबसूरत फ़ीरोज़ी गाड़ी एक सुरीले हार्न का संगीत पैदा करती हुई गेट से बाहर चली गई और मदन की फ़ियट का पट खुले का खुला रह गया।

२

काकटेल

"एक काकटेल और लो !"

मकई के पौदे सूखकर सुनहरे हो चुके थे। लांबे-लांबे डाडों पर लंबे-लंबे तेज नुकीले पत्ते मुड़कर दोनों तरफ़ यूं झुक गए थे जैसे हवा के किसी तेज झोंके से किसान की पगड़ी खुल जाए। पत्तों और डाडे के जोड़ पर मकई के भुट्टे सुनहरी फ़स्ल पहने अपने सर पर काले-काले बालों की चोटियां लहराए उन चंचल बालाओं की तरह बेचैन दिखाई देते थे जो मेले जाने के लिए बेताब हों।

अचानक हवा के एक लहराते हुए झोंके ने झुके हुए सूखे पत्तों को उठा लिया। उन्हें कुछ क्षणों के लिए हवा में झंडियों की तरह लहराया, सुनहरी फ़स्ल कांपे और काली चोटियां हवा में लहराईं और फ़ज़ा (वातावरण) में जवान फ़स्ल का कहकहा गूंज गया।

यह कहकहा चमकीले झाग के बुलबुलों की तरह दिल से उठा और एक मुस्कराहट की तरह बदलू के चेहरे पर खिल गया। वह फ़स्ल से निगाह उठाकर नदी के पार दूर पश्चिम के पहाड़ों की तरफ़ देखने लगा जैसे उन पहाड़ों के क्षितिज पर कोई फूल खिल रहा हो।

बुड्ढे सागलू ने अपने बेटे का चेहरा देखा और बोल उठा, "बहू को ले आओ जाके।"

बदलू ने पूछा, "और फ़स्ल कौन काटेगा ?"

बदलू बोला, "मैं हूं, मेरी मां है, मेरा छोटा भाई है, मेरी दो छोटी बहनें हैं; और हमारी फसल हुई जितनी ! किसान की मुर्गी की तरह दो ही दिन में कट जाएगी।"

बदलू एक फिलासफर था। उसने बड़े गौर से जमीन को पढ़ा था और आसमान को देखा था, इसलिए वह फिलासफर हो गु था। उसने हाकिम की तलवार भी देखी थी। उसे मालूम था कि हाकिमों के नाम बदलते रहते हैं लेकिन उनकी तलवार नहीं बदलती। इसलिए उसका फलसफा भी मकई के पत्तों की तरह सूख हुआ और भावनाओं से खाली था।

"शादी के बाद मौनी अब तक अपनी ससुराल नहीं आई औ अब फसल कटनेवाली है इसलिए उसे घर बुलाने का यह सब अच्छा मौका है। मौनी पहली बार अपनी ससुराल का घर देखे इसलिए उसे खुशहाली के दिनों में बुलाना अच्छा है। ताकि उसे आ।"

बदलू खिलखिलाकर हंस पड़ा। आदमी उस वक्त खिल खिलाकर हंसता है जब उसके कान वही सुनते हैं जो उसका दि कहता है।

"एक काकटेल और लो, डार्लिंग तुम्हारा नाम क्या है ?"

पश्चिमी पहाड़ों के मायके से मौनी बदलू के साथ अप ससुराल चली। वह हरे और पीले फूलोंवाली छींट की कमीज़ अ शलवार पहने हुए अपने गालों के गुलाब और आंखों के नरगि फूल लिए अपनी जवानी की सारी खुशबुएं अपने दुपट्टे में स हुए बदलू के साथ-साथ चली। उसकी मां ने रास्ते के लिए पोटली में मकई की चार रोटियां रख दी थीं और लौकी अचार और प्याज़ की दो गड्डियां और थोड़ा-सा नमक और मिर्चें और बहुत-सी दुआएं। यह सामान लेकर मौनी बदलू

संग अपनी ससुराल चली ।

रास्ते में मौनी ने बदलू से पूछा, "घर से घराट कितनी दूर है ?"

बदलू को नदी के किनारे से अपने गांव की छोटी-सी पन-चक्की का ख्याल आया। तुंग के पेड़ों की छांव में किसी खूबसूरत सुराही की तरह हर वक्त कुल-कुल करती हुई पनचक्की ! ... उसने कहा, "आटा पीसने की चक्की नदी के किनारे है। हमारे घर से बहुत दूर नहीं है। एक ढक्की चढ़कर और एक घाटी उतर-कर, बस, यूं चुटकी बजाते आदमी आधे घण्टे में वहां पहुंच सकता है।"

मौनी चुप रही। उसे अपने गांव के घराट का ख्याल आया। भेड़ की खाल में जब वह दस सेर अनाज भरकर घराट से आटा पिसवाकर वापस अपने घर आती थी तो ढक्की चढ़कर उसका सारा बदन किसी थकी हुई घोड़ी की तरह कांपने लगता था।

"मगर मैं तुम्हें घराट पर जाने नहीं दूंगा," बदलू ने मौनी का हाथ पकड़कर बेहद कोमल स्वर में कहा, "घर में चक्की है।"

मौनी का कोमल हाथ अपने हाथ में लेकर बदलू को ऐसा लगा जैसे फूलों-भरी डाली उसके हाथ में आ गई हो। मौनी को ऐसा लगा जैसे किसी सुकुमार लता को एक मज़बूत तना मिल गया हो। भावनाओं की लहरों पर डोलते हुए दोनों देर तक चुपचाप चलते रहे।

फिर मौनी ने पूछा, "और पानी का चश्मा कितनी दूर है ?"

पहाड़ी गांव की लड़कियों को पानी बहुत दूर से लाना पड़ता है। एक मील, दो मील, कभी-कभी तीन-चार मील की दूरी पर मीठे पानी का चश्मा मिलता है। रास्ते लम्बे और दुर्गम, घड़े भारी, प्यास हलक में कांटे बिछाती हुई। औरतें आठ-दस की टोलियों में चश्मे से पानी भरने जाती हैं। खाली घड़े लेकर जाते वक्त रास्ता मालूम नहीं होता। वापसी के वक्त रास्ते के सिवा और कुछ महसूस नहीं होता। सर पर तीन-तीन घड़े रखकर जवान औरतें खच्चरों की तरह हांपने लगती हैं।

"ज्यादा दूर नहीं है," बदलू ने लापरवाही से कहा, "कोई ढाई-तीन मील होगा।"

'बिल्कुल अपने गांव की तरह,' मौनी ने अपने दिल में सोचा और उसका मन निराशा से बैठ गया। 'यह हर जगह पानी घर से इतना दूर क्यों होता है?' फिर उसे अपनी मां की कड़ी मेहनत का ध्यान आया। अब तक वह खुद दिन में दो बार, कभी तीन बार चश्मे से पानी लाती थी। अब उसके पीछे घर-भर के लिए उसकी बूढ़ी मां को पानी ढोना पड़ेगा। अपनी मां की तकलीफ का ख्याल करके मौनी की आंखों में आंसू छलकने लगे।

मगर बदलू ने उसके आंसुओं का मतलब गलत समझा। वह बड़े प्यार से अपनी दुलहन की तरफ देखता हुआ बोला, "मगर मैं तुम्हें चश्मे पर जाने न दूंगा। मेरी दो बहनें हैं, वे तुम्हारे हिस्से का पानी भी चश्मे से ले आएंगी।"

मौनी ने गर्व-भरी निगाहों से बदलू की तरफ देखा और चलते-चलते रुककर अपना सर बदलू के कंधे पर रख दिया।

"बड़ा प्यारा नाम है तुम्हारा। एक बार पेरिस में मुझे इसी नाम की एक लड़की मिली थी। तुम पेरिस कभी गई हो? पेरिस खुले हुए दिलों और पतली कमरवालियों का शहर है। लो एक काकटेल और…"

खट्टे अनारों के जंगल में ठंडा घना साया था और जमीन पर हरी-हरी दूब में बनफशे के फूल खिले ए थे और मौनी और बदलू को एक चट्टान में दुबका हुआ एक खरगोश सफेद ऊन के गोलों की तरह सिमटा हुआ दिखाई पड़ा, और वे दोनों उसे पकड़ने के लिए भागे। खरगोश उन्हें देखकर अपनी जगह से छलांग मारकर लपका और वे दोनों उसके पीछे-पीछे हंसते हुए एक-दूसरे का हाथ झलाते हुए जंगल के अन्दर भागे। दूर तक अंदर चले गए, यहां तक

कि खरगोश नजरों से ओझल हो गया। फिर वे दोनों भागते-भागते रुक गए और मौनी ने मस्ती-भरी निगाहों से अपने पति की तरफ देखा और बोली, "हाय, कितना प्यारा खरगोश था! मेरा जी उसे गोद में लेकर प्यार करने को चाह रहा था।"

"ठहर जाओ," बदलू ने उसे शरीर निगाहों से ताकते हुए कहा, "बहुत जल्द ऐसा ही नरम-नरम सफेद-सफेद गोल-मटोल बच्चा तुम्हारी गोद में खेलेगा।"

मौनी के गाल अनार की कली की तरह शरम से लाल हो गए। उसने दुपट्टे से अपना मुंह छुपा लिया और वहीं लजाकर हरी-हरी दूब पर बैठ गई और दुपट्टे का कपड़ा अपने मुंह में दबाकर देर तक यूं हंसती रही जैसे कोई उसके सारे बदन में गुदगुदी कर रहा हो।

अचानक बदलू ने झुककर मौनी को दोनों हाथों से एक गठरी की तरह उठाकर अपने कंधों पर रख लिया और गाते हुए चला:

"दो पत्तर अनारां दे···।"

उसके कंधे पर बैठी हुई मौनी ने अपनी लटकी हुई टांगों को हिला-हिलाकर जवाब दिया:

"खिल गई जिंदड़ी, दिन आए बहारां दे।"

"तुम्हारे होंठ किसी अजनबी का खत मालूम होते हैं, इन्हें खोलने को जी चाहता है। यह कॉकटेल मेरे हाथ से पियो।"

रंगपुर की घाटी तय करके सागरा की वादी से गुजरकर जब वे खेड़ा-गली के दर्रे पर पहुंचे, जहां ठण्डे पानी का एक चश्मा दर्रे की ऊंची चट्टानों के नीचे से निकलकर बहता था और करीब में चीड़ों का एक झुंड था, तो सूरज ठीक सर पर आ चुका था।

बदलू ने मौनी को उस चश्मे के किनारे उतार दिया और चनैर के सूखे झूमरों को फैलाकर उसपर खाने की पोटली खोली और

मोनी के आगे बढ़ा दी। मोनी ने शरमाकर बदलू के आगे गरदन दी तो बदलू ने मुस्कराकर मकई की रोटी का एक टुकड़ा तोड़ा, मोनी के अनार का मुखड़ा उसके अन्दर रखा और अपना हाथ मोनी के मुंह की तरफ बढ़ा दिया। मोनी ने शरमाकर अपना मुंह बंद कर लिया। पर जिधर-जिधर अपना मुंह फेरती जाती, बदलू का हाथ उधर ही बढ़ता जाता। आखिर मोनी ने मकई की रोटी का वह टुकड़ा अपने दांतों से दाब लिया और साथ में बदलू की उंगली भी।

"ओह!" बदलू ने धीरे से कहा।

शरमाई हुई निगाहों से बदलू की तरफ देखते हुए धीरे से मोनी ने बदलू की उंगली छोड़ दी और धीरे-धीरे मकई का टुकड़ा खाने लगी। खाते-खाते उसे ऐसा लगा जैसे वह मकई का टुकड़ा नहीं खा रही, किसी शहद-भरे छत्ते का कोई टुकड़ा खा रही है।

"वह सामने देखो मेरा गांव!" बदलू ने दर्रे की ऊंचाई से नीचे उतरती हुई घाटियों से परे धान के खेतों से भरी हुई वादी की तरफ इशारा किया जिसके बीचोबीच एक पतली-सी नदी बहती थी। धान के खेतों से परे पहाड़ी ढलती पर एक गांव आबाद था और उसके इर्द-गिर्द मकई के खेत सीढ़ियों की तरह ऊपर उठते दिखाई देते थे।

मोनी का दिल धक्-से रह गया। आश्चर्य और विस्मय से उसका मुंह खुले का खुला रह गया। मौका देखकर बदलू ने उसके खुले मुंह में मकई की रोटी का दूसरा टुकड़ा डाल दिया।

"यह चिकेन चाट खाओ, डार्लिंग! यह मुर्ग के सफेद गोश्त के बारीक तिक्कों से तैयार की गई है। इसमें एक खास किस्म का मसाला डाला गया है। यह चिकेन चाट इस होटल की खास चीज है, ज़रा चखकर तो देखो। जब तक मैं तुम्हारे लिए एक और काकटेल बना देता हूं।"

घाटियां उतरते-उतरते जब वे नदी के किनारे पहुंचे, तो शा

ढल चुकी थी। सूरज किसी लालची बनिये की तरह अपना सारा सोना समेटकर पश्चिम में जा छुपा था। रात के अंधेरे में ज़रा दूर पर ढक्की पर आबाद गांव में कहीं-कहीं रोशनी के चिराग जुगनुओं की तरह चमकते दिखाई देते थे। हवा में एक बर्फ़ीली खुनकी आ चुकी थी और मौनी रह-रहकर सर्दी से कांप जाती थी।

बदलू ने अपनी चादर भी उतारकर मौनी को उढ़ा दी और मौनी को ऐसा लगा जैसे वह किसी दुहरी चादर के अन्दर नहीं है अपने पति की मज़बूत बांहों में है। नदी पार करके धान के खेतों में सरसराती हुई बासमती के चावलों की सुगंध उसके नथुनों में तैरने लगी। ढक्की चढ़ते-चढ़ते उसके कानों में बच्चों की आवाज़ें आने लगीं। औरतों की हंसी, मर्दों की गम्भीर बातचीत, कहीं पर बंजली का नगमा, कहीं से हांडी में बघरे हुए सालन की खुशबू। नरम-गरम आवाज़ों और खुशबुओं से उसका दिल महक उठा और उसकी भूख तेज़ होती गई।

रात के अंधेरे में कोई उन्हें रास्ते में न मिला। एक खेत में से गुज़रकर वे एक ऊंचे टीले की ओट में खड़े हो गए जहां नाशपातियों के कुछ पेड़ कुछ राज़दार दोस्तों की तरह एक-दूसरे से जुड़कर खड़े सरगोशियां कर रहे थे। मौनी को ऐसा लगा जैसे वे उसके बारे में कुछ बातें कर रहे हों। मौनी ने कान लगाकर सुनना चाहा, मगर सरसराते हुए पत्तों की सायं-सायं के सिवा उसे कुछ समझ में न आया।

बदलू ने टीले के नीचे खड़े-खड़े क्षितिज की ओर देखकर कहा, "कोई पल में चांद निकला चाहता है।"

"आगे बढ़ो," मौनी ने चुपके से बदलू के कान में कहा।

"इस टीले के आगे हमारे खेत हैं," बदलू ने गर्व-भरे स्वर में कहा, "और खेतों से आगे मेरा घर है, तुम्हारा घर है।"

आश्चर्य से मौनी ने अपने मुंह पर हाथ रख लिया और फिर घबराकर पीछे हट गई, बोली, "नहीं, नहीं, मैं आगे नहीं जाऊंगी।"

बदलू ने हंसकर कहा, "आगे नहीं जाओगी तो कहां जाओगी, आगे ही तो तुम्हारा घर है। आगे ही तो तुम्हारे खेत हैं। मेरे बाप

ने [illegible] [illegible] [illegible] लगा दिया होगा। जब चांद निक
लेगा तो घर चलेंगे।"

"आज का इन्तजार क्या ?" मीनी ने पूछा।

"मैं चाहता हूं कि जब चांदनी फिर यहां हो मैं अपना खलि-
हान देखूं और फिर चांदनी में अपनी [illegible] [illegible] दूं।"

"सुनो, मुझे बड़ा डर लगता है," मीनी कांपते हुए [illegible]
बदलू के गले से लग गई। झाड़ी से एक कुत्ता भागकर आया
और मीनी को देखकर भूकने लगा। मीनी बदलू से लिपट गई।
बदलू ने कुत्ते को डांटते हुए कहा, "अरे, जबरे, क्या हुआ तुमको?
पहचानता नहीं है ?" फिर हंसकर बदलू मीनी से बोला
"यह जबरा है, मेरा कुत्ता !"

जबरा दोनों को सूंघ-सूंघकर दुम हिलाने लगा और खुशी
उनके गिर्द नाचने लगा। फिर जहां पर जमीन और आसमान हो
की तरफ जिनसे हैं वहां पर चांद एक मुस्कराहट की तरह उ
हुआ और बदलू ने हर्ष और भय, निराशा और आशा में डोल
हुई मीनी की हैरान आंखों की डोलती हुई पुतलियों को देखा अ
एक उल्लासमयी भावना और गहरे विश्वास से उसका हाथ पक
कर उसे टीले की दूसरी तरफ ले गया, जहां उसके खेत थे और खे
से परे उसका घर था।

टीले के दूसरी ओर छिटकी हुई चांदनी में वह कुछ क्षण बि
कुल भौचक्का खड़ा रहा।

जहां तक दिखाई देता था घर के दरवाजे तक खेतों से फ
कट चुकी थी। मकई के पौधों के बजाय खेतों में सिर्फ उनके
बाकी रह गए थे, नहीं तो सारी फसल समेट ली गई थी। मगर
में कहीं पर कोई खलिहान नजर नहीं आता था।

बदल ने आंखें मल-मलकर चारों तरफ देखा, मगर उसे कहीं
पर मकई का एक पौधा तक दिखाई न पड़ा। फिर उसकी आंखों ने
घर के दरवाजे पर सर झुकाए बैठे हुए अपने बाप सांगलू को देखा
और वह मीनी को वहीं छोड़कर दौड़ता हुआ अपने बाप की तरफ
भागा।

"खलिहान कहां है ?" उसने वहशत से चिल्लाकर पूछा।

"बनिया ले गया।"

"सब ?" बदलू ने निराश होकर पूछा।

"सब।"

"कुछ नहीं छोड़ा ?" गहरी निराशा से बदलू का दिल बैठने लगा।

"एक दाना तक नहीं," सागलू ने हवा की कानाफूसी से भी धीमे स्वर में कहा और सर झुका लिया।

फिर वह धीरे से उठा और घर के अन्दर चला गया।

धीरे-धीरे कदमों से मौनी बदलू के पास आ गई और वे दोनों एक-दूसरे का हाथ थामे घर की देहरी पर बैठ गए और सामने के निर्जन और उजाड़ खेतों में मकई के ठूठ देखने लगे, जो कतार-दर-कतार सैकड़ों चीलों की तरह दूर जहां तक नजर जाती थी, फैले हुए थे।

उन्हें देखकर मौनी बड़ी बेबसी से रोने लगी और सिसक-सिसककर कहने लगी, "मुझे भूख लगी है।"

"क्या बात है, मौनी ? तुम रो रही हो ? डार्लिंग, क्या हुआ है तुमको ? कुछ याद आ रहा है ? ठहरो, मैं यह खिड़की खोले देता हूं। तुम इन फूलों से सजे हुए बिस्तर पर लेट जाओ और खिड़की से छिटकी हुई चांदनी में समुन्दर का नजारा देखो। जब तक मैं तुम्हारे लिए एक काकटेल और···"

३

अगली बहार में

वह देरांग दजांग के छोटे-से 'गोम्पा' के बाहर अपनी रोज की प्रार्थना से छुट्टी पाकर एक छोटे-से चबूतरे पर बैठा धूप खा रहा था। अक्तूबर का चमकीला रोशन दिन था। गोम्पा की निचली घाटियों पर उसका बहुत बड़ा रेवड़, जिसमें नौ सौ भेड़-बकरियां थीं, धूप में बिखरा हुआ घास चर रहा था। सामने जंगलों में ऊंची-ऊंची घाटियों तक 'फर' के घने जंगल खड़े थे। इन जंगलों के ऊपर साढ़े तेरह हजार फुट की चोटी पर से-ला का दर्रा एक घोड़े की काठी की तरह दिखाई देता था। जहां तक नजर जाती थी, जहां तक वह देख सकता था, उसे पहाड़ी सिलसिलों के ऊपर आसमान रोशन और नीला दिखाई पड़ता था। कहीं पर बादल का एक टुकड़ा तक न था। ठण्डी-ठण्डी हवा के झोंकों में धूप कितनी मीठी मालूम होती है! वह धूप सेंकते-सेंकते ऊंघ गया।

अचानक वह हड़बड़ाकर जागा और जागकर उसने जो आंख खोली तो उसने अपने सामने कर्णसिंह को और आसाराम को पाया। ये दोनों हिन्दुस्तानी फौजी सिपाही देरांग की चौकी नम्बर १ पर तैनात थे।

"काका, एक बकरी दोगे ?" कर्णसिंह उसके सामने खड़ा होकर हंसते हुए कह रहा था।

"काहे के लिए?" उसने ज़रा गुस्से से कहा, क्योंकि ये हिंदुस्तानी सिपाही कभी-कभार उससे एकाध बकरी खरीदने के लि[illegible] थे और वह अपने रेवड़ में से एक [illegible] भी बेचना नहीं

अभी आठ दिन हुए एक चौकी का एक सिपाही जब्बार उससे एक बकरा खरीदकर ले गया था, क्योंकि दूर नीचे यू० पी० के किसी गाव में उसका बाप बीमार था और वह उसके स्वस्थ होने के लिए नज़र-नियाज़ देना चाहता था। अब ये लोग आ धमके।

आसाराम जो जम्मू का डोगरा था, मुस्कराते हुए बोला, "उधर मेरे गाव में मेरी बीवी के यहा बेटा हुआ है, मेरा पहला बेटा।"

"उसके लिए यह दावत करेगा, काका," कर्णसिंह खुशी से हसते हुए बोला, "आज रात को चौकी के सिपाहियों की दावत होगी। एक बकरी दे दो, काका!"

सब फौजी सिपाही उसे काका कहते थे। उसका असली नाम क्या था, यह किसीको मालूम न था। न किसीने कभी जानने की कोशिश की। काका के चेहरे पर मूछ-दाढी के बाल न थे। उसका सर भी बिलकुल गजा था। सिर्फ माथे पर बालों का एक छोटा-सा गुच्छा था, उस छोटे-से गुच्छे की वजह से उसका चेहरा कभी तो बच्चों की तरह भोला और कभी बड़े-बूढों की तरह अहमक नज़र आने लगता था और इसमें कोई सदेह नही कि बच्चों का भोलापन और बड़े-बूढ़ों की हिमाकत दोनों उसमे मौजूद थीं। इसलिए सब लोग उसे काका कहते थे और अकसर उससे मज़ाक भी करते रहते थे।

"नहीं दूगा," काका ने गुस्से से सर हिलाते हुए कहा, और उसके बालों का गुच्छा हवा मे झूल गया।

"मुफ्त नही लेगे, मुहमागे दाम देंगे," आसाराम बोला।

"दाम तो सभी देते है," काका ने झल्लाकर कहा, "मगर दाम लेने मे क्या होता है! रुपये बड़ी जल्दी खत्म हो जाते हैं, लेकिन बकरी बड़ी मुश्किल से पलती और बढती है। तुम क्या जानो!"

"बेटे भी तो रोज-रोज पैदा नही होते," कर्णसिंह ने कहा।

"नही दूगा, हरगिज़ नही दूगा," काका ने जवाब दिया जैसे यही उसका आखिरी फैसला हो।

आसाराम का चेहरा उतर गया, कर्णसिंह की मुस्कराहट भी गायब हो गई। मगर वे दोनों कुछ नहीं बोले।

ढक्की के ऊपर चढ़कर कर्णसिंह ने आवाज़ दी, "काका, तुम शादी क्यों नहीं कर लेते, फिर तुम्हारे घर भी बेटा होगा और हम उसकी दावत पर तुम्हारे घर आएंगे।"

"शादी कैसे करूं? मेरे पास सिर्फ नौ सौ बकरियां है।"

"नौ सौ बहुत होती हैं।"

"नहीं, मुझे एक हज़ार चाहिए, जब मेरी शादी होगी।" काका ने उदास भाव से कहा, और रेवड़ को हंकाकर से-ला दर्रे की ओर ले गया।

वह मोनपा कबीले का एक गीत गा रहा था और उसकी आंखों में एक भोटिया लड़की की तस्वीर सजी हुई थी जो से-ला दर्रे में पश्चिम की साग नाम के एक गांव में रहती थी। अगली बहार में जब घाटियों पर फूल खिलेंगे और भेड़ों के शरीर गहरी और मोटी ऊन से भर जाएंगे, उसके पास एक हज़ार बकरियां हो जाएंगी, फिर वह अपना रेवड़ दौड़ाकर साग की घाटियों में उतर जाएगा जहां सुनहरे गालोंवाली एक भोटिया लड़की उसका इन्तज़ार करती है।

देराग दज़ाग की घाटियों से उतरकर बड़े घने जंगलों से गुज़र-कर वह से-ला पहाड़ पर अपने रेवड़ को ले गया। दोपहर को उसने अपना खाना से-ला दर्रे की निचली घाटियों पर खाया, फिर उसके रेवड़ ने घंटे-भर के लिए पेड़ों के एक झुंड के नीचे आराम किया।

वह खुद भी एक पेड़ से टेक लगाकर बैठ गया और ऊपर से-ला दर्रे की ओर देखने लगा जो दूर से बिलकुल एक घोड़े की काठी जैसा दिखाई देता था। एक क्षण के लिए काका को ऐसा लगा जैसे वह से-ला दर्रे की काठी पर सवार हो और दूल्हा बनकर साग के गांव की ओर शादी करने के लिए जा रहा हो। वह खुश होकर गीत गाने लगा।

गीत गाते-गाते अचानक वह रुक गया। पेड़ों के झुंड के पीछे से एक छोटा-सा ठिगने कद का आदमी चला आ रहा था। उसके कंधे पर एक राइफल थी और उसके शरीर पर एक रुईदार कोट

अक्षरों में लिखा था, "हिंदी-चीनी भाई-भाई।"

"हम लोग भाई-भाई हैं, न?" ली-पो बड़ी मुहब्बत से बोला।

"इसमें क्या शुबहा है!" काका जोर से उसका हाथ दबाते हुए बोला।

"यह रूमाल तुम मेरी ओर से भेंट में ले लो।"

काका ने इनकार किया। मगर ली-पो आग्रह करता रहा। रूमाल बड़ा खूबसूरत था। लाल रंग के खूबसूरत रूमाल के चारों ओर बनफशई रंग में खूबसूरत फूल बने थे। काका के मन में विचार आया कि वह ब्याह के अवसर पर अपनी दुलहिन को यह रूमाल ही भेंट में दे सकेगा। इसीलिए उसने अन्त में उस भेंट को ले लिया।

दूसरे दिन जब काका ली-पो के लिए नीले फूल लेकर आया, जो सिर्फ देराग दज़ाग की घाटियों पर पैदा होते हैं, तो ली-पो खुशी से नाच उठा। उसने काका का मुंह चूम लिया और खुशी से बार-बार उसे गले लगाने लगा। काका भी अपने नये दोस्त को पाकर बेहद खुश हुआ। आज ली-पो ने अपने थैले में से नमक का एक बहुत बड़ा ढेला निकालकर काका को भेंट में दिया और काका यह भेंट पाकर बहुत खुश हुआ, क्योंकि नमक की भेंट उन घाटियों में बहुत ही कारामद और अच्छी भेंट है और कई महीने तक चलती है।

तीसरे दिन काका फिर अपनी घाटियों से बहुत-से फूल ली-पो के लिए तोड़कर लाया, और आज तो ली-पो ने अपने हिस्से के खाने में काका को भी शरीक कर लिया। ली-पो बहुत ही सभ्य, शरीफ और प्यारा आदमी मालूम होता था। कैसा नरम मिज़ाज और मीठे स्वभाव का आदमी था जो कभी काका से सख्ती से बात न करता था! हालांकि उधर देराग दज़ाग के गांव में बहुत-से लोग उसपर हंसते थे और उसके गंजेपन और सीधी-सादी बातों का मज़ाक उड़ाते थे। काका अपने नये दोस्त को पाकर बेहद खुश हुआ और घंटों उससे बातें करता रहता।

"उधर देराग दज़ाग में क्या बहुत हिन्दुस्तानी सिपाही हैं?" एक दिन ली-पो ने उससे बातों-बातों में पूछा।

"नहीं, हमारे गांव की चौकी तो बहुत छोटी-सी है।"

लेने का हुक्म नहीं है। हम हर जगह अपना खाना साथ लेकर चलते हैं।"

यह कहकर चीनी सिपाही ने काका को अपना झोला दिखाया जिसमें कई दिन तक खाने के लिए चावल और चाय की पत्तियां रखी हुई थीं।

ली-पो और काका बहुत जल्द गहरे दोस्त बन गए। ली-पो कभी-कभी दूसरे, तीसरे, चौथे रोज उसके पास आता था और घंटों उससे बातें किया करता था। एक चरवाहे के लिए, जिसे दिन-भर जंगलों में अकेले रहकर रेवड़ चराना पड़ता है, किसी दूसरे इन्सान की मुहब्बत क्या मानी रखती है, इसका अंदाजा अब काका को हुआ और वह बड़ी मुहब्बत और बेचैनी से ली-पो के आने का इन्तजार किया करता था।

दिन गुजरते गए और उनकी दोस्ती दिन-ब-दिन पक्की होती गई। अक्तूबर का महीना गुजर गया। फिर नवम्बर का आधा महीना भी गुजर गया और वह और ली-पो से-ला के निचले जंगलों में मिलते रहे और खुश-गप्पियों में वक्त गुजारते रहे।

नवम्बर के तीसरे हफ्ते के आखिर में अचानक देरांग दज़ोंग की फौजी चौकी को खाली कर देने का हुक्म मिला और गांववालों को भी ताकीद की गई कि वे अपना माल-असबाब लेकर फौज के साथ कूच कर जाएं।

देरांग दज़ोंग के गांववालों ने शाम को अपने गांव के गोम्पा में बुद्ध की मूर्ति के सामने आखिरी बार प्रार्थना की और फिर रात के अंधेरे में अपनी भेड़-बकरियां और सब माल-असबाब लेकर बीवी-बच्चों-समेत देरांग दज़ोंग से बोमदी-ला की ओर रवाना हो गए।

रात-भर काका को नींद नहीं आई। उसका दिल साग की घाटियों में अटका हुआ था। से-ला दर्रे पर चलकर वह कभी-कभार दूर उत्तर-पश्चिम की घाटियों पर नजर डालकर साग के गांव को देख लिया करता था जहां भूटान की सरहद की तरफ एक लड़की

जाएगा। फिर तुमको हम देरांग दजाग का सरदार बना देंगे।"

"मैं सरदार बनना नहीं चाहता।" काका ने खफा होकर कहा।

"अच्छा, अच्छा, न सही। मगर हमारे आने पर तुम बिना *किसी डर के अपने गांव में रह सकते हो और कोई तुमको किसी* तरह परेशान नहीं करेगा। तुम हमारे सच्चे दोस्त हो।"

ली-पो ने बड़े तपाक से काका को गले से लगा लिया, फिर बोला, "तुम्हारा रेवड़ कहां है ?"

"नीचे एक गुफा में छुपाकर रखा है।"

"बहुत अच्छा किया, बहुत अच्छा किया।" ली-पो खुशी से हाथ मलते हुए चिल्लाया, "इस वक्त हमें भेड़-बकरियों की बहुत जरूरत है।"

काका का चेहरा उतर गया। उसने मरी हुई आवाज में पूछा, "कितनी चाहिए।"

"एक हजार। एक हजार बकरियों की फौरन जरूरत है और यह काम मेरे सिपुर्द किया गया है, और तुम मेरे दोस्त हो, मुझे निराश न करना।"

"मगर मेरे पास तो सिर्फ नौ सौ भेड़-बकरियां हैं।"

"नौ सौ भी काफी हैं। नौ सौ से ही काम चला लेंगे। हम चीनी लोग किसीको बेजा सताने के हक में नहीं है। समझौता हमारा पहला उसूल है।

"मगर ये बकरियां तो मेरी हैं।" काका ने झल्लाकर कहा।

"तुम्हारी हैं तो क्या हुआ! हम उन्हें लेंगे और तुम्हें उसके पैसे दे देंगे। हम चीनी सिपाही मुफ्त में किसीकी चीज नहीं छीनते। हर किसीको उसका हक देते हैं। तुम्हें हर बकरी के लिए पांच रुपये देंगे।"

"सिर्फ पांच रुपये!" काका गुस्से से चिल्लाया।

"चिल्लाते क्यों हो ?" ली-पो सख्ती से बोला, "हम तुम्हारे दोस्त हैं इसलिए तुम्हें फी बकरी पांच रुपये दे रहे हैं। वरना पिछले पड़ाव पर तो हमने फी बकरी दो रुपये दिए हैं और उससे पहलेवाले

कर रखी है। काका उन्हें दाईं तरफ धकेलने की कोशिश करता तो वे बाईं तरफ को हो जातीं। वह उन्हें घाटी के ऊपर चढ़ने को कहता तो वे नीचे उतर जातीं। इसी भाग-दौड़ में काका रास्ता भूल गया और सूरज बड़ी तेजी से पश्चिम की ओर जाने लगा।

"हम इस रास्ते से तो नहीं आए थे," एक चीनी सिपाही ने काका को शुबहे की नज़रों से देखते हुए कहा।

"खुद ही कहते हो, जल्दी चलो, तो मैं क्या करूं! तुमको दूसरे रास्ते से ले जा रहा हूं जो पहले रास्ते से भी छोटा है। यकीन न आए तो रेवड़ को खुद हांककर ले जाओ।"

मगर चीनी सिपाही भी जानते थे और काका भी जानता था कि रेवड़ उसके संभाले बिना किसीसे नहीं संभल सकता। इसलिए जैसे-तैसे चीनी सिपाही उसके साथ-साथ चलते रहे और काका कई घाटियों और ढलकियों से गुजरता हुआ रेवड़ को आगे ही आगे हांकता रहा।

जब शाम आ गई और सूरज डूबने लगा तो काका अपने रेवड़ को हांककर पश्चिमी पहाड़ों के एक दर्रे पर ले आया। यहां से दूर ऊपर से-ला पहाड़ की काठी दिखाई देती थी और नीचे डूबते हुए सूरज की तिरछी किरनें साग की घाटी पर तैर रही थीं जहां एक छोटा-सा गांव आबाद था, खूबसूरत खेत थे, फलदार पेड़ों के बाग थे और उन बागों में घूमती हुई किसी वहशी अल्हड़ कुंवारी लड़की की चंचल आंखों की तरह एक नदी बहती थी।

काका ने नजर भरकर अपनी प्रेमिका की घाटी को देखा। उसने सारे रेवड़ को ज़ोरदार आवाज़ से नीचे साग की घाटी की तरफ हांक दिया जहां सुनहरे गालोंवाली एक भोटिया लड़की उसका इन्तज़ार करती थी और जहां पर एक मज़बूत हिन्दुस्तानी चौकी कायम थी।

"क्या करते हो? क्या करते हो?" चीनी सिपाही चिल्लाकर बोले, "से-ला पहाड़ का दर्रा तो ऊपर है।"

काका ने कोई जवाब न दिया। पलक झपकते ही जब सारा रेवड़ *बां-बां करता हुआ, खुशी से चिल्लाता हुआ, नीचे साग की*

घाटियों में उतर कर आया जाता ने मुड़कर चीनी सिपाहियों की ओर देखा और दौड़ के [illegible] [illegible] [illegible]।

जब चीनी सिपाहियों ने उसे चौकी आगे ले कर लद्दाख की [illegible] एक आदमी के [illegible] दिया जिसके [illegible] और [illegible] थे । [illegible] सिर को [illegible] मार की घाटी के [illegible] था । एक [illegible] के लिए [illegible] मनोरम घाटी के बीच और [illegible] और नदी और [illegible] उसकी आंखों में [illegible] गया और उसके [illegible] में किसी अजनबी [illegible] की अनदेखी [illegible] आई और [illegible] उसके दिल में ख्याल आया, '...बर्फ बहार में...।'

४
शैतान का इस्तीफा

एक दिन शैतान खुदा के सामने हाजिर हुआ और सर भुका-कर बोला, "मेरा इस्तीफा हाजिर है !"

"क्यों, क्या बात है ?" अल्लाह-ताला ने फरमाया।

"मैं इस काम से आजिज (तंग) आ गया हू," शैतान ने थके हुए लहजे मे जवाब दिया, "हर रोज लोगो को जहन्नुम की आग मे जलाना, लहू और पीप के कडाहो मे उबालना, चाबुक मार-मारकर उनकी खाल उधेड़ना, हर लम्हा (क्षण) लोगो को गुनाह पर उकसाना—कितना मुश्किल काम है मेरा ! और जब से यह दुनिया बनी है तब से मैं यह काम कर रहा हू और अब मैं यह काम करते-करते बिलकुल थक गया हू। जरा गौर करो, बारे-इलाही, सबसे मुश्किल काम तुमने मुझे सौंपा है। वरना तेरे दूसरे फरिश्ते दिन-रात जन्नत की ठडी हवाएं खाते हैं, तेरी इबादत (उपासना) में मगन रहते हैं और हर वक्त लोगो को नेकी का दर्स (उपदेश) देते हैं। कैसा उम्दा और दिलचस्प और खूबसूरत काम है उनका ! या खुदा, मेरे मालिक, मेरे गॉड, मेरे भगवान, रब्बुल-अज़ीम (सबसे महान परमात्मा), मैं लोगों को गुनाह पर उकसाते-उकसाते थककर टूट चुका हू। मेरा इस्तीफा कबूल कर और मुझे इस रोज-रोज के जहन्नुम से नजात (छुटकारा) दे।

यह कहकर शैतान दो-जानू हो गया (घुटने टेक दिए) और खुदा के कदमो मे लिपटकर गिड़गिड़ा-गिड़गिड़ाकर रोने लगा। खुदावद करीम के दिल मे रहम आ गया, उन्होने अपने फरिश्तो

और मलायक (देवदूत) से मुखातिब होकर पूछा, "क्या तुम्हें कुछ कहना ?"

शैतान की आहोज़ारी से सब फरिश्तों के दिल पसीज गए थे, मगर आगे बढ़कर कुछ कहने की हिम्मत किसी में न थी। आखिर डरते-डरते जिब्रील ने इतना कहा, "तू रहीम (दयालु) है, करीम (दाता) है, वाकई इस शैतान को इसकी गुनाहों की सज़ा मिल चुकी है, मुझे इसपर रहम आता है।"

खुदा ने जिब्रील से पूछा, "क्या तू इसकी जगह काम करेगा?"

जिब्रील ने दस्त-बस्ता अर्ज़ की, "मैं तेरा पैगाम-रसां (संदेशवाहक) हूं।"

मीकाईल बोला, "मैं रोज़ी-रसां हूं।"

इसराफील बोला, "मैं सूर फूंकता हूं।"

इज़राईल बोला, "मैं रूह कब्ज़ करता हूं (शरीर से प्राणों को निकालता हूं)।"

अल्लाह-ताला ने फरमाया, "जो रूह कब्ज़ करता है उसको हम आज से जहन्नुम का निगरां (रखवाला) मुकर्रर करते हैं और शैतान को आज़ाद करते हैं। उसके पर उसको वापस कर दो।"

जब शैतान को उसके पर वापस मिल गए तो खुदा ने उससे कहा, "आज से तू फिर फरिश्ता है। आज से तू हरएक को नेकी का सबक देगा। इस वक्त तू सीधा यहां से चला जा मौज़ा लक्ष्मणपत्तन, जहां करमदीन किसान की बेटी ज़ोहरा का सौदा हो रहा है। जाकर फौरन उस सौदे को रोक दे।"

शैतान ने एक बूढ़े सफेद दाढ़ीवाले बुजुर्ग का भेस बदला औ मौज़ा लक्ष्मणपत्तन में करीमदीन किसान के घर पहुंच गया औ उसे समझाने लगा, "अगर तुमने अपनी लड़की बेची, तो तुमप खुदा का कहर नाज़िल होगा (कोप उतरेगा)।"

"फिलहाल तो मुझपर बनिये का कहर नाज़िल है," करमदी मायूसी से सर हिलाते हुए बोला, "अगर मैं अपनी लड़की न बे तो ज़मीन बेचूंगा और अगर मैं ज़मीन बेचूंगा तो मैं और मेरी बीव

और मेरी पांच लड़कियां और दो लड़के खाएंगे कहा से ? तुमने यहां की जमीन देखी है, सख्त और पथरीली और भुरभुरी लाल मिट्टी-वाली। इस जमीन में मक्का और बाजरा के सिवा और कुछ नहीं होता। दिन-रात की मेहनत के बाद भी एक वक्त फाके से गुजरता है। अब अगर जमान भी बेच दूंगे तो सीधे-सीधे मर जाएगे। क्या तुम पाच लड़कियों, दो लडकों और एक बीवी के कत्ल के जिम्मेदार बनने के लिए तैयार हो ?"

शैतान ने कानों पर हाथ रखा।

"तो तुम मुझे समझाने के बजाय लाला मिसरीशाह को समझाओ, जो हमारे गांव का बनिया है और जिसका साढ़े सात सौ रुपये का क़र्ज़ा मुझे अदा करना है। अगर वह अपना क़र्ज़ा मुझे माफ़ कर दे तो मैं अपनी लड़की जोहरा का सौदा नहीं करूंगा।"

शैतान ने अपने माथे पर तिलक लगाया, गेरुए रंग की एक धोती पहनी, कंधे पर रामनाम का अगोछा रखा और हाथ में माला लेकर लाला मिसरीशाह के घर पहुच गया। लाला मिसरीशाह उस वक्त अपने घर के आगन में तुलसी की पूजा से छुट्टी पाकर खाट पर बैठे थे कि शैतान ने अलख जगाई।

उसकी बात सुनकर लाला मिसरीशाह अपने लहजे में मिसरी घोलते हुए बोले, "पण्डितजी, आप क्यों बार-बार भगवान का नाम लेकर मुझे डरा रहे हैं ? लड़की का सौदा मैं नहीं कर रहा हूं, करमदीन कर रहा है। उसकी सजा-जजा (दण्ड-इनाम), गुनाह-सवाब (पाप-पुण्य) वह भुगतेगा, मैं क्या जानूं ! मुझे साढ़े सात सौ रुपये चाहिए। मेरा क़र्ज़ा वापस कर दे, बस, वह जाने उसका काम।"

"लेकिन अगर तुम साढ़े सात सौ रुपये उसके माफ़ कर दो तो वह अपनी लड़की नहीं बेचेगा," शैतान ने उन्हें समझाया।

"किस-किसका क़र्ज़ा माफ़ करूं ?" बनिये ने अपनी लाल किताब खोलकर दिखाई, "यह पोथी देखिए—सुन्दरदास को दो हजार देना है, जुम्मे को पाच सौ साठ रुपये, गुरदयाल को आठ सौ रुपये, महताबराय तीन हजार खाए बैठा है। इस गांव के किसानों

[illegible] में मिलता है। सभी [illegible] ? और, पर, मैं तो [illegible] !"

"[illegible] कभी न माफ करो, [illegible] [illegible] मूद है।"

"मजबूर तो मैं भी हूं। मैंने तो पनवाड़ियों के लाइसेंस की अर्जी दे रखी है और मुझे उस लाइसेंस के लिए साढ़े सात सौ रुपया चार दिन के अन्दर-अन्दर सरकारी खजाने में जमा करना होगा। करमदीन किसान की जमीन की कुर्की के कागज मेरे पास हैं। अगर उसने चार दिन के अन्दर-अन्दर मेरा रुपया वापस न किया तो मैं उसकी जमीन कुर्क कराके अपने लाइसेंस का रुप भर दूंगा।"

शैतान ने माथा ठोकते हुए कहा, "तुमको शरम नहीं आती लाला मिसरीशाह! उन साढ़े सात सौ रुपयों के बदले तुम ए मुसलमान लड़की को अपने घर में लाओगे, अपना धर्म भ्र करोगे?"

"राम-राम! कैसी बातें करते हो, पण्डितजी!" ला मिसरीशाह कानों को हाथ लगाते हुए बोला, "मैं ऐसी नीच हरक की तो सोच भी नहीं सकता। उस लड़की को मैं अपने घर में न ला रहा हूं। दरअसल उस लड़की का सौदा खोजा बदरुद्दीन से रहा है जो लक्ष्मणपत्तन के पुल के पार आढ़त की दुकान करता है उसकी चार बीवियां पहले से मौजूद हैं, मगर वह इसपर जोहरा के लिए साढ़े सात सौ देने के लिए तैयार है। सौदा सि इतना है कि करमदीन साढ़े सात सौ के बदले खोजा बदरुद्दीन अपनी लड़की देगा और खोजा बदरुद्दीन लड़की के बदले साढ़े स सौ करमदीन को देगा और करमदीन अपने क़र्ज़ के बदले सात मुझे देगा और मैं अपने लायसेंस के बदले······"

"बस, बस," शैतान घबराकर बोला, "यह बताओ, क्या गन्दा सौदा किसी तरह रुक नहीं सकता?"

"खोजा बदरुद्दीन चाहे तो रुक सकता है। आखिर उस

पाचवीं शादी करने की जरूरत क्या है ? चार तो उसके घर में पहले से मौजूद हैं। वह अगर यह शादी न करे तो यह सौदा आसानी से रुक सकता है।"

"मगर मैं कहां पाचवीं शादी कर रहा हूं ?" खोजा बदरुद्दीन आढ़ती ने शैतान को समझाया, "यह दुरुस्त है, मेरी चार बीवियां हैं मगर सबसे पहली बूढ़ी हो चुकी है। घर का काम-काज तक नहीं कर सकती। मैं उसका मेहर अदा करके उसका खर्चा बांधकर अलग कर दूंगा और तब जोहरा से शादी करूंगा।"

"मगर तुम्हारी उमर पैंसठ बरस की हो चुकी है। इस बुढ़ापे में तुम क्यों शादी करना चाहते हो ?" शैतान ने उससे पूछा।

"चारों बीवियों से आज तक कोई लड़का पैदा नहीं हुआ, सभी लड़कियां जनती हैं," खोजा बदरुद्दीन मायूसी से बोला, "मुझे लड़का चाहिए, अपना नामलेवा, खानदान का नाम चलानेवाला।"

"यह जरूरी नहीं है कि जोहरा से लड़का ही पैदा हो," शैतान ने कहा।

"अल्लाह बड़ा कार-साज है," खोजा बदरुद्दीन ने हाथ ऊपर उठाकर कहा, "वह मुझे जरूर मेरी मुराद देगा।"

शैतान ने फिर से पूछा, "क्या किसी तरह यह सौदा नहीं रुक सकता ?"

"कोई जबरदस्ती का सौदा तो है नहीं जनाब," खोजा बदरुद्दीन किसी कदर तल्खी से बोला, "लड़की बालिग और जवान है। अपना भला-बुरा खुद सोच सकती है। अगर लड़की इस शादी के लिए राजी न हो तो मैं या उसका बाप, उसे इस शादी के लिए कैसे मजबूर कर सकते हैं ?

शैतान ने एक खूबरू (रूपवान) गभरू नौजवान का भेस बदला और जोहरा से मिलने के लिए चला गया जो उस वक्त निक्की-दक्की की बेरियों के साये में एक चश्मे के किनारे बैठी हुई घड़ा भर रही थी। पहली नजर ही में वह इस गभरू नौजवान पर आशिक

हो गई। उसके [illegible] गालों पर हया की सुर्खी रंग बिखर गई और वह [illegible] बांहों में पड़ी हुई [illegible] की अपनी उंगलियों से छूने लगी।

शैतान ने उसे बांहों का सहारा दिया।

जोहरा [illegible] रह गई। नज़र भरकर उसने शैतान को देखा। फिर उसने अपनी आंखें झुका लीं और बड़ी कमज़ोर आवाज़ से बोली, "क्या काम करते हो?"

"कुछ नहीं करता," शैतान बोला, "खुदा का नाम लेता हूं।"

"खुदा का नाम तो सभी लेते हैं," जोहरा उदास होकर बोली, "फिर तुम मुझे खिलाओगे क्या?"

"हम दोनों मिलकर मेहनत करेंगे।"

"मेहनत तो मैंने हमेशा की है। अपने मां-बाप के घर में और खेतों में आज तक दिन-रात मेहनत करती आई हूं। इस मेहनत ने मुझे फटे चीथड़े दिए और एक वक्त का खाना दिया। इस मेहनत से अब मैं आजिज आ चुकी हूं।"

शैतान देर तक चुप रहा फिर धीरे से बोला, "जोहरा, तुम जवान हो और खूबसूरत हो। जरा सोचो, क्या तुम उस पैंसठ बरस के बुड्ढे से शादी करके खुश रह सकोगी? क्या तुम्हारी रूह को इस बात से इतमीनान होगा कि तुम एक इन्सान होकर चांदी के चन्द सिक्कों के बदले बिकने जा रही हो?"

"वह मुझे घर देगा, कपड़ा देगा, दो वक्त पेट भरकर रोटी तो देगा," जोहरा का चेहरा उम्मीद से खिल उठा।

"मगर वह बुड्ढा, बदसूरत, पैंसठ बरस का......" शैतान ने जोहरा का हाथ अपने हाथ में लेकर कहा, "जरा सोचो, तुम उससे कैसे खुश रह सकोगी?"

जोहरा ने धीरे से अपनी लम्बी-लम्बी पलकें ऊपर उठाईं और शरीर (चंचल) निगाहों से उसे ताकते हुए बोली, "खुश होने के लिए मैं कभी-कभी तुमसे मिल लिया करूंगी! आओगे न मुझसे मिलने के लिए? छुपके?"

जोहरा ने एक ठण्डी सांस भरकर अपना सीना उसके सीने पर

रख देना चाहा, मगर शैतान जल्दी से हाथ छुड़ाकर वहाँ से भाग गया।

यह थानेदार गुरुदयालसिंह के पास पहुँचा और उससे कहने लगा, "मैं एक शरीफ़ शहरी की हैसियत से आपसे दरख्वास्त करता हूँ कि इस सौदे को रोक दीजिए और एक लड़की की ज़िन्दगी तबाह होने से बचा लीजिए। थानेदार साहब, मैं आपको बताता हूँ कि मौजा सम्मनपुरा का किसान करमदीन अपनी लड़की का सौदा खोजा बदरुद्दीन से कर रहा है। साढ़े सात सौ रुपये लेकर यह अपनी लड़की की शादी खोजा बदरुद्दीन से कर देगा और ज़ोहरा को पाकर खोजा बदरुद्दीन साढ़े सात सौ रुपये करमदीन को देगा जो ये साढ़े सात सौ रुपये लेकर लाला मिसरीशाह को देकर अपनी ज़मीन छुड़ा लेगा। क्या इन्सान की रूह अब मरलो और चीज़ों की सूरत में बेची जाएगी? अख़लाक़ी (नैतिक) एतबार से यह सौदा ग़लत है। मज़हबी एतबार से यह गुनाहे-अज़ीम है। क़ानूनी एतबार से भी यह जुर्म है। मैं आपको ख़बरदार करता हूँ, आप इस इलाक़े के थानेदार हैं, आप इस ख़िलाफ़-क़ानून सौदे को रोक दीजिए।"

"मैं हरगिज़ नहीं रोकूँगा," थानेदार ने शैतान को समझाया, "मुझे सारा क़िस्सा मालूम हो चुका है और मैंने सारा बंदोबस्त कर लिया है। मुझे मालूम हो चुका है कि जब ज़ोहरा का निकाह खोजा बदरुद्दीन से होगा, उससे चंद मिनट पहले खोजा बदरुद्दीन साढ़े सात सौ रुपये अपने हाथ से अपनी होनेवाली बीवी के हाथ में देगा। ज़ोहरा यह रकम लेकर अपने बाप के हाथ में देगी। निकाह के बाद वही रकम लेकर करमदीन लाला मिसरीशाह के पास जाएगा और वही साढ़े सात सौ रुपये उसे देकर अपना क़र्ज़ चुकाएगा। मगर मेरे आदमी खोजा बदरुद्दीन के निकाह के वक्त मौजूद होंगे और जो रुपया खोजा बदरुद्दीन इस सौदे के बदले में करमदीन को देगा, उसपर पहले से हमारे खुफ़िया निशान बने होंगे। बस, जब निकाह हो जाएगा और सौदा पक्का हो जाएगा तो मैं एक ही हल्ले में सबको गिरफ़्तार कर लूँगा और उनपर बेटी बेचने के जुर्म में-

[illegible] बनता है।"

"मगर आप [illegible] है?" शैतान ने [illegible] कहा, "आप इस किस्म के [illegible] अमल में आने से पहले ही रोक क्यों नहीं लेते?"

"[illegible] (नासमझ) हैं आप!" [illegible] थानेदार ने [illegible] कहा, "मैं ऐसा अहमक नहीं हूं कि इतने बड़े मुकदमे को यूं आसानी से हाथ से जाने दूं। [illegible] और लाला मिसरीलाल और [illegible] और [illegible] को मैं एक साथ लपेट में ले लूं। [illegible] मैं [illegible] से सकूंगा और [illegible] मिसरीलाल से ऐंठ लूंगा। फिर मैंने सुना है कि [illegible] बड़ी खूबसूरत लड़की है।"

"मगर यह तो गुनाह है," शैतान ने घबराकर कहा।

"उन चार हजार रुपयों से मैं अपनी लड़की की शादी कर सकूंगा। मेरी बच्ची की शादी एक अरसे से रुकी हुई है, क्योंकि मुझे उसके दहेज के लिए माकूल (पर्याप्त) रकम चाहिए। अब एक हल्ले में सब बंदोबस्त हो जाएगा।"

"एक लड़की की शादी के लिए आप दूसरी लड़की की जिन्दगी तबाह करेंगे। यह तो पाप है।"

"और शोहरत अलग मिलेगी, जनाब," थानेदार ने शैतान को समझाया, "इतना बड़ा मुकद्दमा आज तक इलाके में किसी थानेदार के हत्थे न चढ़ा होगा। ऐन मुमकिन है कि मैं इस मुकद्दमे की कामयाबी के बाद सब-इंस्पेक्टर बना दिया जाऊं।"

"मगर यह तो जुर्म है," शैतान चिल्लाया।

"आप बीच में बोलनेवाले कौन होते हैं?" थानेदार ने गरजकर पूछा।

"मैं खुदा का बंदा हूं," शैतान ने आजिजी से सर झुकाकर कहा, "लोगों को नेकी का दर्स (उपदेश) देता हूं।"

थानेदार ने उसे हवालात में बन्द कर दिया।

सात दिन के बाद हवालात से छूटकर शैतान सीधा खुदा [illegible]

हुजूर में पहुंचा और अपने पर धारण करने लगा।

"क्या बात है ?" अल्लाह-ताला ने पूछा।

शैतान ने कहा, "मैंने सोचा था कि मेरा काम सबसे मुश्किल है और फरिश्तों का काम सबसे आसान है। अब मालूम हुआ कि मेरा काम सबसे आसान है और फरिश्तों का काम सबसे मुश्किल है। इसलिए मैं अपना इस्तीफा धारण किये हूं और दरख्वास्त करता हूं कि मुझे फौरन जहन्नुम में भेज दिया जाए।"

५

मक्की के दाने

[illegible] ; करीब-करीब जैसे जुड़े एक-दूसरे से [illegible] और आगे, धूप-छांव की [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] लगाएं। उनकी मुहब्बत, उनकी जवानी की तरह हरी, कच्ची, ना-तजुर्बेकार थी।

मगर वह उसे पसन्द थी। उसे अपने इलाके का डोगरी सौंदर्य पसन्द था, जो न यू० पी० की तरह तीखा और सलोना होता है, न कश्मीर की तरह गोरा और मोम की तरह नर्म होता है, न पंजाबी की तरह लचकदार होता है। एक फौजी होने के नाते उसने भारत के विभिन्न इलाकों की फौजी चौकियों पर तरह-तरह का रूप देखा था। मगर वह ठाकुरां को कभी नहीं भूल सका। गोरी और गन्ने की तरह रसदार और अल्हड़ बल्कि बेवकूफ, अपनी पतली कमर के बावजूद सर पर चार घड़े उठाकर तीन मील के फासले से तोही के चश्मे से पानी लानेवाली और तपती दोपहरियों में घाटी-घाटी रेवड़ को लेकर गीत गानेवाली ठाकुरां की आवाज़ चील की तरह उड़ती थी और वह दो मील दूर से उसे सुन सकता था। बचपन से वह उसकी आदत थी और कोई कहीं कितने ही बरस के लिए चला क्यों न जाए, अपने बचपन की आदत कैसे भूल सकता है?

ठाकुरां ने उसे अपने मक्की के भुट्टे से पंद्रह दाने भूनकर दिए और बोली, "गिन लो, पूरे पन्द्रह हैं?"

ठाकुरसिंह ने अपनी हथेली आगे सरकाई तो ठाकुरां ने बड़े सम्मान से अपनी गरदन ऊंची की और दान देती हुई किसी शह-

दी की तरह अपनी हथेली नीचे सरकाई और दाने ठाकुरसिंह की (हथे)ली पर डाल दिए। एक क्षण के लिए ठाकुरा की हथेली ठाकुर(सि)ह की हथेली से छू गई और ठाकुरसिंह को ऐसा लगा जैसे दूर(दूर) तक शाखें पत्तों में भर गई।

ठाकुरसिंह ने गिनकर कहा, "पन्द्रह नहीं, बारह हैं।"

"नहीं, पूरे पन्द्रह है, गिनकर देखो।"

"कैसे पन्द्रह हैं, पूरे बारह हैं। न एक कम न एक ज्यादा, गिन(लो)।" ठाकुरसिंह हथेली दिखाते हुए बोला।

ठाकुरा ने उसकी हथेली पर अपनी खूबसूरत उंगली रख दी (औ)र ठाकुरसिंह को ऐसा लगा जैसे कबूतरी शाख पर बैठ गई। (औ)र ठाकुरा शरारत से मक्की के दाने उसकी हथेली पर दबा-दबा(क)र गिनने लगी।

"एक, दो, तीन, चार—पांच, छ', सात—आठ, नौ, दस, (ग्य)ारह, बारह—" और फिर तीन जगह खाली चुटकी भरते हुए (बो)ली, "तेरह, चौदह, पन्द्रह। हो गए न पूरे पन्द्रह?" वह अपनी (का)ली-काली चंचल आंखें जल्दी-जल्दी झपकाते हुए बोली।

"हां, हो गए!" ठाकुरसिंह ने उल्लास का एक गहरा सांस (ले)कर कहा और हथेली को नचाकर मक्की के बारह दानों का फंका (अ)पने मुंह में डाल लिया। मक्की के सुनहरे सिके हुए कुरकुराते दाने (उ)सके मुंह में कुड़-कुड़ करते हुए टूटने लगे और ठाकुरसिंह को ख्याल (आ)या कि ठाकुरा का रूप भी बिलकुल ऐसा ही होगा।

जल्दी-जल्दी मक्की के भुट्टे से दाने भरते हुए ठाकुरा ने अपनी (ह)थेली भर ली। पच्चीस-तीस दाने होंगे। वह जल्दी से फंका मार(क)र उन्हें खा गई। ठाकुरसिंह ने फौरन उसकी कलाई पकड़कर कहा, "तुमने ज्यादा खाए।"

"नहीं।" ठाकुरा जोर से चीखी, "पूरे पन्द्रह थे।"

"नहीं, ज्यादा खाए।" ठाकुरसिंह ने आग्रह किया।

जवाब में ठाकुरा ने दूसरी बार उतने ही दाने मक्की के भुट्टे (से) भरकर खा लिए और बोली, "हां, खाए फिर?"

जवाब में ठाकुरसिंह ने उसकी कमर में हाथ डाल दिया।

"एक हाथ दूंगी।" ठाकुरां ने फौरन अपना हाथ उठाकर हवा में कहा और ठाकुरसिंह ने जल्दी से अपना हाथ पीछे खींच लिया। फिर अचानक नरम होकर बोली, "तुम बापू से बात क्यों नहीं करते हो?"

"क्या कहता था रे? बापू?" ठाकुरसिंह ने कहा।

"बापू कहता है, मैं ठाकुरां की शादी ठाकुरसिंह से नहीं करूंगा," वह बोली।

"क्यों?"

"क्योंकि दोनों का नाम एक जैसा है।"

"यह क्या बात हुई," ठाकुरसिंह गुस्से से बोला, "अगर दो बेरी के झाड़ साथ-साथ उगें तो लोग दोनों को बेरी ही कहेंगे, पीपल तो कहेंगे नहीं।"

"अच्छा! मैं बेरी का झाड़ हूं?" ठाकुरां तुनककर बोली।

"मेरा मतलब यह नहीं था।" ठाकुरसिंह ने सहमकर कहा।

"हां, हां, मैं बेरी का झाड़ हूं। मैं सूखी-सूखी कांटोंवाली टेढ़ी-बुच्ची शाखोंवाली बेरी हूं। मैं तुझको चुभती हूं न?" ठाकुरां रुआंसी होने लगी, "तू जा, जाके कोई दूसरी कर ले।"

"क्यों बेकार उलझती है?"

"मैं बेरी का झाड़ जो हुई। उलझूंगी नहीं तो और क्या करूंगी?"

"तू मुझे गलत समझती है।"

"गलत नहीं समझूंगी तो और क्या करूंगी?—तुम—बापू से बात क्यों नहीं करते हो?"

ठाकुरां के गुलाबी होंठों पर सिकी हुई मक्की के जले हुए छोटे-छोटे छिलके देखकर ठाकुरसिंह पागलों की तरह आगे बढ़ गया। फौरन ठाकुरां ने पीछे हटकर अपना हाथ उठाया, "एक हाथ दूंगी, पहले बापू से बात कर।"

शाम को ठाकुरसिंह ने बेतहाशा शराब पी और अपने बाप को लेकर चला गया। ठाकुरां के घर जाकर उसने अपनी ब

से लाल ठाकुरां के बाप के सीने पर रख दी और बोला, "बोल, शादी करता है कि नहीं ?"

"किसकी शादी ? किससे ?"

"ठाकुरां की, मुझसे ? तीस बरस का हो गया हूं, हवलदार भी हो गया हूं फौज मे, अभी तक ठाकुरां के लिए कुंवारा हूं। परसों लद्दाख जा रहा हूं, इसलिए कल शादी होगी, नहीं तो खड़े-खड़े यह बन्दूक दाग दूंगा तेरे सीने में ! बोल !"

ठाकुरां का बाप जोर से हंसा। सीने पर रखी हुई बन्दूक की परवाह न करते हुए मुड़ा और अपनी बीवी से बोला, "गंगा, याद है तुमको ? मैं भी तेरे बाप से इसी तरह रिश्ता मांगने आया था ?"

फिर वह ज़ोर-ज़ोर से कहकहा मारकर हंसने लगा और ज़ोर से हाथ मारकर उसने ठाकुरसिंह को अपने साथ चारपाई पर बिठा लिया।

कोई दस महीने बाद लद्दाख की एक चौकी पर मेजर हज़ारासिंह ने उससे कहा, "अटेन-शन !"

हवलदार ठाकुरसिंह अटेन-शन हो गया।

"सैल्यूट !" मेजर हज़ारासिंह गरजकर बोला।

हवलदार ठाकुरसिंह ने सैल्यूट मारा।

मेजर हज़ारासिंह ने हवलदार ठाकुरसिंह को सर से पांव तक देखा। उसकी निगाह में उकाब की सी हेकड़ी और उपहास था। मेजर को उसके मातहत काम करने वाले पीठ पीछे नकडू कहा करते थे क्योंकि उसकी नाक बड़ी लम्बी और टेढ़ी थी और वह बहुत ज़ालिम मशहूर था, और उसकी टेढ़ी नाक के नीचे उसकी मूछें बिच्छू के डंक की तरह हमेशा ऊपर को उठी रहती थीं।

मेजर के लहजे से ठाकुरसिंह एकदम चौकन्ना हो गया और सोचने लगा, 'जाने मैंने आज कौन-सी गलती की है ! मेजर बहुत गरम हो रहा है।'

मेजर हज़ारासिंह ने अपनी मूछों को ताव दिया, एक मटियाला कागज़ हाथ में उठाया और कड़कती हुई आवाज़ में बोला,

"हवलदार ठाकुरसिंह, तुम्हारी छुट्टी पन्द्रह दिन के लिए मंजूर की गई है और तुम्हारी बीवी के बड़ा लड़का हुआ है और तुम आज इसी वक्त जा सकते हो। अटेन-शन।"

हवलदार ठाकुरसिंह अटेन-शन हो गया।

"सैल्यूट!"

हवलदार ने सैल्यूट मारा।

मेजर हजारासिंह ने कागज पर एक गोल-सा दस्तखत करके हवलदार के हाथ में दिया जो उसने आगे बढ़कर ले लिया और इससे पहले कि हवलदार ठाकुरसिंह मेजर हजारासिंह का शुक्रिया अदा कर सके, मेजर हजारासिंह कड़ककर बोला, "आर्डर राइट—अबाउट-टर्न।"

हवलदार ठाकुरसिंह ने बड़ी फुर्ती और सधे हुए ढंग से अबाउट-टर्न मारा।

"डिसमिस!"

मेजर हजारासिंह ऐसी खौफनाक आवाज में चिल्लाया जैसे वह हवलदार ठाकुरसिंह को घर भेजने के बजाय अगले मोर्चे पर भेजने का हुक्म दे रहा हो। जब हवलदार चला गया तो मेजर हजारासिंह ने अपनी लम्बी और टेढ़ी नाक के नीचे खौफनाक बिच्छू के डंकवाली मूंछों को ताव देकर कसा और जरा-सा मुस्करा दिया। उसका चेहरा कठोर था, आवाज भारी और खौफनाक। सिपाहियों से ड्यूटी लेने में वह बेहद सख्त मशहूर था। चौकी के सब सिपाही उससे डरते थे और हर वक्त चाक-चौबन्द रहते थे। कब जाने, मेजर साहब क्या हुक्म दे दें, इसका भरोसा नहीं। कब जाने क्या कह दें। इसलिए हर वक्त अटेन-शन रहना ही अच्छा है।

मेजर हजारासिंह से विदा होकर हवलदार ठाकुरसिंह चौकी के सबसे ऊंचे अड्डे की तरफ भागा जहां उसकी मशीनगन का घोंसला था। वह यह खबर फौरन अ... को सुनाना चाहता ... न के ... सुखचैन-
... शेर ... छुपा-
बड़ा

मज़ा आएगा उन लोगों का चेहरा देखकर।

तेज़-तेज़ कदमों से चढ़ता हुआ वह चौकी के सबसे ऊंचे अड्डे पर पहुंच गया। यहां दोरखां और आसाराम अपनी मार्टर ठीक कर रहे थे और सुरचैनसिंह उसका साथी मशीनगन का गोला-बारूद देख रहा था। हवलदार ठाकुरसिंह उनके करीब जाकर चिल्लाया और अपनी एक जेब से अपनी बीवी का खत निकालकर दिखाते हुए बोला, "मेरे घर लड़का हुआ है।"

दोरखां और आसाराम ने पलटकर एक निगाह उसपर डाली, ऐसे तिरस्कार से जैसे वे अपने सामने एक खारिशज़दा कुत्ते को देख रहे हों। दूसरे क्षण वे पलटकर अपनी मार्टर के काम में लग गए।

"और मुझे पन्द्रह दिन की छुट्टी भी मिल गई है," ठाकुरसिंह ने दूसरी जेब से दूसरा कागज़ निकालकर हवा में लहराया। मैला, पीला, मटियाला-सा कागज़ जिसपर मेजर के गोल-गोल दस्तखत थे। सुरचैनसिंह ने अपने साथी की तरफ एक बार खामोशी से देखा, फिर दूरबीन उठाकर अपनी आंखों से लगा ली और सामने झील के पार उन ऊंचे पहाड़ों को गौर से देखने लगा जहां चीनियों ने अपने अड्डे जमाए थे। मगर वह भी कुछ नहीं बोला। अपने साथियों की यह प्रतिक्रिया देखकर ठाकुरसिंह खिसियाना हो गया और छुट्टी का कागज़ और बीवी का खत दोनों अपनी जेब में डालकर उन सबकी तरफ पीठ करके अपनी मशीनगन पर बैठ गया और दांत पीसकर बोला, "बड़ो!"

यह सुनते ही वे तीनों उसकी तरफ दौड़े और इससे पहले कि ठाकुरसिंह अपने-आपको बचाए, वे तीनों उसपर हमलावर हो गए और उसकी पीठ, पसलियों और कंधों पर मुक्के मार-मारकर कहने लगे, "अबे साले, कमीने, अपने लड़के की पैदाइश का ज़िक्र इस फ़ख़्र से करता है जैसे नेफा का मोर्चा मार करके आ रहा है? सुअर की औलाद, खोती दे पुत्तर! (गधी के बेटे!) तू घर जाएगा, अपनी बीवी को गले से लगाएगा और यहां हम तेरी मशीनगन का चर्खा संभालेंगे?"

वे लोग उसे कोस-कोसकर गालियां दे रहे थे और वह उन सबके

"हवलदार ठाकुरसिंह, तुम्हारी छुट्टी पन्द्रह दिन के लिए मंजूर की गई है और तुम्हारी बीवी के यहां लड़का हुआ है और तुम आज इसी वक्त जा सकते हो। अटेन-शन।"

हवलदार ठाकुरसिंह अटेन-शन हो गया।

"सैल्यूट !"

हवलदार ने सैल्यूट मारा।

मेजर हजारासिंह ने कागज पर एक गोल-सा दस्तखत करके हवलदार के हाथ में दिया जो उसने आगे बढ़कर ले लिया और इससे पहले कि हवलदार ठाकुरसिंह मेजर हजारासिंह का शुक्रिया अदा कर सके, मेजर हजारासिंह कड़ककर बोला, "आर्डर राइट—अबाउट-टर्न।"

हवलदार ठाकुरसिंह ने बड़ी फुर्ती और सधे हुए ढंग से अबाउट-टर्न मारा।

"डिसमिस !"

मेजर हजारासिंह ऐसी खौफनाक आवाज में चिल्लाया जैसे वह हवलदार ठाकुरसिंह को घर भेजने के बजाय अगले मोर्चे पर भेजने का हुक्म दे रहा हो। जब हवलदार चला गया तो मेजर हजारासिंह ने अपनी लम्बी और टेढ़ी नाक के नीचे खौफनाक बिच्छू के डंकवाली मूंछों को ताव देकर कसा और जरा-सा मुस्करा दिया। उसका चेहरा कठोर था, आवाज भारी और खौफनाक। सिपाहियों से ड्यूटी लेने में वह बेहद सख्त मशहूर था। चौकी के सब सिपाही उससे डरते थे और हर वक्त चाक-चौबन्द रहते थे। कब जाने, मेजर साहब क्या हुक्म दे दें, इसका भरोसा नहीं। कब जाने क्या कह दें। इसलिए हर वक्त अटेन-शन रहना ही अच्छा है।

मेजर हजारासिंह से विदा होकर हवलदार ठाकुरसिंह चौकी के सबसे ऊंचे अड्डे की तरफ भागा जहां उसकी मशीनगन का घोंसला था। वह यह खबर फौरन अपने साथियों को सुनाना चाहता था। मारे ईर्ष्या और जलन के खाक हो जाएंगे सुखचैन... और आसाराम। और बेचारा शेरखां तो बगलों में मुंह छुपा...गा। क्योंकि उसकी छुट्टी अभी मंजूर नहीं हुई थी। बड़ा

मज़ा आएगा उन लोगों का चेहरा देखकर।

तेज़-तेज़ कदमों से चढ़ता हुआ वह चौकी के सबसे ऊंचे अड्डे पर पहुंच गया। यहां शेरखां और आसाराम अपनी मार्टर ठीक कर रहे थे और सुखचैनसिंह उसका साथी मशीनगन का गोला-बारूद देख रहा था। हवलदार ठाकुरसिंह उनके करीब जाकर चिल्लाया और अपनी एक जेब से अपनी बीवी का खत निकालकर दिखाते हुए बोला, "मेरे घर लड़का हुआ है।"

शेरखां और आसाराम ने पलटकर एक निगाह उसपर डाली, ऐसे तिरस्कार से जैसे वे अपने सामने एक खारिशज़दा कुत्ते को देख रहे हों। दूसरे क्षण वे पलटकर अपनी मार्टर के काम में लग गए।

"और मुझे पन्द्रह दिन की छुट्टी भी मिल गई है," ठाकुरसिंह ने दूसरी जेब से दूसरा कागज़ निकालकर हवा में लहराया। मैला, पीला, मटियाला-सा कागज़ जिसपर मेजर के गोल-गोल दस्तखत थे। सुखचैनसिंह ने अपने साथी की तरफ एक बार खामोशी से देखा, फिर दूरबीन उठाकर अपनी आंखों से लगा ली और सामने झील के पार उन ऊंचे पहाड़ों को गौर से देखने लगा जहां चीनियों ने अपने अड्डे जमाए थे। मगर वह भी कुछ नहीं बोला। अपने साथियों की यह प्रतिक्रिया देखकर ठाकुरसिंह खिसियाना हो गया और छुट्टी का कागज़ और बीवी का खत दोनों अपनी जेब में डालकर उन सबकी तरफ पीठ करके अपनी मशीनगन पर बैठ गया और दांत पीसकर बोला, "बड़ो!"

यह सुनते ही वे तीनों उसकी तरफ दौड़े और इससे पहले कि ठाकुरसिंह अपने-आपको बचाए, वे तीनों उसपर हमलावर हो गए और उसकी पीठ, पसलियों और कंधों पर मुक्के मार-मारकर कहने लगे, "अबे साले, कमीने, अपने लड़के की पैदाइश का ज़िक्र इस फख़्र से करता है जैसे नेफा का मोर्चा सर करके आ रहा है? सुअर की औलाद, खोती दे पुत्तर! (गधी के बेटे!) तू घर जाएगा, अपनी बीवी को गले से लगाएगा और यहां हम तेरी मशीनगन का चर्बा उतारेंगे?"

वे लोग उसे कोस-कोसकर गालियां दे रहे थे और वह उन सबके

बीच में फुटबाल बना हुआ अपने-आपको बचाने की कोशिश करता हुआ खुशी से हंसता जाता था। अपने दोस्तों के मुक्के और घूंसे उस वक्त उसे फूलों से भी नरम और प्यारे मालूम हो रहे थे।

एक रात के लिए उन्होंने उसे घर जाने से रोक दिया। सुख-चैनसिंह उसीके गांव का था। वह अपने घरवालों के लिए कुछ तोहफे भेजना चाहता था और एक खत। रास्ते में तो नहीं, लेकिन जरा दूर पर शेरखां का गांव भी था और शेरखां का आग्रह था कि ठाकुरसिंह उसके घर भी जाए और उसकी बीवी की खैर-खबर, सुख-सांद लेके आए। फिर वे सब लोग उसे विदा करने से पहले उसकी दावत करना चाहते थे इसलिए रात-भर के लिए रुकना बेहद जरूरी हो गया।

रात का खाना खाकर वे लोग ऊपर चौकी के अड्डे पर आ बैठे। कई दिनों के बाद आसमान साफ दिखाई दिया था और अकसाईचिन के पहाड़ों पर चांद मेजर के गोल दस्तखत की तरह चमक रहा था। नीचे झील की सतह पर ग्लेशियर का एक टुकड़ा तैर रहा था और उसके इर्द-गिर्द चांदनी एक हाले की तरह खिंची हुई थी।

एक साल से वे इस फौजी चौकी पर थे। मगर आज तक कभी दुश्मन से लड़ाई का मौका नहीं आया था। उन्हें मालूम था कि झील के उस पार ऊंचे पहाड़ों पर चीनी फौजों के अड्डे हैं। मगर चीनी फौजियों से आज तक उनकी मुठभेड़ न हुई थी इसलिए खाना खाकर सबके दिल में सन्तोष था और किसीका दिल उस वक्त फौजी चौकी में नहीं था। ठाकुरसिंह की छुट्टी की खबर से उन सबके जहन अपने घरों में थे जैसे उनकी आंखों से अकसाईचिन के बर्फ से ढके पहाड़ गायब हो गए थे और दूर नीचे हरी-भरी घाटियों और वादियों में छुपे हुए गांव जैसे किसी दुधमुंहे बच्चे की तरह धरती के सीने से लगे, चिमटे, मासूम और खूबसूरत नजर आने लगे।

। बोला, "इसी महीने की इक्कीस तारीख को हमारे गांव

से बाहर वदीउज्जमा ख्वाजा के मज़ार पर मेला लगता है। मेरी बीवी को बोलना कि वह इस मौके पर मेरी जान की सलामती के लिए नियाज़ देना न भूले।"

"बोल दूंगा।"

कुछ क्षण तक खामोशी रही। शेरखां फिर बोला, "मेरे आने के बाद मेरी भैंस के यहां कट्टी हुई थी उसे भी देखकर आना।"

"बहुत अच्छा।"

आसाराम ने हवा के बर्फीले झोंके से बचते हुए अपने कोट का कालर ऊंचा किया और धीरे से नींद से बोझल लहजे में बोला, "इन सर्दियों में मेरी शादी टेकां से होनेवाली थी, अब जाने कब होगी।"

कोई कुछ नहीं बोला।

कुछ क्षण की खामोशी के बाद आसाराम शरमाकर बोला, "इस वक्त टेकां के घर के लोग खाना खाकर आग तापते होंगे! टेकां पिछली फसल के मक्की के भुने हुए भुट्टे आग पर गरम करके खा रही होगी! उसकी एक जुल्फ कानों के पास से नीचे फिसल आई होगी और आग की रोशनी में चांदी के झुमके चमक रहे होंगे!"

कोई कुछ नहीं बोला।

"टेकां को मक्की के भुट्टे और भुने हुए अखरोट और खुश्क खूबानियां बहुत पसन्द हैं।" आसाराम ने फिर कहा।

फिर कोई कुछ नहीं बोला। अचानक सुखचैनसिंह को हिचकी आने लगी।

"कोई तुम्हें याद कर रहा है," शेरखां ने सुखचैनसिंह को [illegible]ाया। क्योंकि हर शख्स जानता है कि हिचकी उसी वक्त आती है [illegible]ब कोई किसीको याद करता है।

"कौन है तुम्हारी वह याद करनेवाली?" शेरखां ने सुखचैन[illegible]ह से पूछा।

सुखचैनसिंह ने बड़ी हसरत से कहा, "इस दुनिया में [illegible] [illegible] के सिवा और कोई नहीं है।"

और फिर उसने एक हिचकी ली।

हिचकी से ठाकुरसिंह को अपनी शादी की रात याद आ गई। लोगों ने ठाकुरां को और उसे एक अलग कमरे में बन्द कर दिया था क्योंकि सुबह ठाकुरसिंह को वापस महाज़ जाना था; और लाल जोड़ा पहने हुए मेहंदी-भरे हाथोंवाली ठाकुरां को अचानक हिचकी लग गई थी और किसी तरह बंद न होती थी। और सिर्फ यह एक रात उन दोनों को मिली थी और वे बहुत-सी बातें करना चाहते थे। मगर यह हिचकी थी जो किसी तरह बंद न होती थी। ठाकुरसिंह ने कमरे में पड़े हुए दूध के गिलास को ठाकुरां के मुंह से लगा दिया। मगर दूध पीकर भी ठाकुरां की हिचकी बन्द न हुई। फिर उसने मगजी के दाने हथेली में भरकर ठाकुरां के मुंह में डाल दिए और उन्हें चबाते-चबाते ठाकुरां का मुंह दुखने लगा, फिर भी उसकी हिचकी बंद नहीं हुई। फिर ठाकुरसिंह ने उसे अखरोट खिलाए और बादाम और फिर कूज़ा मिसरी की बड़ी डली उसके मुंह में रख दी। लेकिन जब ठाकुरां की हिचकी किसी तरह बन्द न हुई तो घबराकर ठाकुरसिंह ने ठाकुरां के होंठों पर अपने होंठ रख दिए···

और ठाकुरां की हिचकी बन्द हो गई।

उस घटना को याद करके ठाकुरसिंह दिल ही दिल में मुस्करा दिया। फिर उसने अपने कोट की जेब से अपनी बीवी की ताज़ा-तरीन चिट्ठी निकाली जिसमें उसके नन्हे-मुन्ने बच्चे की तस्वीर थी—गुलगोथला-सा प्यारा बच्चा हंसता हुआ। उसकी चमकदार आंखों के चारों ओर काजल फैल गया था। उसकी कलाइयों और कुहनियों में कितने प्यारे गड्ढे थे और उसकी ठोड़ी तो बिलकुल बाप की तरह थी, और हां, नाक भी। अपने चेहरे को अपने बेटे के चेहरे में देखकर ठाकुरसिंह बरबस खुशी से मुस्करा दिया। फिर उसने जेब से एक टेलीग्राम निकाला जो इस खत से पहले आया था, जिसमें उसकी बीवी की बीमारी का ज़िक्र था जिसकी वजह से उसने छुट्टी की अर्ज़ी दी थी। और अब यह खत और यह तस्वीर। नन्हे मुस्कराते हुए बच्चे को देखकर ठाकुरसिंह का जी

उसे गोद में लेकर चूमने को चाहने लगा।

अचानक एकसाथ बहुत-सी गोलियों के चलने की आवाज़ आई। शेरखां उस वक्त अपनी मार्टर के पास खड़ा अंगड़ाई ले रहा था। गोली ने उसका सीना छेद दिया और वह कलाबाज़ी खाता हुआ ज़मीन पर जा गिरा और गिरते ही ठंडा हो गया।

फिर सामने के पहाड़ों से बहुत-सी फुलझड़ियां एकदम रोशन हुईं और तोपों के दगने से पहाड़ों का सीना कांप उठा और टेलीफ़ोन पर आसाराम को मेजर हज़ारासिंह की आवाज़ सुनाई दी, "चीनी हमला शुरू हो गया है।" इस खबर के साथ-साथ बहुत-से आदेश थे।

आदेश सुनने के बाद वे लोग अपने-अपने मार्टरों और मशीन-गनों में लग गए। गोलियों की तड़ातड़ के अटूट क्रम से अंधेरी रात के सन्नाटे में लगातार सूराख होते जा रहे थे। फिर बीच में थोड़ी देर के लिए यह तड़ातड़ रुकी और उस दौरान में आसाराम ने ठाकुरसिंह से कहा, "मेजर को मालूम नहीं है कि तुम अभी तक यहां पर हो। इसलिए तुम चुपचाप निकल जाओ। अपनी छुट्टी बेकार न जाने दो।"

"हां, तुम तो छुट्टी पर हो!" गुरबचनसिंह बोला।

"कल चला जाऊंगा," ठाकुरसिंह धीरे से मगर बड़े दृढ़ स्वर में बोला, "सुबह तो होने दो।" इतना कहकर वह शेरखां के मोर्चे पर बैठ गया।

दो घंटे की लगातार गोलाबारी के बाद जब एक गोली ने गुरबचनसिंह की जान ले ली तो आसाराम ने मेजर से कुमक तलब की।

"कुमक कहां है?" मेजर टेलीफ़ोन पर बोला, "दुश्मन ने आगे, पीछे और दायें तीन तरफ़ से हमला किया है। चौकी नम्बर छः और पांच पर दुश्मन का कब्ज़ा हो चुका है।"

रात के तीसरे पहर के करीब मेजर ने बताया कि चौकी नम्बर चार और तीन भी हाथ से गईं।

फिर टेलीफ़ोन एकाएक कट गया।

'हेलो-हेलो!" आसाराम बार-बार बोला, "मेजर साहब!

मेजर साहब !!"

मगर टेलीफोन मुर्दा हो चुका था चौकी नम्बर दो से भी अब कोई नहीं बोल रहा था और उनकी अपनी चौकी का नम्बर एक था।

कोई बीस मिनट के बाद मेजर हजारासिंह अकेला खून में लथ-पथ एक मशीनगन को अपने कंधे पर उठाए हांफता हुआ उनकी चौकी पर पहुंचा। उसका चेहरा गम और गुस्से से लाल था। उसने चौकी पर किसी से बात नहीं की। वह जिधर से आया था उधर ही की तरफ उसने अपनी मशीनगन का मुंह नीचे को फेर दिया और मशीनगन की तरफ ही देखते हुए, आदेश देते हुए चिल्लाकर बोला, "दुश्मन मेरे पीछे-पीछे चढ़ाई चढ़ता हुआ आ रहा है। अपनी मार्टर का मुंह भी इस तरफ नीचे को घुमा दो और गोलियों की बाढ़ पर सबको भून दो। दुश्मन तादाद में बहुत ज्यादा है, इसलिए एक क्षण के लिए उसे रास्ता मत दो। चलाते जाओ, चलाते जाओ ! उस वक्त तक चलाते जाओ जब तक गोला-बारूद खत्म न हो जाए। चौकी नम्बर एक कभी फतह नहीं होगी।"

सुबह के वक्त अचानक गोलियों की बाढ़ बन्द हो गई और चारों ओर एक दर्दनाक सन्नाटा छा गया।

कुछ क्षणों की इस निस्तब्धता में हवलदार ठाकुरसिंह ने मुड़कर अपने साथियों की तरफ देखा।

चौकी नम्बर एक की हिफाजत करनेवाले सब फौजी मरे पड़े थे। मशीनगनें ठंडी थीं, मार्टर खामोश। शेरखां का सर एक गड्ढे में औंधा रखा था और उसके काले-काले घुंघराले बाल धीरे-धीरे हवा में उड़ रहे थे। आसाराम का एक हाथ मार्टर पर था दूसरा टेलीफोन पर और उसके पेट से खून बह-बह जमीन पर जम गया था। सुखचैनसिंह का मुंह यूं खुला था जैसे उसे हिचकी आनेवाली हो। शायद मरते समय उसने अपनी मां को याद किया था। उसके पास मेजर हजारासिंह जमीन पर चित लेटा था। गोली उसकी कनपटी को छेदकर दिमाग के दूसरी तरफ निकल गई थी और वह

बड़े इतमीनान से अपनी जमी हुई आंखों से खुले आसमान की ओर ताक रहा था।

हवलदार ठाकुरसिंह ने अपने चारों ओर निगाह डालकर देखा और चारों ओर उसे अपने साथियों की लाशें घूरती हुई मिलीं। इस चौकी पर वह अकेला जिन्दा था और छुट्टी पर था।

अचानक ठाकुरसिंह मेजर हज़ारासिंह की लाश के सामने तनकर खड़ा हो गया और बोला, "हवलदार ठाकुरसिंह, अटेन-शन!" उसने अपने-आपसे कहा और फिर खुद ही अटेन-शन हो गया।

"सैल्यूट!" उसने अपने-आपको हुक्म दिया और मेजर की लाश को सैल्यूट किया। फिर वह स्वर्गीय मेजर की तरह कड़ककर बोला :

"हवलदार ठाकुरसिंह, आज से तुम्हारी छुट्टी रद्द की जाती है और तुमको इस चौकी का आफिसर कमांडिंग मुकर्रर किया जाता है। आज से इस चौकी की रक्षा तुम्हारे जिम्मे है। अबाउट-टर्न, डिसमिस।"

हवलदार ठाकुरसिंह ने इतना कहकर सैल्यूट मारा, अबाउट-टर्न किया और वापस अपनी मशीनगन पर बैठ गया। अपनी जेब से अपने बच्चे की तस्वीर निकालकर दाईं ओर रख ली और उस-पर एक छोटा-सा पत्थर रख दिया ताकि तस्वीर भी नज़र आती रहे और हवा के झोंके से उड़ भी न सके। फिर उसने अपनी मशीन-गन को दिशा मोड़ते हुए नीचे घाटियों की ओर देखा जहां सैकड़ों चीनी सिपाही हाथ में बन्दूकें लिए उसकी चौकी की ओर बढ़ते चले आ रहे थे। वे लोग संख्या में बहुत ज्यादा थे और उसके पास गोला-बारूद बहुत कम रह गया था।

"उन्हें और पास आने दो, हवलदार ठाकुरसिंह, गोला-बारूद बरबाद न करो।" ठाकुरसिंह ने अपने-आपसे कहा और मशीनगन को मजबूती से थामकर इन्तज़ार करने लगा।

* * *

के बाद और कई दर्जन

सिपाहियों को खोने के बाद जब चीनी सिपाही चौकी नम्ब
पर पहुंचे तो उन्हें अपने चारों ओर मुर्दे ही मुर्दे मिले। म
का आखिरी राउंड भी खत्म चुका था और हवलदार ठा
अपनी मशीनगन पर मुर्दा पड़ा था। उसकी दोनों टांगें गु
दोनों हाथ फैले हुए थे और उसके चेहरे पर एक विचित्र मुस
थी। हमलावरों का अफसर देर तक उसे घूरता रहा, म
मुस्कराहट उसकी समझ में बिलकुल नहीं आई। कोई भी
मरते समय कैसे मुस्करा सकता है ? और फिर यह मुस्करा
अजीब तरह की थी। मीठी भी और कड़वी भी, व्यथापूर्ण
उपहासपूर्ण भी। ज्यों-ज्यों वह उस मुस्कराहट को देखता
था, उसे महसूस होता जाता था जैसे यह मुस्कराहट उसका
उड़ा रही है। उसने गुस्से में आकर ठाकुरसिंह की पसली
की एक ठोकर मारी।

हवलदार ठाकुरसिंह लुढ़ककर अपने बच्चे की तस्वीर
गिरा जैसे उसने अपने बच्चे की तस्वीर को अपनी रक्षा में
हो। मगर उसका चेहरा अब भी चीनी अफसर के सामने
बदस्तूर मुस्करा रहा था।

ठाकुरसिंह मुर्दा था; मगर उसकी मुस्कराहट जिन्दा
हवा में एक झंडे की तरह लहरा रही थी।

चीनी अफसर ने झुंझलाकर जेब से पिस्तौल निका
लगातार कई गोलियां ठाकुरसिंह के सीने में दाग दीं। बहुत
सिपाही मुंह उठाकर आश्चर्य से अपने अफसर का चेहर
लगे। फिर उनकी निगाहें पलटकर मुर्दा हिंदुस्तानी सिपाही
पर चली गईं, जहां वह मुस्कराहट उसी तरह जिन्दा थी;
तुम एक आदमी को मार सकते हो, लेकिन इंसान की मु
पर आज तक किसने विजय पाई है !

६

चाबुक

वह अमीर था, खूबसूरत था, खूबसूरत औरतों पर जान देता था। शायरी का आशिक था। ललित कलाओं का पुजारी था। राजनीतिज्ञों का सरपरस्त था।

उसकी बादशाहत बहुत बड़ी थी। वह सीमेंट का बादशाह था, कोयले का बादशाह था, लोहे का बादशाह था और मैंगनीज़ का बादशाह था और अब रेयान का बादशाह होने जा रहा था। सरकार ने उसकी रेयान की मिल के लिए साढ़े तीन करोड़ रुपये का फॉरेन एक्सचेंज मंजूर किया था और जब कोलसार में उसकी नई रेयान की मिल खड़ी हो जाएगी, वह एशिया में रेयान का सबसे बड़ा प्रोड्यूसर कहलाएगा—रेयान का बादशाह।

उसकी बीवी के पास दस करोड़ रुपये का ज़ेवर था। उसके कुत्ते हर साल गाड़ी बदलते थे। उसके दरबार में कई हुकूमतों के वज़ीर हाज़िर होते थे, अपने बेटों, भाजों, भतीजों की दरख्वास्त लेकर; और वह सब वज़ीरों की दरख्वास्त सुनता था और उनके बेटों, भांजों, भतीजों को अपनी मिलों में शानदार नौकरियां देता था। किसीको डेढ़ हज़ार, किसीको दो हज़ार, किसीको चार हज़ार। उसके कलम के एक दस्तख़त से सैकड़ों की तक़दीरें बदल जाती थीं।

सुनते हैं उसके मुल्क के लोग सोने को बहुत चाहते थे। इस-लिए वह अपने देश के लोगों की इच्छा पूरी करने के लिए कुवैत और फ़ारस की खाड़ी के अमीर देशों में चालीस के भाव सोना

सिपाहियों को खोने के बाद जब चीनी सिपाही चौकी नम्बर एक पर पहुंचे तो उन्हें अपने साथी और मुर्दे ही मुर्दे मिले। गोलियों का आखिरी बारूद भी खत्म हो चुका था और हवलदार ठाकुरसिंह अपनी मशीनगन पर मुर्दा पड़ा था। उसकी दोनों टांगें खुली थीं, दोनों हाथ फैले हुए थे और उसके चेहरे पर एक विचित्र मुस्कराहट थी। हमलावरों का अफसर देर तक उसे घूरता रहा, मगर यह मुस्कराहट उसकी समझ में बिलकुल नहीं आई। कोई भी आदमी मरते समय कैसे मुस्करा सकता है? और फिर यह मुस्कराहट कुछ अजीब तरह की थी। मीठी भी और कड़वी भी, व्यथापूर्ण भी और उपहासपूर्ण भी। ज्यों-ज्यों वह उस मुस्कराहट को देखता जाता था, उसे महसूस होता जाता था जैसे यह मुस्कराहट उसका मजाक उड़ा रही है। उसने गुस्से में आकर ठाकुरसिंह की पसली में जोर की एक ठोकर मारी।

हवलदार ठाकुरसिंह लुढ़ककर अपने बच्चे की तस्वीर पर जा गिरा जैसे उसने अपने बच्चे की तस्वीर को अपनी रक्षा में ले लिया हो। मगर उसका चेहरा अब भी चीनी अफसर के सामने था और बदस्तूर मुस्करा रहा था।

ठाकुरसिंह मुर्दा था; मगर उसकी मुस्काराहट जिन्दा थी और हवा में एक झंडे की तरह लहरा रही थी।

चीनी अफसर ने झुंझलाकर जेब से पिस्तौल निकाला और लगातार कई गोलियां ठाकुरसिंह के सीने में दाग दीं। बहुत-से चीनी सिपाही मुंह उठाकर आश्चर्य से अपने अफसर का चेहरा देखने लगे। फिर उनकी निगाहें पलटकर मुर्दा हिंदुस्तानी सिपाही के चेहरे पर चली गईं, जहां वह मुस्कराहट उसी तरह जिन्दा थी; क्योंकि तुम एक आदमी को मार सकते हो, लेकिन इंसान की मुस्कराहट पर आज तक किसने विजय पाई है!

६
चाबुक

वह अमीर था, खूबसूरत था, खूबसूरत औरतों पर जान देता था। शायरी का आशिक था। ललित कलाओं का पुजारी था। राजनीतिज्ञों का सरपरस्त था।

उसकी बादशाहत बहुत बड़ी थी। वह सीमेंट का बादशाह था, कोयले का बादशाह था, लोहे का बादशाह था और मैंगनीज का बादशाह था और अब रेयान का बादशाह होने जा रहा था। सरकार ने उसकी रेयान की मिल के लिए साढ़े तीन करोड़ रुपये का फॉरिन एक्सचेंज मंजूर किया था और जब कोलमार में उसकी नई रेयान की मिल खड़ी हो जाएगी, वह एशिया में रेयान का सबसे बड़ा प्रोड्यूसर कहलाएगा—रेयान का बादशाह।

उसकी बीवी के पास दस करोड़ रुपये का जेवर था। उसके कुत्ते हर साल गाड़ी बदलते थे। उसके दरबार में कई हुकूमतों के वजीर हाजिर होते थे, अपने बेटों, भांजों, भतीजों की दरख्वास्त लेकर; और वह सब वजीरों की दरख्वास्त सुनता था और उनके बेटों, भांजों, भतीजों को अपनी मिलों में शानदार नौकरियां देता था। किसीको डेढ़ हजार, किसीको दो हजार, किसीको चार हजार। उसके कलम के एक दस्तखत से सैकड़ों की तकदीरें बदल जाती थीं।

सुनते हैं उसके मुल्क के लोग सोने को बहुत चाहते थे। इस-लिए वह अपने देश के लोगों की इच्छा पूरी करने के लिए कुवैत और फारस की खाड़ी के अमीर देशों में चालीस के भाव सोना

[illegible] था और [illegible] सोने के हिसाब से अपने देश में बेच देता था। पिछले दस सालों में उसने एक अरब का सोना इकट्ठा किया और पचास करोड़ रुपये का मुनाफा कमा लिया, और जो बाकी पचास करोड़ रुपये कमाये थे, कानून उसे छू भी नहीं सकता था।

वह बिलकुल निष्कपट, बेहद उदार, दरियादिल इन्सान था और अपने दोस्तों में बेहद लोकप्रिय था। उसने अपने हर दोस्त की मुश्किल वक्त में मदद की थी और दिल खोलकर मदद की थी। उसकी उदारता, दरियादिली और दान-पात्रों के अफसाने सारे मुल्क में मशहूर थे। उसने हर मजहब के लिए उपासनागृह बनवाए थे, विधवाश्रम और अनाथालय खोले थे। अस्पताल और विश्वविद्यालय बनवाए थे। वह साहित्यकारों को इनाम बांटता था, चित्रकारों को अपने खर्च पर पेरिस भेजता था और सम्पादकों के लिए अखबार चलाता था और स्वर्गवासी कवियों की जयन्ती मनाता था। ऐसे तमाम मौकों पर उसके भाषण और चित्र देश के बहुत-से अखबारों में पहले पृष्ठ पर छपते थे क्योंकि वह पहले पृष्ठ का आदमी था।

वह मुहब्बत करनेवाला इन्सान था। उसे जिन्दगी से और जिंदगी की तमाम खूबसूरत चीजों से मुहब्बत थी। दोस्त, किताबें, फूल, औरतें, कारें, कुत्ते, फर्नीचर, कपड़े हर चीज अव्वल दर्जे की होनी चाहिए यह उसका विश्वास था और वह अपने हर विश्वास को सत्य में बदल लेता था, क्योंकि वह अपने हर विश्वास की कीमत अदा कर सकता था। वह उन लोगों में से न था जो अपने विश्वासों की पूर्ति के लिए खाली हाथ प्रार्थना के लिए उठाते हैं। उसे अच्छी तरह से मालूम था कि प्रार्थना करने से भगवान तो मिल सकता है लेकिन खूबसूरत औरत नहीं मिल सकती। इसलिए वह प्रार्थना करने के बजाय कीमत अदा करता था। उसे अच्छी तरह से मालूम था कि चीजों की कीमत होती है, कीमत से मुनाफा निकलता है, मुनाफे से ताकत हासिल होती है, ताकत से मेहनत झुकती है, मेहनत के झुकने से फिर मुनाफा हासिल होता है, मुनाफे से फिर ताकत

मिलती है। यह एक गोल चक्कर था जिसके अन्दर उसकी हैसियत एक सूरज की थी और सूरज को कोई जीत नहीं सकता।

मगर वह एक दयालु सूरज था और अपने दुश्मनों को जलाकर खाक कर देने के बजाय उन्हें अपनी शक्ति और आकर्षण से अपने वश में कर लेता था। इस तरह कि वे फिर जिन्दगी-भर उसके गिर्द घूमते रहते थे। मिसाल के तौर पर एक दिन उसने अपने सबसे प्रतिभाशाली दुश्मन राही को अपने घर बुलाया और उसने पूछा :

"तुम मेरे खिलाफ क्यों लिखते हो ?"

"क्योंकि मैं तुम्हारा दुश्मन हूं।"

"मेरी दुश्मनी से तुम्हें क्या मिला ?"

"मुझे फाके मिले, फटे चीथड़े मिले, गालियां मिलीं और तनहाई मिली [illegible]

"मैं तुम्हारी तक़दीर बदल सकता हूं।"

"मुझे मालूम है।"

"मैं [illegible]

दूंगा, तुम्हें

चीज़ खरी.

"मुझे मालूम है," राही ने जवाब दिया, "लेकिन मैं अपनी तक़दीर बदलना नहीं चाहता। जिन्दगी-भर तुम्हारे खिलाफ लिखता रहूंगा।"

"क्यों ?"

"क्योंकि तुम सूरज हो, और मुझे किसी नक्षत्र की तरह तुम्हारे चारों तरफ चक्कर लगाना पसन्द नहीं है।"

"तुम्हें क्या पसन्द है ?"

"मुझे शख्सी (व्यक्तिगत) आज़ादी पसन्द है।"

"मगर शख्सी आज़ादी है किधर?" उसने खफा होकर राही से पूछा, "मैंने तो बहुत ढूंढा अपनी सल्तनत में इस शख्सी आज़ादी

है, [illegible] ने अपनी आजादी बेची न [illegible], अलबत्ता अपनी आजादी के बदले में [illegible] बहुत-से नोट लिये। वह एक [illegible] है और [illegible] कलम की जिस-किस से दो सुर्खियां कहीं [illegible] है और बदले में एक तोला सोना पाता है। अब एक नौकर से पूछो [illegible] दिन की आजादी खरीद सकते हो? वह एक [illegible] है जिसने अपनी जिन्दगी पचहत्तर रुपये से शुरू की थी। पच्चीस बरस की नौकरी के बाद वह आज पौने दो सौ पाता है और चार [illegible] आजादी के बदले में उसके सर पर अब एक बाल भी नहीं रहा है। वह एक हलवाई है, बनारसीदास अग्रवाल, जलेबियां तलते-तलते और भट्ठी की आंच में आंखें मलते-मलते उसका मुंह काला हो गया है और वह उसकी धोती की तरह मैली हो गई है और तीस साल की सस्ती आजादी के बाद उसकी पास-बुक में सिर्फ पौने दो हजार रुपये जमा हैं जिससे उसके गठिया का भी सही इलाज नहीं हो सकता। और वह मेरा यार कमलाकर है, टैक्सी ड्राइवर, सस्ती आजादी का रसिया, जिस दिन दस रुपये कमा लेता है, अपना धंधा बन्द करके दो रुपये का ठर्रा पी लेता है और एक रुपये की भुनी हुई कलेजी खाकर अपनी बीवी का कलेजा खाने को तैयार हो जाता है। और एक तुम हो, मिस्टर राही, सुबह से रात तक एक ही कुर्सी से बंधे-बंधे गधे की तरह काम करते हो। आखिर तुम्हारी सस्ती आजादी सुबह आठ बजे से रात के सात बजे तक एक लकड़ी के तीन वर्गफुट के तख्ते तक क्यों सीमित हो जाती है? मुद्दतें गुजरीं, तुमने कभी खुले आकाश में उड़ते हुए बादलों को नहीं देखा। जमीन से कोंपल को उगते हुए नहीं देखा। समुद्र में खूबसूरत रंगवाली मछलियों को तैरते नहीं देखा और तू समझता है तू आजाद है? अरे, गुलाम-इब्ने-गुलाम (गुलाम की औलाद), तेरे हाथ में जो फाउंटेनपेन है, वह मेरी फैक्टरी से आया है। ये सूती कपड़े जो तू अपने जिस्म पर पहने हुए है, ये मेरे कारखाने से आए हैं। यह मेरा सीमेण्ट है जो तेरी खोली में लगा है। यह मेरी चीनी है जो तू हर रोज अपनी चाय में घोलकर पीता है, और चाय भी मेरे ही बागों से आती है। यह अखबार जो तू सुबह

खोलकर पढ़ता है, कोयला जो तू अपने चूल्हे में जलाता है, लोहे के ब्लेड जिनमें तू अपनी दाढ़ी मूड़ता है और शख्सी आज़ादी के खुश-रंग वायदे जिनसे तू हर रोज़ अपनी अक्ल की हजामत करता है, ये सब मेरे ही कारखाने से ढलकर आए हैं। अरे बुद्धू, मगर तूने कभी तो सोचा होता, तेरे घर में आखिर कौन-सी चीज़ तेरी है ? स्टील के बरतन ? जूट की बोरी ? दवा की शीशी ? किताबों की अल-मारी ? अरे अहमक, तेरी सारी ज़िंदगी मेरे कारखाने के पट्टे पर घूम रही है और तू समझता है तू आज़ाद है। बेवकूफ़, तू तो जिस दिन मरेगा उस दिन तेरा कफ़न भी मेरे ही कारखाने से आएगा। इसलिए अहमक न बन, हकीकत को समझ और अपने बादशाह को सलाम कर।"

यकायक राही की आंखों से पट्टी उतर गई और सचाई नंगे रूप में उसके सामने आ गई। उसने झुककर बादशाह को सलाम किया और उसके सामने झुककर अदब से खड़ा हो गया। बादशाह ने राही को अपने सबसे बड़े अखबार का सबसे बड़ा एडीटर बना दिया और राही ने बादशाह से पूछा, "सबसे पहला एडीटोरियल किस सिलसिले में होगा ?"

"शख्सी आज़ादी की तारीफ़ में," बादशाह ने मुस्कराकर कहा, "क्योंकि मुझे अहमक चाहिए, बहुत-से, और शख्सी आज़ादी का पहला करतब यह है कि किस तरह ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को ज़्यादा से ज़्यादा अर्से तक बेवकूफ़ बनाया जा सकता है।"

गर्ज़ कि ज़हानत (समझ-बूझ) में, शराफ़त में, दौलत में, ताकत में उससे कोई टक्कर लेनेवाला न था। वह हर लिहाज़ से एक मुकम्मल इंसान था और उसमें कोई खामी न थी सिवाय इसके कि वह अपनी औरतों को पीटता था।

यह उसकी एक अजीब आदत थी। जिन औरतों से वह मुहब्बत करता था उन्हें पीटता भी था और जिस औरत को जितना ज़्यादा वह चाहता था उतना ही ज़्यादा उसे पीटता भी था। यह एक अजीब आदत थी कि वह आदमी जो अपनी ज़िंदगी में एक

खरगोश को मारने में भी हिचकता हो, किस तरह एक औरत पर हाथ उठा सकता है। मगर सच्चाई यही थी और वह इस सच्चाई के लिए कोई वजह न बता सकता था।

उसे अपनी आदत पसन्द नहीं थी और इस आदत को दूर करने के लिए उसने बड़े-बड़े डाक्टरों से सलाह ली, मनोविज्ञान के बड़े-बड़े विशेषज्ञों को बुलाकर उनसे इलाज कराया; मगर कोई उसकी इस आदत को दूर न कर सका, न इस आदत का कोई मनोवैज्ञानिक कारण बता सका और उसकी यह आदत किसी डाक्टर के इलाज से दूर न हो सकी।

उसके सोने के कमरे में एक लम्बी चाबुक थी। वह हमेशा उसके बिस्तर की तह के नीचे पड़ी रहती थी। पहले तो वह लड़की को दांतों से काटता था, फिर नाखूनों से उसकी खाल पर खरोंचे डालता था, और जब उससे भी उसकी तसल्ली नहीं होती तो उसकी पीठ नंगी करके उसपर चाबुक मारता था, और ज्यों-ज्यों दर्द से लड़की बिलबिलाती, वह जोर-जोर से चाबुक मारता था और जोर-जोर से कहकहे लगाकर हंसता था। यहां तक कि लड़की दर्द के मारे बेहोश हो जाती और लड़की के बेहोश होते ही जैसे उसे खुद होश आ जाता और वह पछतावे और इंसानी हमदर्दी और आत्मग्लानि की भावना से मजबूर होकर अफसोस से हाथ मलने लगता। बेहोश लड़की को अपने दोनों हाथों में उठाकर बिस्तर पर लिटा देता। उसके जख्मों और खरोंचों पर अपने होंठ रखकर उन्हें बार-बार चूमता और लड़की को प्यारे-प्यारे नामों से बुलाता। टेलीफोन करके डाक्टर को बुलाता, दिन-रात उसकी दवा-दारू में मसरूफ रहता; तीमारदारी करते-करते उसे ठीक कर लेता और फिर पन्द्रह-बीस रोज़, महीने दो महीने, कभी-कभी तीन-चार महीने खैरियत से गुज़र जाते, यहां तक कि एक दिन फिर उसपर वही भूत सवार हो जाता और वह अपनी प्रेम की तीव्र भावना से प्रभावित होकर फिर वही चाबुक निकाल लेता।

आम तौर पर लड़कियां पहली मार के बाद ही भाग जाती थीं, मगर कुछ ढीठ ऐसी भी थीं जो तीसरी या चौथी मार के बाद

भागी थी। लेकिन वह एक उदार तथा दरियादिल इंसान था, इसलिए वह अपनी हर भागी हुई माशूका को माफ कर देता था। अपनी मुहब्बत के दौरान में और संबंध टूट जाने के बाद वह उन लड़कियों को इनाम-इकराम से इस कदर नवाजता था कि आज तक किसी लड़की ने उसके खिलाफ अदालत में जाने की इच्छा प्रकट न की थी। मुहब्बत के शुरू में वह लड़की को एक उम्दा गाड़ी खरीदकर देता था, एक फ्लैट खरीदकर देता था, पचास हजार रुपया उसके बैंक में रख देता था और जिस दिन चाबुक मार-मारकर उसे बेहाल कर देता था, उस दिन अपनी शर्मिन्दगी जाहिर करते हुए वह सीधा तीन लाख रुपये का चेक काटकर उसे दे देता था।

जिन लड़कियों ने उससे तीन-चार बार मार खाई थी, उन्होंने एक साल ही में दस-बारह लाख रुपया इकट्ठा कर लिया था। हालांकि करोड़ों आदमियों को जिंदगी-भर यह रकम मयस्सर नहीं होती। इसलिए ऊंची सोसायटी में ऐसी लड़कियों को बड़ी इज्जत से देखा जाता था और ज्योंही कोई लड़की किसी फैशनेबल सजे हुए ड्राइंग-रूम में उसके साथ दाखिल होती और लोग उसके चेहरे पर नाखूनों के खरोंचे देखते, उसकी गरदन और बाहों पर चाबुक की मार के नीचे धब्बे देखते या जख्मों पर सफेद-सफेद पट्टियां बंधी देखते फौरन समझ जाते कि आज इस लड़की को तीन लाख का चेक मिला है और कुछ अर्से के बाद लड़की भी इस फख्र से अपने जख्मों के निशान दिखाने लगती थी जैसे वह किसी लड़ाई में जीते हुए बहादुरी के तमगे दिखा रही हो।

सम्बन्ध-विच्छेद के बाद ऐसी लड़कियों की शादी भी जल्द हो जाती थी, क्योंकि ऐसी लड़कियां जो खूबसूरत हों और जिन्दगी-भर की गुजर-बसर का सामान भी अपने साथ लाएं, आजकल आसानी से कहां हाथ लगती हैं? इसलिए उसे अपना शौक पूरा करने की खातिर अच्छी से अच्छी और उम्दा से उम्दा लड़की चुनने में कभी कोई दिक्कत पेश नहीं आई और पन्द्रह-बीस लड़कियों को चाबुक मारने के बाद वह यह भी भूल गया कि उसकी यह आदत किसी तरह गैर-मामूली या अस्वाभाविक है। धीरे-धीरे उसे

महसूस होने लगा कि जो कुछ वह करता है वह न सिर्फ उसके अपने स्वभाव के मुताबिक है बल्कि औरत के स्वभाव के मुताबिक भी है, और कुदरत की फितरत (प्रकृति) का तकाजा भी यही है।

धीरे-धीरे उसे इस हरकत में बेहद मजा आने लगा और वह अपनी लज्जत (सुख) की खातिर जल्दी-जल्दी लड़कियां बदलने लगा जिससे उसकी इज्जत ऊंची सोसायटी में और बढ़ गई और लोग यह समझने लगे कि वह न सिर्फ हसीन और कबूल-सूरत लड़कियों के भविष्य का सबसे अच्छा संरक्षक है बल्कि ऊंचे खानदान के, मगर नादान कुमारों को रोजी दिलानेवाला भी है और उसका ऐब उसकी खूबियों में शुमार होने लगा।

धीरे-धीरे वह लड़कियों की गिनती भूल गया। उसके चेहरे भी उसे याद न रहे। अब वह अगर किसी लड़की से मुहब्बत करता था तो सबसे पहले उसकी खाल देखता था। खाल जितनी साफ, बेदाग, उजली, नर्म, मुलायम और गुदाज (मांसल) होती थी, उसकी मुहब्बत उतनी ही शिद्दत से उभरती थी। खूबसूरत जिल्द को देखते ही उसके नाखून बेताब होने लगते, अन्दर ही अन्दर धीरे-धीरे वह दांत किटकिटाने लगता और उसके मन में विचार उठता कि जब इस हसीन और नाजुक जिल्द पर चाबुक का पहला वार पड़ेगा, तो जिल्द पर किस तेजी से वह लाल दाग उभरेगा जिसके ख्याल ही से उसकी आत्मा फड़क उठती थी।

रजनी को भी उसने इसी वजह से चाहा था और बड़ी शिद्दत से चाहा था, क्योंकि रजनी की जिल्द बेहद बेऐब, पूरी तरह मुलायम, तन्दुरुस्त और बेदाग थी। उसके शरीर पर कहीं कोई दाग, धब्बा या चित्ती न थी। दूधिया रंग की साफ जिल्द को जरा-सा दबाने से ऐसा महसूस होता था मानो बालाई (मलाई) की कई तहें उसके अंदर दबाई गई हैं और दबाव हटाने से नाजुक जिल्द पर फौरन एक गुलाबी धब्बा-सा उभर आता था। वह रजनी को देखकर पागल हो गया था और हर कीमत पर उसे हासिल करने के लिए तैयार हो गया था।

रजनी भी थोड़ी-सी आनाकानी के बाद तैयार हो गई, क्योंकि वह एकदम बेहद बेवकूफ लड़की थी। पहले तो उसकी समझ में कुछ न आया कि उसका शौहर तीन लाख रुपयों की खातिर क्यों उसे चाबुक की मार खाने पर मजबूर कर रहा है।

"तीन लाख रुपये लेकर हम क्या करेंगे!"

"हम एक अच्छा फ्लैट लेंगे।"

"नहीं!" रजनी ने बड़ी मजबूती से सर हिलाकर कहा, "हम दो मियां-बीवी को यह दो कमरों का फ्लैट काफी है।"

"मैं तुम्हारे लिए एक शानदार गाड़ी खरीद दूंगा, जिसमें बैठकर तुम अपनी सहेलियों से मिलने जा सकोगी।"

"मेरी सभी सहेलियां इसी मुहल्ले में रहती हैं। मुझे उनके घर तक जाने के लिए किसी गाड़ी की जरूरत नहीं।"

"मैं तुम्हें कश्मीर की सैर कराऊंगा।"

"सैर तो मैं यहां जुहू पर भी कर लेती हूं।"

"कश्मीर बहुत खूबसूरत है।"

"समन्दर भी बहुत खूबसूरत है।"

"मैं तुम्हें यूरोप दिखाऊंगा।"

"यूरोप देखकर क्या करूंगी? मैं अपने घर में बहुत खुश हूं।"

"तुम तो अहमक हो।" उसके शौहर ने झुंझलाकर कहा, "बात को समझती नहीं हो। सुनो, जब तुम्हारे पास एक खूबसूरत फ्लैट होगा, एक खूबसूरत गाड़ी होगी, कीमती जेवर-कपड़े होंगे, तो तुम्हारी सहेली तुम्हें देख-देखकर जलेंगी।"

"किसीको जलाने की खातिर मैं चाबुक की मार क्यों खाऊं?" रजनी ने बड़ी मासूमियत से पूछा।

"क्योंकि मुझे तीन लाख रुपये चाहिए," उसके शौहर ने बड़ी सख्ती से एक-एक शब्द पर जोर देकर कहा।

"क्यों चाहिए?" रजनी ने पूछा, "हमारे पास वह सब कुछ है जो हमें चाहिए। तुम मुझसे प्यार करते हो मैं तुमसे प्यार करती हूं। तुम महीने में तीन सौ कमाकर लाते हो, मैं तीन सौ में

कहा, "उसकी नज़र भर गया मेरी हूं, फिर और क्या चाहिए ?"
रजनी ने बड़ी हैरत से अपने शौहर की ओर देखा।

"मुझे और ज्यादा चाहिए, ज्यादा अलग बिज़नेस चाहिए। मैं तरक्की करना चाहता हूं, आगे बढ़ना चाहता हूं, मैं अपनी मौजूदा ज़िन्दगी से खुश नहीं हूं। मैं बहुत बड़ी खुशी चाहता हूं।" वह चिल्लाकर बोला।

"इससे बढ़कर और खुशी क्या होगी ?" रजनी ने सहमकर कहा, मगर वह अपने शौहर के कड़े तेवर देखकर शौहर की बात पर अमल करने के लिए राज़ी हो गई, क्योंकि वह बड़ी अहमक और बेवकूफ लड़की थी।

और अब रजनी उसकी ख्वाबगाह में थी और एक ऐसे महीन शफ्फाफ (चमकीले) लिबास में थी जिससे उसका बदन एक ऐसी नाजुक सुराही की तरह नजर आता था जिसमें गुलाबी भरी हो।

"तुम्हारी जिल्द बहुत खूबसूरत है," बादशाह ने रजनी की तारीफ करते हुए कहा, "ऐसी खूबसूरत जिल्द अगर मेरे रेयान के कारखाने में बुनी जा सकती, तो मैं आज दुनिया का सबसे अमीर आदमी होता।"

वह हंसी बोली, "मेरी मां की जिल्द मुझसे भी ज्यादा खूबसूरत थी।

"तुम्हारी मां कहां है ?"

"वह तो मर चुकी है।" रजनी ने धीरे से कहा और मां की याद से उसकी आंखों से आंसू छलकने लगे।

बादशाह को इस बेवकूफ लड़की की अदा बहुत पसन्द आई। उसने एक बिल्लौरी जाम भरकर उसके सामने रखा।

"यह क्या है ?" रजनी ने पूछा।

"शराब है।"

रजनी ने हिचकिचाकर पूछा, "इसमें कैसी बुरी बास आती है ?"

"पीकर देखो, रेशम के परों पर उड़ने लगोगी।"

तीसरे जाम के बाद रजनी की आंखों में नशा उतर आया और वह ख्वाबगाह के रेशमी बिस्तर पर पट लेट गई। गरदन के खम से कमर की फिसलवां ढलान तक बादशाह की निगाहें उतरती चली गईं और बेताब होकर उसने चाबुक निकाल लिया और तड़ाक से रजनी की पीठ पर मार दिया।

"हाय, मैं मर गई !" रजनी बिलबिलाकर बिस्तर से उठ बैठी और दर्द के मारे कराहने लगी।

"लेट जाओ, लेट जाओ !" बादशाह ने हुक्म दिया।

"नहीं !" रजनी इन्कार में सर हिलाकर बोली।

"तीन लाख रुपये दूंगा।"

"नहीं चाहिए तेरे तीन लाख।"

रजनी की पीठ पर एक लाल निशान सांप की तरह बल खाता हुआ उभर रहा था। बादशाह उसे देखकर दीवाना हो गया। उसने अपना चाबुक उठाया।

"नहीं, नहीं !" रजनी ज़ोर से चिल्लाई।

"चार लाख दूंगा।"

"नहीं, नहीं।"

"पांच लाख दूंगा।"

"हरगिज़ नहीं, हरगिज़ नहीं," रजनी वहशत से पीछे पलटी। बेताब बादशाह ने उसे धक्का देकर बिस्तर पर गिराना चाहा, मगर रजनी ने तेज़ी से घूमकर वार खाली कर दिया और जल्दी से चाबुक को बादशाह के हाथों छीन लिया। बादशाह चाबुक छीनने के लिए आगे बढ़ा तो रजनी ने हाथ ऊंचा करके उसके मुंह पर ज़ोर से चाबुक मारा।

"हाय मैं मर गया !" बादशाह ज़ोर से चिल्लाया।

रजनी ने दूसरी बार चाबुक से वार किया और फिर दायें, बायें, ऊपर, नीचे तड़ाक-तड़ाक बादशाह के शरीर पर चाबुक मारती गई और चाबुक मार-मारकर उसने बादशाह का भुरकस निकाल दिया। बादशाह दया की भीख मांगता रहा। मगर रजनी के सर पर भूत सवार हो चुका था। उसने उसकी कोई फरियाद

नहीं सुनी, बल्कि रहम की दरख्वास्त पर वह उसे और जोर-जोर से चाबुक मारती रही। मार-मारकर उसने बादशाह को ख्वाबगाह के फर्श पर बिछा दिया। बादशाह खून में लथपथ फर्श पर तड़प-तड़पकर बेहोश हो गया। रजनी ने ख्वाबगाह का दरवाजा बड़े जोर से खोल दिया और गुस्से से फुंफकारती हुई चाबुक हाथ में लिए उसके महल से बाहर निकल गई।

बादशाह अब भी बादशाह है। वह अब भी करोड़ों रुपये कमाता है। मगर अब उसकी चाबुक मारने की आदत छूट चुकी है। अब हर घड़ी उसपर अजीब डर सवार रहता है। अब वह हर वक्त अपनी जान की सलामती के लिए अपने इर्द-गिर्द कई बॉडी-गार्ड रखता है, क्योंकि उसे मालूम है कि अब चाबुक किसी दूसरे के हाथ में है।

७

बड़ा आदमी

रग्घू भाई के इर्द-गिर्द हर चीज़ बड़ी थी। न सिर्फ़ उसका शरीर बड़ा था, उसका दिल भी बड़ा था, उसकी अक्ल भी बड़ी थी, उसका बैंक-बैलेंस भी बड़ा था। (बड़े बैंक-बैलेंस का बड़ी अक्ल से बड़ा गहरा सम्बन्ध होता है, यह सब जानते हैं।) वह बड़े-बड़े डिस्ट्रीब्यूटरों से बिज़नेस करता था। बड़ी-बड़ी फ़िल्में बनाता था। बड़े-बड़े स्टार अपनी फ़िल्मों में लेता और रात को व्हिस्की के बड़े पैग पीकर सो जाता था। रग्घू भाई कोई मामूली आदमी नहीं था। वह अपने छः फुट के लम्बे, मोटे, बड़े शरीर से देवदार मालूम होता था। वह एक जहाज़ की तरह चलता था, समन्दर की तरह हँसता था और लाउडस्पीकर की तरह बोलता था। वह एक बड़ा आदमी था।

एक दिन उसने मुझे अपने कमरे में बुलाया और बोला, "मुंशीजी!"

"जी," मैंने कहा।

"मुझे एक बड़ी कहानी चाहिए," वह बोला।

"दास्तान की किस्मों की तरह लम्बी?" मैंने पूछा।

"लम्बी नहीं, बड़ी!"

मैंने कहा, "बड़ी कहानी तो बड़े लेखक (राइटर) से बनती है।"

"लेखक की क्या ज़रूरत है?" वह ज़ोर से हँसकर बोला, "लेखक तो बाज़ार में दस रुपये दर्जन मिलता है। मैं बड़ी फ़िल्म बनाना चाहता हूँ, तुम वह बड़ी कहानी बोलना है। तुम भी मामूली लेखक हो

मुसीबतें।"

"क्या इन्साफ (निर्णय) फरमाया आपने," मैंने सर झुका-कर स्वीकार किया।

"इन्साफ और सफलता, दोनों को हमने नई फिल्म के लिए 'साइन' कर लिया है। अब हम प्रेसवाला और साहित्य वालों का सामना भी कर जाएगा।"

"चार बड़ी हीरोइनें?" मैंने हैरत से पूछा।

"हाँ, हम अपनी नई पिक्चर में चार बड़ी हीरोइनें ले रहा है, चार बड़े हीरो, हैण्डसम हीरो। अंदलीब कुमार, राज काफूर, ब्रजेन्द्र कुमार और अक्षय आनन्द।"

"तो चार बड़े विलेन भी लेने पड़ेंगे आपको?" मैंने कहा। "हर हीरोइन के लिए एक विलेन की ज़रूरत होती है नहीं तो वह बेचारी मुसीबत में नहीं फंस सकती और अगर हीरोइन मुसीबत में न फंसे तो हीरो फिल्म में काम क्या करेगा?"

"मुंशीजी," रग्घू भाई मेरी तरफ गौर से देखते हुए बोले।

"जी सरकार," मैंने कहा।

"तुम एकदम बुद्धू हो," वह बोला।

"आपकी जर्रानवाज़ी (दीनदयालुता) है," मैंने आदाब करते हुए कहा।

"हम जर्रानवाज़ को विलेन नहीं लेंगे," रग्घू भाई गुस्से से बोला, "इस पिक्चर में हम किसीको विलेन नहीं लेंगे, न जर्रानवाज़ को, न प्रान को, न तिवारी को, न मुहम्मद भाई को। इस पिक्चर में हर हीरो दूसरे हीरो के लिए विलेन का काम करेगा। अंदलीब कुमार राज काफूर के लिए, राज काफूर ब्रजेन्द्र कुमार के लिए, ब्रजेन्द्र कुमार अक्षय आनन्द के लिए।"

"क्या आइडिया है! क्या आइडिया है!!" मैंने रग्घू भाई के हाथ चूमते हुए कहा, "एक हीरो दूसरे का विलेन! ऐसा आइडिया आज तक किसी फिल्म में नहीं आया। कमाल है, कमाल है! रग्घू भाई, तुमने तो हर विलेन की कमर तोड़ दी और हर राइटर का कलम तोड़ दिया।"

"मुंशीजी," रघू भाई बोला।

"जी, मालिक।"

"तुम बहुत अच्छा आदमी है। एकदम फर्स्ट-क्लास मुंशी है। हम तुमको सौ रुपया इनाम देता है," रघू भाई ने खुश होकर कहा, और जेब में सौ रुपये का नोट निकालकर मुझे अता किया। "तुम कैसा-कैसा नया आइडिया हमको देता है। इसलिए हम तुमको रखे हुए है।"

"आपकी इनायत (दया) है," मैंने सर झुकाकर और नोट को तह करके जेब में रखते हुए कहा।

"नहीं, इनायत अब हमारी नहीं है। इनायत बाई को हमने अपनी फिल्म-कम्पनी से निकाल दिया है, साली बहुत लफड़ा करती थी।"

"क्या लफड़ा करती थी?"

"बहुत रगड़ा करती थी।"

"क्या रगड़ा करती थी?"

"बहुत झगड़ा करती थी।" वह अफसोस से सिर हिलाते हुए बोला।

"क्या झगड़ा करती थी?"

"बोली, हम तुम्हारे पिक्चर के प्रीमियर पर शैफान का गरारा पहनकर जाएगा। मैं बोला, तुम शैफान का गरारा पहनकर जाएगा, तो अन्दर से नंगा नजर आएगा। वह बोली, हम अन्दर से एक ऐसा पेटीकोट पहनेगा जिसमें एक-एक हजार के नोट टके होंगे। लोगों को ऊपर से शैफान नजर आएगा, अन्दर से नोट। मैंने दरजी को बुला-कर पूछा, तो वह बोला, ऐसे पेटीकोट पर पांच लाख के नोट लगेगा। मैंने कहा, साली हम तुमको यह पेटीकोट क्यों देगा? हम पांच लाख की बिल्डिंग नहीं बांधेगा? हां, हम तुमको दस रुपये के नोट-वाला पेटीकोट जरूर बनाकर दे सकता है। उसपर भी हमारा तीन हजार रुपया लग जाएगा। मगर चलो, अपनी मरहूमा के लिए हम यह भी लगा देगा।"

"मरहूमा (मृत) नहीं महबूबा (प्रेमिका)," मैंने कहा।

"हां, हां, मालूम है कि मालूम था, एक ही बात है," रघू भाई ने लापरवाही से कहा, "हम कोई तुम्हारी तरह मुंशी नहीं हैं कि [illegible] को हाथ में पकड़कर [illegible] फिरें। इसलिए हमने व्याकरण बाई को फिल्म-कहानी से बाहर निकाल दिया है, क्योंकि [illegible] मालूम होती है।"

"बिलकुल दुरुस्त किया आपने।"

"तो तुम हमको बड़ी कहानी कब लिख दोगे, मुंशीजी?" रघू भाई ने पूछा।

"यह कहानी ब्लैक एण्ड व्हाइट में बनेगी या कलर में?" मैंने पूछा। "इसी हिसाब से कहानी सोची जाएगी," मैंने रुक-रुककर कहा।

"बड़ी कहानी कभी ब्लैक एण्ड व्हाइट में नहीं बन सकती। मैं उसको कलर में बनाऊंगा और चार कलर में," रघू भाई ने गरजकर कहा।

"चार कलर?" मैंने पूछा, "यानी लाल, पीला, नीला और हरा?"

"अहमक हो," रघू भाई गुस्से से बोला, "मैं उसको टेकनीकलर, गेवा कलर, ईस्टमैन कलर और सोवो कलर में बनाऊंगा। हर तीन हज़ार फुट के बाद कलर बदलता जाऊंगा।"

"ऐसी कहानी कोई एक राइटर कैसे लिख सकता है?" मैंने आजिज़ी से कहा, "इसके लिए राइटर भी चार से कम नहीं हो सकते।"

"तुम बोलो," रघू भाई बोला, "मैं तुमको इंडस्ट्री के चार टॉप के राइटर लाकर देता हूं। तुम नाम बोलो।"

"सुखराम वर्मा।"

"डन!" रघू भाई मेज पर हाथ मारकर बोला।

"गिरजानन्द सागर।"

"डन!"

"महेन्द्र महाराज आनन्द।"

"डन!"

"और—? —चौथा ?" मैं सोचने लगा।

रघू भाई बोला, "चौथा वह खतरए-ईमान कैसा रहेगा ?"

"खतरए-ईमान ?" मैंने घबराकर पूछा। फिर अचानक मेरी समझ में आ गया और मैं फौरन बोल उठा, "अच्छा, अच्छा, आपका मतलब अख्तर-उल-ईमान से है ?"

"अजी नाम में क्या पडा है, मुंशीजी," रघू भाई बेजार होकर बोला, "तुमको दस बार समझाया है, नाम के चक्कर मे मत पडा करो, मगर राइटर वह बहुत बडा है।"

"हां, राइटर तो वह बहुत बडा है।"

"तो उसको ले लो, डन ! डन ! !—अब बोलो कहानी कब देते हो ? मैं दस तारीख को महूरत करनेवाला हू," रघू भाई ने एलान किया।

"आज छ: तारीख है और दस को महूरत है ! चार दिन मे कहानी कैसे बनेगी ?"

"कैसे नही बनेगी ?" रघू भाई ने पूछा, "जब मैं अपनी पिक्चर मे चार हीरो, चार हीरोइनें ले रहा हू, और चार कलर मे बना रहा हू तो कहानी भी चार दिन मे बननी चाहिए। कैसे भी करो, उल्टा-सुल्टा करके मुझे चार दिन मे कहानी बनाकर दो। मैं तुम सब रैंटर लोगों को खंडाला ले चलता हू।"

"खूब," मैंने खुश होकर कहा।

"और चार बावर्ची," वह बोला।

"वाह-वाह !"

"और चारों हीरोइनों को भी।"

"सुभान-अल्लाह," मैं बोला।

"और चारों हीरो भी चलेंगे।"

"एं ?" मेरे मुह से मायूसी की चीख निकली।

"और चार-छ: छोकरी लोग को भी इधर-उधर से पकड़ लेता हूं।"

"वह किसलिए ?" मैंने पूछा।

"छोकरी लोग आजू-बाजू में रहे तो कहानी का मसाला गरमा-

[illegible] और [illegible] होता है।"

मुझे ऐसा लगा जैसे मैं अपनी नहीं, [illegible] की लाश बना रहा हूं। मगर मैंने अपनी हिम्मत पर काबू करते हुए कहा, "तो कीजिए [illegible] ।"

रघु भाई बहुत बड़ा प्रोड्यूसर था और बहुत बड़ा दिल रखता था। इसलिए उसने उन चार दिनों का बन्दोबस्त बड़े शान-दार तरीके से किया। उसने सारे हीरो के लिए एक बहुत बड़ा बंगला किराये पर लिया। सारी हीरोइनों के लिए अलग-अलग बंगला लिया। खुद अपने लिए और अपनी नई महबूबा रम्भा के लिए अलग बंगला लिया और राइटर लोग के लिए खंडाले के सबसे बड़े होटल में एनैक्सी किराये पर ले ली। यह एक बंगलानुमा इमारत थी और पहाड़ी के ऊपर एक जंगल में थी। एक ओर खड्ड था दूसरी ओर ऊंचे-ऊंचे टीले थे। तीसरी ओर होटल का नौकर-खाना था और चौथी ओर कब्रिस्तान था। गर्ज़ कि लिखने-पढ़ने के लिए यह जगह आइडियल (आदर्श) थी। राइटर लोग इस एनैक्सी में डाल दिए गए और उनके पीने के लिए रम का बन्दोबस्त भी कर दिया गया, जबकि दूसरे प्रोड्यूसर सिर्फ ठर्रा पिलाते हैं। मगर रघू भाई कोई मामूली प्रोड्यूसर न था। उसने राइटरों के लिए रम का, ऐक्टर लोगों के लिए ब्लैक एण्ड व्हाइट व्हिस्की का, अपनी महबूबा के लिए क्वीन-ऐन का और अपने लिए ब्लैक डॉग का इन्तजाम किया था। कभी-कभी महज शराब की किस्म से उसके पीनेवाले की पोजीशन और रुतबे का अंदाजा किया जा सकता है।

पहला दिन सैर-तफरीह में गुज़रा। मिलने-मिलाने में। एक-दूसरे को जानने-पहचानने में, एक-दूसरे के करीब आने में। रघू भाई रम्भा को लेकर खरीदो-फरोख्त करने के लिए लोनावला चला गया। हीरो लोग हीरोइनों को लेकर अतालवी-मिशन की पहाड़ी पर चले गए। रह गए राइटर लोग, सो वे आजू-बाजू की छोकरियों से दिल बहलाने लगे, क्योंकि आद[illegible]सियत सिर्फ

दौलत में नहीं, बल्कि शराब की किस्म और औरत के जिस्म से भी जाहिर होती है। वैसे सब इन्सान बराबर है।

शाम के वक्त बिजनेस सेशन शुरू हुआ, जिसमें कहानी पर बहस होनी थी। इस सेशन में चारों हीरो, चारों हीरोइनें मौजूद थी और राइटर लोग को भी चुना लिया गया था, हालांकि सब जानते हैं कि फिल्मी कहानी में राइटर लोग का दखल बहुत कम होता है और जो राइटर फिल्मी कहानी में ज्यादा दखल देता है उसे किसी न किसी बहाने फिल्म-कम्पनी से चलता कर दिया जाता है। राइटर का ज्यादा से ज्यादा काम यह होता है कि जब दूसरे लोग कहानी बना लें तो वह उसपर अपना नाम दे दे।

जब सबके जाम मर्तबे के मुताबिक शराब से भर दिए गए तो कहानी पर बहस शुरू हुई। मगर चूंकि कहानी एक सिरे से गायब थी इसलिए इधर-उधर की कहानियों पर बहस होती रही। हाली-वुड की दो दर्जन कहानियां बहस में आईं। कुछ मद्रास की फिल्मों का जिक्र चला, कुछ पुरानी कामयाब कहानियों को फिर से बनाने की तजवीज पर गौर किया गया। कुछ राइटर लोग ऐसे मौके पर भी अपने तल्ख तजुर्बे के बावजूद बाज नहीं रह सके। उन्होंने कुछ अपनी कहानियां सुनाई, जो फौरन बहुत ही बेजारी से उसी वक्त रद्द कर दी गईं। अन्त में रग्घू भाई ने हाथ पर हाथ मारकर एलान किया, "आ-हा-हा, एक कहानी का आइडिया आया है।"

"क्या है ? क्या है ?" बहुत-से लोग एकदम बोल उठे।"

"सुभान-अल्लाह ! सुभान-अल्लाह ! !" मैंने कहा।

"कहानी सुनी नहीं और अभी से सुभान-अल्लाह करने लगे ?" एक राइटर ने मेरी कुहनी में ठोकर मारकर कहा।

मैंने कहा, "मैं कहानी पर सुभान-अल्लाह नहीं कह रहा हूं, खुदा का शुक्र बजा लाता हूं कि कहानी का आइडिया तो आ गया।"

"कहानी क्या है ?" दूसरे राइटर ने पूछा।

"यकीनन अच्छी होगी," तीसरा राइटर बोला।

"जल्दी से सुनाइए ताकि उसे लिख दिया जाए, महूरत में

"सात ही दिन रह गए हैं," बोला राइटर [illegible] तैयार करके आना।

रम्भा ने सरसरी (उचटती) निगाहों से सब पर नजर डाली। उसकी निगाह जैसे कह रही थी, देख लिया, कहानी सब लोग सुनाते रहे, लेकिन आइडिया आया तो मेरे रग्घू भाई को।

रग्घू भाई ने किसी कदर शरमाकर कहा, "कहानी का आइडिया नहीं है, अभी पहला सीन समझ में आया है, हा, हा, हा!"

"सुभान-अल्लाह, सुभान-अल्लाह," मेरे मुंह से बेइख्तियार निकला।

"किस बात पर?" एक हीरो मेरी तारीफ (समर्थन) से खफा होकर बोला।"

"पहले सीन के आने पर," मैंने हाथ उठाकर कहा, "और जनाबेआला, जब पहला सीन समझ में आ जाए तो समझो कहानी तैयार है। कहानी में और होता ही क्या है। पहला सीन समझ में आ जाए, बाकी कहानी तो अपने-आप तैयार हो जाती है।"

रम्भा मेरी तरफ तारीफी निगाहों से देखने लगी। उसे मेरी बात बहुत पसन्द आई थी। उसने मेरी तरफ मुस्कराकर देखा। मैंने भी मुस्कराकर देखा। उसकी साड़ी बड़ी खूबसूरत थी। चेहरे का मेकअप बड़ा खूबसूरत था और जेवर उसके बड़े खूबसूरत थे, और जिस औरत के पास ये तीन चीजें खूबसूरत हों, वह बड़ी खूबसूरत होती है।

"बेशक, बेशक!" एक हीरो सर हिलाकर बोला, "फिल्म की ओपनिंग बड़ी अहम (महत्त्वपूर्ण) होती है और अगर फिल्म की ओपनिंग बन जाए तो समझो पूरी फिल्म बन गई।"

रग्घू भाई खांसकर बोले, "फिल्म यों शुरू होती है कि—एक बहुत बड़ा हाल है, बहुत बड़ा हाल है। उसके साठ दरवाजे हैं और तीन सौ खम्भे हैं और चार सौ फानूस हैं ौर उसके अन्दर आठ सौ लड़कियां डांस कर रही हैं।"

"आठ सौ?" राइटर लोग के आजू-बाजू की लड़कियां खुशी से चिल्लाईं, क्योंकि अगर डांस करने के लिए आठ सौ लड़कियां

होगी तो उनको काम मिलना जरूरी था।

"आठ सौ लड़कियां!—एक सेट पर नाच रही है," रग्घू भाई बार से चिल्लाया, "यह मेरे फिल्म की ओपनिंग है, समझे? आठ सौ लड़कियां एक सेट पर नाच रही हैं।"

"और दो सौ लड़किया टेक्नी कलर मे, दोसौ गेवा कलर मे, दो सौ सोवोकलर में और बाकी दो सौ ईस्टमैन कलर मे नाच रही हैं," मैंने तजवीज पेश की।

"मुंशीजी," रग्घू भाई खफा होकर चिल्लाया, "तुम एकदम गधे हो।"

"बजा फरमाया," मैंने धीरे से कहा और अपनी खिसियाहट मिटाने के लिए पेंसिल मुह में लेकर चबाने लगा।

"फर्स्ट क्लास आइडिया है," दूसरा राइटर बोला।

"मगर मेरा गिलास खाली है," तीसरा राइटर बोला।

"ओपनिंग तो अच्छा है, मगर इसमें हीरो कहा है?" पहला हीरो बोला।

"हीरो को मैं लेकर आता हू," रग्घू भाई जल्दी से अपना गिलास खाली करते हुए बोला, और जल्दी से रम्भा ने अपनी कुर्सी की ओट से ब्लैक-डाग की बोतल से एक पेग गिलास मे सोडा के साथ डालकर रग्घू भाई को पेश किया। रग्घू भाई एक घूट भरकर बोला, "अब मैं हीरो को फिल्म में निकालता हू।" रग्घू भाई ने दोनों हाथ फैलाकर विजय-गर्व से चमकती निगाहों से चारों तरफ देखकर कहा, "अब मैं हीरो को फिल्म मे निकालता हू।" उसने चारों तरफ इस तरह देखा जैसे वह अपनी टोपी के अन्दर से हीरो के बजाय किसी खरगोश को निकालने जा रहा हो। "देखिए, एक आठ सौ लड़कियां डास कर रही हैं, हाल के बाहर हीरो घोड़ा दौड़ाते हुए आता है—टपा-टप! टपा-टप!! टपा-टप!!!"

"धपा-धप! धपा-धप!! धपा-धप!!!" दूसरा राइटर बोला।

"थपा-थप! थपा-थप!! थपा-थप!!!" चौथा राइटर

होता।

"मगर मेरा दिमाग खाली है," दूसरा राइटर बोला।

मगर उसकी कमज़ोर आवाज़ किसीने नहीं सुनी। रघू भाई अपनी कुर्सी से उठ खड़ा हुआ और चिल्लाकर कहने लगा, "हीरो आता है, घोड़ा दौड़ाते हुए, टगा-टग ! टगा-टग !! टगा-टप !!! उसके हाथ में चाबुक है। सड़ाक से वह चाबुक घोड़े के मुंह पर मारता है और फड़ाक से उसकी पीठ पर से उछलता है और धमाक से सीधा अन्दर दरवाजे से हाल में घुस जाता है।"

"सुभान-अल्लाह, सुभान-अल्लाह," मैं जल्दी से चिल्लाया कि कहीं कोई दूसरा राइटर पहल न कर जाए।

रघू भाई ने खुश होकर मेरी तरफ देखा, बोले, "एक बात है मुंशीजी, कहानी तुम खूब समझते हो।"

"आपकी मेहरबानी है," मैंने आदाब बजाते हुए कहा, "अगर इजाजत हो तो एक आइडिया मैं भी अर्ज करूं।"

"बोलो, बोलो," रघू भाई खुश होकर बोले।

"हीरो को घोड़े से मत उतारिए। वह सड़ाक से चाबुक भी मारे और फड़ाक से घोड़े की पीठ पर से उछले, मगर उतरने की बजाय घोड़े को दौड़ाकर सीधे हाल में आ जाए। घोड़े पर सवार और अन्दर आठ सौ लड़कियां डांस करती हुई। उन्हें देखकर हीरो भी घोड़े को नचाने के लिए इशारा करता है और इशारा पाते ही उसका घोड़ा भी नाचने लगता है। ज़रा ख्याल कीजिए, रघू भाई, आठ सौ लड़कियां डांस कर रही हैं और उनके बीच में एक घोड़ा भी डांस कर रहा है और घोड़े की पीठ पर हीरो हाथ बढ़ाकर नीचे से एक लड़की को ऊपर उठा लेता है और उसके साथ घोड़े की काठी पर खड़ा होकर डांस करने लगता है। वह लड़की रम्भा है।"

"हुर्रे !" रम्भा ज़ोर से खुशी से चिल्लाई।

"बिलकुल यही मैं सोच रहा था," रघू भाई बोला।

"क्या बात पैदा की है तुमने मुंशीजी," पहला हीरो ज़ोर से बोला, "तुमने मेरी एंट्री (प्रवेश) तो तय कर दी। कमाल कर

दिया है। जो चाहता है तुम्हारा कलम चूम लूं।"
"मगर दूसरा हीरो किधर से आएगा?" दूसरा हीरो जरा उदास होकर बोला।
"किधर से भी आ सकता है," मैंने कहा, "हाल के आठ दरवाज़े हैं।"
"मैं दरवाज़े से नहीं आऊंगा," दूसरे हीरो ने खफा होकर कहा।
"फिर तुम किधर से आओगे?" रग्घू भाई ने दूसरे हीरो से पूछा।
"मैं···मैं अब एक आइडिया देता हूं। हाल में आठ सौ लड़कियां डांस कर रही हैं। लड़कियों के बीच में घोड़ा डांस कर रहा है। घोड़े की पीठ पर न० १ हीरो और न० १ हीरोइन रम्भा डांस कर रही है। इतने में ज़ोर का एक पटाखा फटता है और चटाख से रोशनदान का कांच टूट जाता है और मैं—दूसरा हीरो—रोशनदान से छलांग लगाकर हाल में कूद पड़ता हूं और चिल्लाकर कहता हूं—या-हू।"
"ग्रेट!" दूसरा राइटर बोला।
"सुपर्ब (बहुत अच्छे)!" चौथा राइटर बोला।
"मगर मेरा गिलास खाली है," तीसरा राइटर बोला, मगर उसकी कमज़ोर आवाज़ किसीने सुनी नहीं।
"कहानी क्या तीर की तरह सीधी जा रही है!" रग्घू भाई ने गर्व से कहा।
"कहानी को अगर 'अच्छी' ओपनिंग मिल जाए," मैंने कहा, "तो समझो बेड़ा पार है।"
"मगर तीसरा हीरो कैसे अन्दर आएगा?" तीसरे हीरो ने परेशान होकर पूछा, "आखिर कहानी में हम भी तो हैं।"
"बेशक हैं आप।" दूसरा राइटर बोला, "मेरे ख्याल में आप पैदल चलकर आए तो कैसा रहेगा?"
"बिलकुल बंडल," तीसरा हीरो नाराज़ होकर बोला, "पहला हीरो घोड़े पर आए, दूसरा रोशनदान से छलांग लगाए और मैं पैदल

समझकर आये ? आप गाना गा रहे हैं क्या ?"

तीसरा राइटर, जिसका दिमाग अब तक खाली था, खाली गिलास को मेज पर जोर से मारकर बोला, "एक आइडिया मैं बताता हूं और जवाब नहीं है तीसरे हीरो की एंट्री का। वाह, वाह, क्या शानदार एंट्री दी है मैंने !"

"क्या है ?" रघु भाई ने बेचैन होकर पूछा।

"आ-हा-हा," तीसरा राइटर सर हिलाकर बोला, "कभी-कभी क्या आइडिया सूझता है मुझे भी ! वाह, वाह, वाह, कमाल कर दिया है मैंने भी। ओ हो हो, गजब की एंट्री है। सच कहता हूं, ऐसी एंट्री दी है मैंने कि सारी फिल्म को उखाड़कर फेंक दो, मगर इस एंट्री को उखाड़कर नहीं फेंक सकते।"

"क्या है, जल्दी बोलो भाई," रघु भाई बेहद बेचैन होकर बोला।

"सुनिए," तीसरे राइटर ने चिल्लाकर कहा, "पहला हीरो घोड़े पर आता है, दूसरा हीरो रोशनदान से छलांग लगाता है, मगर मेरा हीरो इन दोनों से ऊंचा है। वह हेलीकाप्टर में बैठकर आता है। एक हेलीकाप्टर में। समझे आप ? हेलीकाप्टर फर्राटे भरता हुआ हवा में उड़ता चला आता है और हाल के गिर्द चक्कर लगाता है। एक चक्कर, दो चक्कर, तीन चक्कर, चार चक्कर, पांच चक्कर, छठे चक्कर में वह हेलीकाप्टर को उड़ाता हुआ दरवाजे से सीधा अन्दर दाखिल हो जाता है और अन्दर जाते ही हेलीकाप्टर को पियानो के ऊपर खड़ा कर देता है और नाचता है। चिका-चिका बूम चिक ! चका-चका बूम···"

"बरोबर ! एकदम बरोबर !" रघू भाई खुशी से चिल्लाया। "यह एंट्री एकदम पास है। बैरा, राइटर साहब का गिलास शराब से भर दो।"

"मगर मैं किधर हूं ?" चौथा हीरो रंजीदा स्वर में बोला, "मैं किधर से आता हूं इस सीन में ?"

"तुम्हारे लिए एक खंदक खोदनी पड़ेगी," मैंने चौथे हीरो से कहा।

"हाल के नीचे से ?" चौथे हीरो ने खुश होकर पूछा।

"हां !" मैंने जवाब दिया।

"फिर ?" चौथे हीरो ने पूछा।

"फिर हाल का एक कोना फट जाता है और उसमें से चौथा हीरो निकलता है। हाथ में पिस्तौल लिए हुए।" चौथा राइटर बोला, "और वह हाल में आते ही धांय-धांय गोलियां चलाना शुरू करता है। चीखम-दहाड़, धूम-धड़ाका। लड़कियां तितर-बितर होती जाती हैं। चौथा हीरो आकर घोड़े पर नाचते हुए हीरो को जमीन पर गिरा देता है।"

"और खुद घोड़े पर सवार होकर''और रम्भा को लेकर हाल से बाहर निकल जाता है," मैंने दोनों हाथ ऊपर उठाकर कहा।

सबने ज़ोर-ज़ोर से तालियां बजाईं और रंभा मुझे बड़ी गहरी नज़रों से देखने लगी।

आधी रात, चांद और सन्नाटा।

मेरे एक हाथ में जाम था, दूसरे में रंभा की कमर थी और हम दोनों के बीच में ब्लैक-डॉग की बोतल मौजूद थी।

"डार्लिंग," रंभा मेरी तरफ मीठी-मीठी नज़रों से देखते हुए बोली, "तुम कितने बड़े हरामजादे हो ! कैसे मुझे पहले ही सीन में ले आए कि चारों हीरोइनें मुंह देखती रह गईं।"

[illegible]

ले आईं !"

हम दोनों आधी रात के वक्त प्रोड्यूसर के बंगले से ज़रा दूर अलालवी मिशन की पहाड़ी पर एक ढलान के नीचे गुलबर्गे में एक पेड़ के नीचे बैठे थे। यह रात प्रीमियर की रात की तरह हसीन थी। सामने एक छोटा-सा झरना फिल्म की खाली रील की तरह चल रहा था और दूर कहीं किसी रेलगाड़ी की कू-कू चित्रगुप्त की

कि जो संपूर्ण चांद की तरह मुस्करा रही थी।

“[illegible] थी, नहीं तो आज [illegible],” मैंने रंभा से कहा।

“इस दुनिया की सबसे अच्छी [illegible] है शराब।” रंभा [illegible] से बोली।

“तुम भी दुनिया की सबसे हसीन औरत हो,” मैंने रंभा से कहा।

“मुझे भूल मत जाना,” रंभा बोली, “अभी तो कहानी का पहला सीन ही हुआ है।”

“देखती जाओ, आगे के सीनों में भी तुम्हें यूं घुमाऊंगा कि चारों [illegible] रह जाएगी।”

रंभा मेरे सीने से लग गई और एक आह भरकर बोली, “मुझे तुम्हारी इश्कबाजी पर पूरा भरोसा है।”

मैं उसके होंठों पर झुक गया।

रात खाली !

खाली जैसे शराब की बोतल !

रात थकी हुई।

जैसे प्यार की बांहों में लिपटे हुए दो जिस्म।

रात बेसुध !

जैसे तीसरे पहर की ओस में डूबे हुए दो जिस्म। शबनम धीरे-धीरे फुहार की तरह बरसती हुई। फूल टूट-टूटकर टहनियों से गिरते हुए—बेआवाज, बेसुध सपनों में खोए हुए !···

अचानक किसीने मुझे झंझोड़कर जगाया।

मैं हड़बड़ाकर उठा।

मेरे सिर पर रघू भाई खड़ा था।

रंभा ने एक निगाह उठाकर रघू भाई की तरफ देखा। एक क्षण के लिए खौफ से चौंकी, फिर सर झुकाकर सिसकने लगी।

रघू भाई ने घूरकर रंभा की तरफ देखा, मेरे करीब से उठाकर खाली बोतल को देखा, फिर मेरी तरफ देखकर गुस्से से

चिल्लाया, "तुम ?···तुम ?···मेरे मुंशी होकर यह गुस्ताखी ?" रघू भाई के मुंह से झाग निकलने लगा। "मैं तुमको ऐसा कमीना और चोर नहीं समझता था।"

"माफ करो, रघू भाई," मैंने जल्दी से अपने दोनों हाथ उसके पांव पर रख दिए। "मुझसे बड़ी गुस्ताखी हो गई। मैं नशे में अपना मुकाम भूल गया और तुम्हारी लड़की को चुरा लाया यहां।"

"लड़की ? लड़की की कौन बात करता है ?" रघू भाई ने चिल्लाकर कहा, "साली लड़कियां तो बम्बई में ग्यारह हजार मिल जाती हैं, मगर ब्लैक-डॉग नहीं मिलती। सारे शहर को छानकर मैं दो ब्लैक-डॉग लाया था। एक मैंने पी ली, दूसरी तुमने आज रात चुरा ली। हाय," रघू भाई ब्लैक-डॉग की खाली बोतल उठाकर और रुंधे हुए स्वर में बोला, "अब मैं कल ब्लैक-डॉग कहां से पिऊंगा और परसों क्या पिऊंगा ?"

रघू भाई ने ब्लैक-डॉग की खाली बोतल अपने सीने से लगा ली और बच्चों की तरह फूट-फूटकर रोने लगा।

८

दसवां पुल

छः हजार फुट की ऊंचाई पर पहाड़ों के प्याले में श्रीनगर यूं लेटा है जैसे कुनमुना बच्चा मां के सीने से लगकर दूध पीता है।

शाम के धुंधलकों में खोया हुआ शहर धीरे-धीरे रात के अंधेरे की तरफ यूं बढ़ता है जैसे भारी बोझ से लदा हुआ जहाज धीरे-धीरे समुद्र के तट की ओर आता है।

रात के प्याले में कितनी स्याहियों का खून है, कितनी आरजुओं की चमक है, कितनी मेहनतों का नमक है, कितने आंसुओं की नमी है, कितने हाथों की गरमी है। बूंद-बूंद करके दिन-भर की मशक्कत ने कश्मीरी हाथों ने अंधकार की इस द्रवित धारा को निचोड़ा है। कोई दम में श्रीनगर यह प्याला उठाकर पी जाएगा और रात की बांहों में सो जाएगा—अगले दिन की उम्मीद में।···क्योंकि अगर अगले दिन की उम्मीद न हो, कोई शहर न बसे, कोई दरिया न बहे, कोई सूरज न निकले और अगला दिन भी न हो।

मैं डल झील के पास पैलेस होटल में हूं। यह होटल कभी महल था, और अब भी है। लेकिन इस महल में अब पुराने महाराजाओं की जगह नये महाराजा आकर रहते हैं—हिन्दुस्तान के नये शहजादे और विदेशों से आए हुए औद्योगिक युग के नवाब, जो रात को एक पार्टी में इतने रुपये खर्च कर देते हैं कि जिनसे श्रीनगर का एक पूरा मुहल्ला पल सकता है।

यह साहब तेल के बादशाह हैं। पुराना जमाना होता तो लोग

इन्हें तेली कहते और घर के दरवाज़े के बाहर रोक देते। लेकिन यह अब इस महलनुमा होटल में आए हैं और अपने शानदार सुइट में बैठे हुए पन्द्रह आदमियों को शैम्पेन पिला रहे हैं, क्योंकि टेक्सास में इनके बीस कुएं हैं मिट्टी के तेल के ; और कल ही तार आया है कि अब इक्कीसवें कुएं का पता लगा है इनकी मिल्कियत में। इसलिए यह शैम्पेन-पार्टी इस ज़ोर-शोर से चल रही है। और इनकी फ़्रांसीसी महबूबा अपनी कुर्सी पर बैठे-बैठे डर के मारे कांप रही है, क्योंकि इन साहब का कायदा रहा है कि वे हर नये कुएं की खोज पर एक नई महबूबा भी खोज लेते हैं। पुरानी कहावत थी : नेकी कर कुएं में डाल। आज की कहावत यह है : नया कुआं खोद और पुरानी महबूबा को उसमें डाल।

यह अमीर औरत कनाडा में ग्यारह पत्रिकाओं, दो दैनिक पत्रों और पांच साप्ताहिक पत्रों की मालिक है। इस औरत के पास अक्ल नहीं है, एक फ़ीता है जिससे यह अपने पत्र-पत्रिकाओं की तस्वीरें नापती रहती है। तस्वीर जितनी बड़ी और रंगदार होगी, पत्रिका उतनी ही ज़्यादा बिकेगी, क्योंकि यह ज़माना तस्वीरों का है, तसव्वर (कल्पना) का नहीं है।

इसी फ़ीते से यह अक्सर अपना जिस्म भी नापा करती है, ताकि सीना, कमर और कूल्हे की मीज़ान (जोड़) कहीं गलत न हो जाए। इसलिए यह औरत फ़ीता लेकर हर वक्त अपने जिस्म से लड़ती रहती है। नाश्ते से रात के खाने तक लड़ती रहती है।

किसी ज़माने में यह औरत खूबसूरत रही होगी। लेकिन अपने जिस्म से लड़-लड़कर इस औरत ने अपना प्राकृतिक सौंदर्य खो दिया है। फ़ीते के अनुसार सीने, कमर और कूल्हे का अनुपात अब भी ठीक है, लेकिन खूबसूरती गायब हो चुकी है। कहीं पर दिल के अंदर इस औरत को यह बात मालूम हो चुकी है, लेकिन यह इस कटु सत्य का सामना नहीं करना चाहती और हर रोज़ फ़ीता लेकर अपने जिस्म को नाप-नापकर अपने-आपको धोखा देती रहती है। यह औरत बहुत अमीर है। अब तक पांच पति बदल चुकी है, मगर फ़ीते के सिवा किसी की वफ़ादार न रह सकी।

श्रीनगर में यह अपने नौजवान नीग्रो बटलर को लेकर आई है, हालांकि उसकी पत्र-पत्रिकाएं सबकी सब अपनी नीग्रो-दुश्मनी के लिए मशहूर हैं। इस समय यह अपने सजे हुए शयनकक्ष में अपनी पत्र-पत्रिकाओं के हर पाठक की नज़रों से दूर अपने नौजवान नीग्रो बटलर के साथ शराब पी रही है, और उसके हृष्ट-पुष्ट और स्वस्थ शरीर को यूं देख रही है जैसे कसाई किसी मोटे हृष्ट बकरे को देख-देखकर उसके गोश्त का अंदाजा करता है। पुराने ज़माने होते तो हम इस औरत को वेश्या कहते, लेकिन आजकल नहीं कह सकते क्योंकि यह औरत ग्यारह पत्रिकाओं, दो दैनिक अखबारों और पांच साप्ताहिक पत्रों के आधे की मालिक है। थोड़ी देर में यह औरत अपने बटलर को लेकर डल के किनारे निकल जाएगी और झील की खूबसूरती को अपने सीने से नापेगी।

ये हज़रत नर्बदा पाटरीज़ के मालिक हैं। हिन्दुस्तान में चीनी बरतन बनाने की सबसे बड़ी फैक्टरी आपकी है। इनके प्याले, तश्तरियां, सुराहियां हर घर में पाई जाती हैं। लेकिन अगर आपमें हिम्मत है तो इन्हें कुम्हार कहकर देखिए। खड़े-खड़े न चुनवा दें तो मेरा ज़िम्मा; क्योंकि पुलिस से लेकर मंत्रियों तक सब उनके दोस्त हैं और इन्हींकी चीनी की प्लेटों में इनका नमक खाते हैं। इन्होंने किसीसे सुन लिया था कि कश्मीर की घाटी में एक खास तरह की मिट्टी पाई जाती है, जिससे चीनी के बरतन बहुत उम्दा बन सकते हैं—नर्बदा पाटरीज़ से भी उम्दा। इसलिए ये कोई डेढ़ महीने से पैलेस होटल में डेरा डाले हुए हैं और सरकार से डल झील को सुखा देने की इजाज़त मांगते हैं, क्योंकि इनके इंजीनियरों ने कश्मीर की अलग-अलग घाटियों की मिट्टी को परखने के बाद उन्हें बताया है कि चीनी बरतन बनाने के लिए डल झील की तह की मिट्टी सबसे उम्दा है।

वे इस काम के लिए दो करोड़ रुपये खर्च कर देने को तैयार हैं और उनकी समझ में नहीं आता कि सरकार बराबर इन्कार क्यों कर रही है। उनकी निगाहों में डूबती हुई शाम की शफकई (श

की तानी के) लहरियें नहीं हैं। पानी की सतह पर डोलते हुए गुलाबी कमल नहीं हैं, और किसी चित्रकार की रची हुई कल्पना की तरह सजे हुए शिकारे नहीं हैं। वे बार-बार पैलेस होटल से भाग-भागकर इस झील के किनारे आते हैं और सीधा पीट-पीटकर कहते हैं—"हाय, यह डल झील की कीचड़ मुझे क्यों नहीं मिल सकती !"

यह एक फिल्म प्रोड्यूसर है। अपनी पिछली फिल्म में उसने दार्जिलिंग को इस्तेमाल किया था और दस लाख रुपये कमाए थे। इस फिल्म में वह श्रीनगर को इस्तेमाल करेगा और पन्द्रह लाख कमाने का इरादा रखता है। श्रीनगर के दृश्य बहुत सुन्दर हैं। डल झील और चश्मा शाही और निशात बाग और शालीमार और हारविन लेक। और वह सबको इस्तेमाल करेगा, एक पृष्ठभूमि की तरह और अपनी हीरोइन के रूप को उजागर करेगा।

यह प्रोड्यूसर रूप बेचता है, मगर आप इसे रूप के बाजार का दलाल नहीं कह सकते, क्योंकि उसके बैंक में चालीस लाख नकद पड़ा है। उसके स्टूडियो में दो हजार आदमी काम करते हैं और उसके पास बिलकुल नये माडल की शेवरलेट गाड़ी है। ब्लैक से उसकी तिजोरियां भरी पड़ी हैं और सिर्फ व्हाइट हार्स वह पीता है।

और इस वक्त उसकी समझ में नहीं आता कि श्रीनगर की इस जवान और हसीन रात में वह किस तरह अपनी फिल्म के हीरो को जुल देकर हीरोइन को अपने साथ लेकर इस चांदनी रात में डल की सैर को निकल जाए। और हीरोइन अपनी जगह पर परेशान है। क्योंकि डल झील में दो द्वीप हैं—एक को कश्मीरी भाषा में सोने का द्वीप कहते हैं और दूसरे को चांदी का द्वीप। और हीरोइन ने आज रात प्रोड्यूसर के साथ सोने के द्वीप पर जाने का वायदा किया था और हीरो के साथ चांदी के द्वीप पर। और अब वह दोनों उसे लेने आए हैं। एक तरफ फिल्म प्रोड्यूसर और दूसरी तरफ हीरो। और हीरोइन बेचारी हैरान है। वह कभी सोने के द्वीप को देखती है,

कभी शादी के डोरे की ओर फैसला नहीं कर पाती कि वह आजकी रात किसकी बांहों में रहेगी।

इस तरह होटल के कितने ही कमरे हैं, और गुस्से हैं, और नाटक हैं, जिनमें कोई न कोई समस्या उलझी हुई है। कहने को जिन्दगी चल रही है लेकिन अन्दर ही अन्दर कोई खींचा-तानी चल रही है; और कोई फैसला नहीं कर सकता कि क्या हो, क्योंकि ये लोग कुछ कह नहीं सकते, कुछ सह नहीं सकते, किसी तरह अपने किसी नुकसान के लिए राजी नहीं किए जा सकते। कहने को ये लोग कश्मीर की सैर को आए हैं लेकिन उनमें से बहुत-सों के लिए कश्मीर एक पृष्ठभूमि है, एक कोना है, कोनड़ है, सोने का एक द्वीप है। इसलिए ये लोग हर साल श्रीनगर आते रहेंगे और श्रीनगर की रातों में रंगरेलियां मनाकर भी श्रीनगर की रात को नहीं देख सकेंगे, क्योंकि हर रोज श्रीनगर की रात की लैला अंधेरे का लबादा ओढ़कर निकलती है, और सिर्फ वही उसकी नकाब उलटकर देख सकता है जो अपने दिल की नकाब उलट सकता है।

इसलिए मैं घबराकर होटल से बाहर निकल आता हूं और रात के सन्नाटे में डल के फूलों को चांदनी में नहाए हुए देखता हूं।

बहुत दिन हुए इस डल के पानियों में एक अंग्रेज सिपाही ने आत्महत्या की थी, क्योंकि उसे अपने मेजर की लड़की से मुहब्बत थी। दोनों अंग्रेज थे, दोनों गोरे थे, दोनों शासक-वर्ग से सम्बन्ध रखते थे, फिर भी उनके आपस के सम्बन्ध को किसीने मंजिल तक पहुंचने न दिया। क्योंकि एक मेजर की लड़की थी, दूसरा केवल एक सिपाही था, इसलिए यह शादी किसी तरह न हो सकी।

इसलिए कहनेवाले यह कहते हैं कि एक रात ऐसी ही चांदनी रात में वे दोनों महब्बत के मारे एक शिकारे को खेते हुए डल झील में आए। कभी प्रेमिका नाव खेती थी और प्रेमी गिटार पर कोई विरह का गीत सुनाता था। कभी प्रेमी चप्पू चलाता था और प्रेमिका शिकारे के लाल गद्दों पर अपनी सेब की डालियों ऐसी बांहें टिकाए

बड़े ध्यान मे उसकी ओर देखती जाती थी। डल के बीच जाकर चप्पू छोड दिए गए और देर तक वे दोनो हवा की सरगोशियो की तरह एक-दूसरे से बातें करते रहे, और मुहब्बत की खुशबू की तरह एक-दूसरे की सांस का आनन्द लेते रहे। और देर तक नीलोफर के फल पानी के धरातल पर आखें खोले सहम-सहमकर उन दोनो की तरफ देखते रहे, क्योंकि फूल मुहब्बत के सब अदाज जानते है और उसके हर अजाम से वाकिफ होते हैं।

यकायक वे दोनो डोलती हुई नाव मे फूलो के बीच आकर खड़े हुए। मेजर की लडकी ने आह भरकर अपनी दोनो बाहे उस मामूली सिपाही की गरदन मे डाल दी। सिपाही ने उसे अपनी बाहो मे उठा लिया और डल के पानियों मे कूद पडा।

नाव जोर से हिली और जब दोनों जिस्म गिरे तो पानी की रुपहली सतह लाखो सितारो मे टूट गई और नीलोफर के फूल डूब गए, और थोड़ी देर के बाद फिर उभर आए। मगर वे दो फूल डूबके न उभरे, जिनकी मुहब्बत को किसीने फल की तरह खिलने न दिया था।

दूसरे दिन मेजर ने डल मे दूर-दूर तक तैराक और गोताखोर भेजे, लेकिन कोई उनकी लाशें ढूढ़कर न ला सका।

और लोगों का ख्याल है कि वे दोनो प्रेमी अब भी जिन्दा हैं और सोने के द्वीप के किनारे, जहां बेदे-मजनू के पेड विधवाओं की तरह बाल खोले पानी पर झुके हुए रोते हैं, उनके आसुओ की पनाह मे पीली-नीली आखोंवाले कमलो के नीचे, गहरी लबी तह-दर-तह पानी की घास के नीचे सफेद-सफेद घोंघो के किसी महल मे वे दोनो मुहब्बत करनेवाले दुनिया की नजरो से दूर आज भी वहां रहते हैं।

और कहनेवाले यह भी कहते हैं कि भरी चादनी रात मे जब सब सो जाते है, जब डल के किनारे कोई प्राणी नहीं घूमता, झील की तहो मे एक सितारा निकलता है जिसकी मछली बेदे-मजनू की होती है, जिसके चप्पू कमल के फूलो के होते हैं और परदे पानी की घास की तरह लहरियो की तरह हवा मे झूमते हैं। इस सितारे मे

कोई आदमी अचानक रुकी हुई आंखों से किसी को ताकता हुआ सितार पर एक मद्धम कश्मीरी गीत गाता है और कोई बेद की डालियां झुकी आई दिखाई दें कि यहां पर किनारा, नहीं ध्यान से उस गीत को सुनती जाती है और शिकारा आप ही आप निशात बाग की तरफ सरकता जाता है।

बहुत-से लोगों ने इस नाव को देखा है और इस साल पहिले मौसम में निकलकर मैंने भी इस नाव को देखा। चांदनी रात के गहरे सन्नाटे में यह नाव मानो चांद की किरनों से बुनी हुई मालूम होती है। मर्द की दोनों आंखें खुली थीं और दोनों चप्पू ठहरे हुए थे। औरत की दोनों आंखें उसके मर्द पर थीं और उसका दिल धड़कानेवाला चप्पू एक बच्चे की तरह उसकी गोद में था। और वे दोनों चुप-चुप मुस्कराकर एक-दूसरे की ओर देख रहे थे, और नाव आप ही आप पानी की लहरों पर डोलती हुई अमीराकदल की ओर चली जा रही थी। और नाव पर बहुत-सा सामान भरा था—लकड़ियां और सब्जी की टोकरियां, और कमल के फूल और एक बकरी जो बार-बार चांद की तरफ मुंह करके खुशी से मिमियाती थी।

यकायक मर्द ने एक कश्मीरी गीत गाना शुरू किया :
जह् कमियो सोनिया मता न भरम दिय···
[मुझे मालूम नहीं है
मेरा रकीब कौन है
जिसने तेरा चित्त मेरी ओर से हटा लिया है
जिसकी वजह से तूने मुझसे निगाहें फेर ली हैं।]

आवाज़ की लहक में एक अजब सवाल था। उसे महसूस करके यकायक कश्मीरी औरत ने अपनी निगाहें फेर लीं। शर्म से उसके गाल तमतमा गए और उसके कानों में पड़ी हुई चांदी की वालियों के गुच्छे एक नर्म-नाज़ुक जवाब की तरह बज उठे। और मैंने हैरान होकर देखा, यह वह नाव तो नहीं है। ये तो वे लोग नहीं हैं। ये तो श्रीनगर के दो आम लोग हैं—दिन-भर की मेहनत

ये दूर होकर घर जाते हुए। इन लोगों को आत्महत्या कहा रास जाएगी, क्योंकि ये लोग मिलकर मुहब्बत भी करते हैं और मेहनत भी करते हैं।

मैं बस पर चल रहा हूं।

मेरे साथ-साथ जेहलम चल रहा है।

हम दोनों मुसाफिर हैं और बहुत दूर से आए हैं। मैंने सोचा, जिस दिन मेरी मा ने मुझे जन्म दिया था उस दिन मैं बहुत कमजोर था।

जिस दिन चश्मा वेरीनाग ने जेहलम को जन्म दिया, वह भी बहुत कमजोर था।

मगर वह आगे चला और उसमे नदी-नाले आकर मिलते गए।

मैं आगे चला और मुझमें दिन-रात आकर मिलते गए।

फिर हम दोनों जिन्दगी की चट्टानों पर घिसते गए और परिस्थितियों की खाइयों में झरने बनकर गिरे। हमने खेतों को सींचा और फूलों की खुशबू सूंघी।

हमने शहरों का कूड़ा-करकट उठाया और उसका तेजाब अपने सीने में घोल लिया और मनुष्य की निराशा की तरह गंदले हो गए।

हमने लोगों के बीच पुल बांधे और नावें चलाईं और पानी के रास्तों से हाथ मिलाया और हम सारी दुनिया पर फैल गए।

जेहलम एक इंसान है।

इंसान एक दरिया है।

दोनों साथ-साथ चलते हैं और इन दोनों के साथ-साथ रात भी चलती है।

"बाबू!"

"क्या है?" मैंने पूछा।

"असली सायम-साजूनी की माला है, असली नीलम की अंगूठी है। असली जेड का ऐन-ड्रे है। असली मूनस्टोन की अंगूठी

है।"

"यह चीज़ असली है और तुम इसे सड़क के किनारे बैठे बेचते हो?"

"हां," बूढ़े ने कहा, "ये अनमोल रतन, बाबू, मैं कौड़ियों के मोल बेचता हूं। इन्हें लद्दाख का एक लामा लाया था।"

"अच्छा! जरा दिखाओ तो।"

बूढ़े ने झोली की तह से अपनी चादर खोली।

जली हुई चांदी की अंगूठी थी। नग घटिया किस्म के मून-स्टोन का था। रागदान का जेड भी घटिया था। लापुस-लाजुली भी तीसरे दर्जे का था मगर कारीगरी आला दर्जे की थी। हर चीज तराशे हुए हीरे की तरह चमक रही थी। मुझे खास तौर पर अंगूठी पसन्द आई, इसलिए मैंने उसकी तरफ से निगाह हटा ली और दूसरी चीजों की कीमत पूछने लगा।

"यह जेड का रागदान कितने का है?"

"एक सौ सत्तर रुपये।"

"हूं! और यह लापुस-लाजुली की माला?"

"नब्बे रुपये।"

"हूं! और यह नीलम की अंगूठी?"

"चार सौ।"

"और यह···?···यह जली हुई चांदी की अंगूठी?···" मैंने लापरवाही से चांदी की अंगूठी के बारे में पूछा।

"यह मूनस्टोन की अंगूठी है—चालीस रुपये की है! यह तिब्बत के लामा की है।"

"अभी तुम लद्दाख के लामा की बात कर रहे थे?"

"तिब्बत के लामा से चुराकर कोई इसे लद्दाख ले गया था। वहां से एक लामा मेरे पास लाया। मैंने उससे खरीद लिया इस अंगूठी को।"

"मैं इसके दस रुपये दूंगा।"

"अकेला इसका नग चालीस रुपये का होगा। मैं तो अपने खानदान के अनमोल रतन बेच रहा हूं, बाबू!"

मैं चलने लगा।

वह बोला, "अच्छा तीस दे दो।"

मैंने कहा, "अब आठ दूंगा।"

"तुम तो मजाक करते हो," बुड्ढा बोला, "चलो, बीस दे दो।"

मैंने आगे को कदम बढ़ाए और चलने लगा। घबराकर बुड्ढा आवाज़ देने लगा, "अच्छा, पन्द्रह दे जाओ।···चलो बारह पर सौदा कर लो।···अच्छा···वापस आ जाओ। चलो, दस ही दे जाओ।"

मैंने वापस आकर कहा, "अब सात दूंगा।"

मैंने जेब से सात रुपये निकालकर मूनस्टोन की अंगूठी ले ली और पूछा, "क्या यह पत्थर असली है?"

"पत्थर तो सब नकली हैं," बुड्ढे पंडित ने आह भरकर कहा, "मगर इनपर जो मेहनत की गई है वह सब असली है।"

"तो तुम एक कीमत क्यों नहीं बताते हो?" मैंने उससे पूछा, "चालीस से शुरू करते हो, सात पर आ जाते हो। ऐसा क्यों करते हो?"

"गाहक को झगड़ने में मजा आता है, खास तौर पर औरतों को," मक्कार पंडित ने मुझे आंख मारकर कहा, "वे समझती हैं कि उन्होंने कौड़ियों के भाव हीरे खरीद लिए।"

मैं हंसकर आगे बढ़ गया।

दूर आगे जाने के बाद मैंने देखा कि बंध के नीचे ढलान पर दरिया के किनारे एक नौजवान एक औरत को मार रहा है—बड़ी सख्ती और बेरहमी से। पास में चूल्हे में आग जल रही है और उसपर तवा रखा है और एक अधेड़ उम्र की औरत मक्की की रोटियां तवे से उतारकर चूल्हे में सेंक रही है। एक बुड्ढा और एक लड़का थाली आगे रखे मक्की की रोटी कद्दू की तरकारी के साथ [illegible] रहे हैं। दो नौजवान अंगूरों की टोकरियां रखे इत्मीनान [illegible] हैं। एक आदमी दरिया में अपने हाथों और टांगों

में कीचड़ सूख रहा है। और यह आदमी घूंसों और लातों से उस नौजवान औरत को मारे जा रहा है। और औरत जोर-जोर से मदद के लिए चीख रही है। मगर कोई उसकी मदद को नहीं आता।

मैं बस से उतरकर उस औरत से पूछने लगा जो नल पर मटकी में पानी भर रही थी और उसे बताने लगा, "वह एक आदमी एक औरत को पीट रहा है।"

"हां, मुझे मालूम है।"

"पर तुम औरत जात होकर दूसरी औरत को बचाती नहीं हो?"

"वह उसका मरद है। वह उसकी औरत है।"

मैं उस मर्द के पास पहुंचा। "तुम इसे मारते क्यों हो?"

"यह मेरी औरत है!" उसने औरत के गाल पर एक तमाचा रसीद करते हुए कहा, "बता, यह चांदी का छल्ला कहां से आया?" उसने एक और लात जमाई।

"कौन छल्ला? ठहरो, ठहरो···" मैंने कहा।

वह गरजकर कहने लगा, "यही जो यह पहने हुए है!"

"चांदी का छल्ला कौन-सी ऐसी बढ़िया चीज है। मुमकिन है इसने खरीदकर पहन लिया हो।" मैंने कहा, "मुमकिन है इसने तीन-चार रुपये बचाकर रखे हों। कौन-सी बड़ी बात है! यह देखो, मैंने सात रुपये में यह चांदी की अंगूठी खरीदी है।"

उस आदमी ने अपनी बीवी को मारना बन्द कर दिया और अपने दोनों हाथ कमर पर रखकर बोला, "बाबू, तुम्हारी बात और है। तुम सात क्या साठ रुपये की अंगूठी खरीदकर पहन सकते हो। यह कहां से लाएगी? हमारा सारा खानदान दिन-रात बिल्डिंग पर ईंट ढोकर बस इतना कमाता है कि दो वक्त का गुजारा हो सके। इतने में चांदी का छल्ला कहां से आएगा? कल तक इसकी उंगली में नहीं था, आज कहां से आ गया?"

"यह क्या कहती है?"

"कहती है, रास्ते में पड़ा मिल गया था। हरामजादी, छिनाल—

कौन! बोल, किस यार से लाई है?" मर्द ने औरत के मुंह पर घूंसा मारकर कहा और औरत के होंठों से खून बहने लगा और वह लड़खड़ाकर गिर पड़ी और चांदी का छल्ला उसकी उंगली से निकलकर नदी में डूब गया।

"हाय!" औरत के मुंह से अनायास ही निकला और वह वहीं बेहोश हो गई।

मर्द ने औरत को मारना बन्द कर दिया और उसे होश में लाने की कोशिश करने लगा।

मैंने रोटी पकानेवाली औरत से पूछा, "तुम लोग मुझे श्रीनगर के रहनेवाले नहीं मालूम होते?"

"हम रजौरी से आए हैं!" रोटी पकानेवाली औरत बोली, "उधर हमारा जो कुछ था वह सब बिक गया इसलिए हम यहां आ गए हैं। इधर बिल्डिंग पर काम करते हैं, ईंटें ढोते हैं। मेरे दो लड़के बूट बेचते हैं। यह जो मार रहा है, यह मेरा बेटा है। वह जो बेहोश पड़ी है, वह मेरी बहू है। यह बुड्ढा मेरा खसम है। यह लड़का जो इसके साथ खा रहा है, यह मेरा पोता है। हम लोगों की उधर रजौरी में अच्छी हालत थी। मगर फिर जो था सब बिक गया।…"

"और जो बाकी था वह श्रीनगर में आकर बिक गया," मैंने धीरे से कहा, मगर वह मेरी बात नहीं समझी। इसलिए मैंने बात बदलते हुए उससे कहा, "एक मक्की की रोटी कितने पैसों में दोगी?"

उसने मुझे शुबहे की नजरों से सर से पांव तलक देखा।

मैंने कहा, "बात यह है, मां, कि मुद्दत से मक्की की रोटी और कद्दू की तरकारी नहीं खाई है। जी चाहता है। एक मक्की की रोटी और कद्दू का साग दे दो। एक रुपया दूंगा।"

"बैठ जाओ, बैठ जाओ!" बुड्ढा जल्दी से बोला।

मैंने एक रुपया निकाला, बुड्ढे ने हाथ बढ़ाया, मगर जल्दी से उसके लड़के ने वह रुपया मेरे हाथ से छीन लिया और अपनी जेब में डालकर बोला, "मां, इसको कद्दू-रोटी दे और चलता कर!"

फिर वह अपनी बीवी को, जो अब होश में आ चुकी थी, एक

घूंसा मारकर बोला, "चल आगे, पांव छू मां के। माफी मांग! और बोल फिर कभी ऐसा छल्ला नहीं पहनेगी!"

लड़की ने मां के पांव छुए। भाई के सामने हाथ जोड़के कसम खाई कि फिर वह कभी ऐसा छल्ला नहीं पहनेगी। मगर वह बहुत ही खूबसूरत लड़की थी और उसकी निगाहें बार-बार मेरी मून-स्टोन की अंगूठी पर रुक जाती थीं। इसलिए मैंने सोचा कि अगर यह लड़की ऐसी ही खूबसूरत रही और इसी तरह गरीब रही तो वह यह चांदी का छल्ला दोबारा पहनेगी। मगर उस वक्त मैं चुप रहा।

मैंने मक्की की गरम-गरम रोटी अपने हाथ पर रख ली और रोटी पर मां ने कद्दू का साग डाल दिया और मेरे नथुनों में कद्दू के साग की गरम-गरम भाप पहुंचने लगी और मेरी आत्मा में सुनहरी मक्की की रोटी का सोंधापन बसने लगा। और मेरी भूख बेहद तेज हो गई और मैं मजे-मजे से एक-एक कौर धीरे-धीरे तोड़-कर खाने लगा।

मार्टिनी या वर्मोन ?
सूप कौन-सा लेंगे ?
पाम दी सालट पाईंज !

मैंने कौर तोड़कर नौजवान मारनेवाले से पूछा, "कभी पैलेस होटल गए हो ?"

"आज तक कभी होटल के अंदर नहीं गया।"

"चश्मा शाही देखा है ?"

"नहीं।"

"निशात बाग ?"

"नहीं !"

"शालीमार बाग ?"

"नहीं ! क्यों ? वहां कोई काम मिलता है ?"

"काम नहीं मिलता, तफरीह होती है !"

"तफरीह क्या होती है ?" वह हैरान होकर पूछने लगा।

मैं क्या जवाब देता, इसलिए चुप रहा। जब मक्की की रोटी का आखिरी कौर तोड़ रहा था तो मैंने पूछा, "महीने में कितनी बार बीवी को पीटते हो ?"

"यही कोई पांच-छः बार !" वह नौजवान अपनी बीवी के मुंह में कौर डालते हुए बोला। "क्यों, जानकी ?" और जानकी खिलखिलाकर हंस पड़ी।

आधी रात के वक्त जेहलम के पानी पर तैरते हुए हाउस-बोटों की बत्तियां बुझ चुकी थीं। शिकारों और नावों की आवा-जाही भी बन्द हो गई थी। बंध के उस पार सफेदे के पेड़ सिपाहियों की तरह अटेंशन खड़े थे। माझियों की सदाएं गुम थीं। शिकारों के चप्पू खामोश थे। बरसती हुई चांदनी में बिजली के खम्भों के बल्ब किसी भीतरी दु:ख और वेदना से जलते हुए मालूम होते थे। मैं अमीराकदल के पुल पर खड़ा था और मेरे नीचे जेहलम बह रहा था।

ऐसे में वह अमीराकदल का सफेद दाढ़ीवाला पगला कादिर बट मेरे सामने नमूदार हुआ और मेरी तरफ देखकर हंसने लगा।

"क्यों हंसते हो ?" मैंने डांटकर पूछा।

वह फौरन संजीदा हो गया। फिर देर तक मुझे पुल पर खड़ा घूरता रहा। फिर पूछने लगा, "इस शहर में कितने पुल हैं ?"

"सात हैं।"

"नाम गिनाओ !"

मैंने नाम गिनाए—अमीराकदल, जहकदल, फतेहकदल, जैनाकदल, आलीकदल, नवाकदल और सफाकदल !

"मगर दो पुल और बने हैं।"

"हां !"

"उनके नाम बताओ !"

"मुझे मालूम नहीं !"

"कुल कितने हुए ?"

"नौ पुल !" मैंने तंग आकर उस पगले से कहा, "श्रीनगर

अब तो पुलों का शहर है।"

"मगर दसवां पुल कहां है?"

"दसवां पुल? कौन-सा दसवां पुल?" मैंने हैरान होकर पूछा।

मगर पगले ने कोई जवाब न दिया। वह देर तक मुझे देखकर हंसता रहा, फिर यकायक घूमकर अमीराकदल के पार हरिसिंह स्ट्रीट की तरफ चला गया और जोर से चिल्लाया, "दसवां पुल कहां है? दसवां पुल कहां है?"

वह अक्सर शहर के अलग-अलग मुहल्लों में यह नारा लगाते हुए दिखाई देता था, मगर उस पगले की सदा पर कोई ध्यान न देता था। पगले कादिर बट को शहर में ज्यादातर लोग जानते थे। वह सफाकदल में लकड़ियों की एक बड़ी टाल पर लकड़ियां चीरने का काम करता था। दिन-भर लकड़ियां चीरता था और शाम को सातों पुल पार करके अमीराकदल के एक होटल में लकड़ियां पहुंचाने जाता था। उसकी लकड़ियों से भरी हुई नाव रोज जेहलम की धारा पर सातों पुलों के नीचे से गुजरती थी। और वह उसे जान लड़ाकर खेता हुआ नाव की पूरी खेप की शेष लकड़ियां होटल में पहुंचाकर रात गए नौ-दस बजे लकड़ियों की टाल पर वापस पहुंचता था और मालिक से दिन-भर की मेहनत के ढाई रुपये वसूल करके घर जाता था। घर जाकर वह अपनी बीवी के हाथ का पका हुआ खाना खाता था और फिर एक प्याला शीरचाय का पीकर बेसुध सो जाता था। वह अपनी बीवी से बेहद मुहब्बत करता था और उसकी मुहब्बत का दीवानापन सारे इलाके में मशहूर था।

एक बार उसकी बीवी हैजे से बीमार हो गई और वह टालवाले से दो रुपये कर्ज लेकर हकीम की दवा लाया। बीवी को दवा खिलाकर वह लकड़ियों की टाल पर चला गया। दिन-भर वह लकड़ियां चीरता रहा और बीच-बीच में भाग-भागकर अपनी बीवी की तीमारदारी के लिए जाता रहा। अजीब मुसीबत थी! बीवी की तीमारदारी भी जरूरी थी और लकड़ियों की चिराई भी जरूरी थी, और उन्हें होटल में पहुंचाना भी जरूरी था।

दिन-भर जब बीवी की कै किसी तरह न रुकी तो उसने टाल-वाले से डाक्टर की दवा के लिए दस रुपए मांगे। टालवाले ने कहा कि जब तक वह सारी लकड़ियां चीरकर नाव में भरकर अमीराकदल के होटल में पहुंचाकर वापस न आएगा, वह उसे दस रुपये नहीं देगा।

कादिर बट भागा-भागा अपनी बीवी के पास पहुंचा। लोग कहते हैं उस वक्त कै-दस्त से उसकी बीवी अधमुई हो चुकी थी और लगभग मुर्दा नजर आ रही थी। उसने अपनी बेहोश बीवी के ठंडे पसीने से तर-बतर माथे पर हाथ रखा और रुंधे हुए स्वर में बोला, जैनब खातून, तू मरना नहीं! मेरा इन्तजार करना! समझीं, मेरा इन्तजार करना! मैं अभी अमीराकदल में लकड़ियां पहुंचाकर और अंग्रेजी दवा वाले डाक्टर को लेकर तेरे पास आता हूं। फिर तू बिलकुल ठीक हो जाएगी। समझीं! देख मरना नहीं! मेरा इन्तजार करना!"

इतना अपनी बेहोश बीवी से कहकर कादिर बट वहां से विदा हुआ और जल्दी-जल्दी लकड़ियां नाव में भरकर चल पड़ा। इससे पहले उसे जेहलम का रास्ता कभी इतना लम्बा और कठिन मालूम न हुआ था। ऐसा लगता था जैसे यह नदी नहीं है रेगिस्तान है जिसमें हर क्षण उसके कदम धसते जा रहे हैं। वह बड़ी मेहनत से चप्पू चला रहा था और ऐसी तेजी से जैसे कोई समुद्री कप्तान उसकी पीठ पर चाबुक लिए खड़ा हो। जिन्दगी में उसने आज तक कभी जेहलम के सात पुलों को नहीं गिना था। आज उसने अपने सर पर से गुजरते हुए पुल को इस तरह गिना और महसूस किया जैसे गम की एक बड़ी मेहराब उसके सर पर कायम हो। और वह अपने तन-मन की सारी ताकत से चप्पू चलाता हुआ अपने रास्ते के सारे पुलों से गुजर-[illegible] में लकड़ियां देकर वापसी पर टालवाले से दस रुपये लेकर [illegible] मुर्दा थी। मानो

[illegible] अपनी बीवी के गम में पागल है। जब श्रीनगर में सात पुल थे, वह चिल्ला-चिल्लाकर

लोगों से पूछता था—आठवां पुल कहां है? जब आठवां पुल बन गया तो वह चिल्ला-चिल्लाकर पूछने लगा—नवां पुल कहां है? जब नवां पुल बन गया तो वह पूछने लगा—दसवां पुल कहां है? पगला जो ठहरा! उसकी बात में कोई तुक नहीं।

आजकल पगले कादिर बट की आवाज रात के सन्नाटे में श्रीनगर के मुहल्लों और कूचों में सुनाई देती है। मेरे कानों में इस समय यही आवाज गूंज रही है: "दसवां पुल कहां है? दसवां पुल कहां है?"

जेहलम शहर के उन हिस्सों से गुजर रहा है जहां मल्लाह कभी नहीं जाते, जहां माल-असबाब से लदी हुई नावों की दोहरी कतारें खड़ी हैं और ऊंची-ऊंची पुरानी हवेलियों की छतों पर फूल उगे हुए हैं। जहां मकानों की गंदगी सीधे नदी में गिरती है और तंग गली-कूचों की गंदी मोरियां अपनी सारी बदबू नदी में उंडेल देती हैं।

जैनाकदल में कहीं-कहीं मांझियों के घरों से हब्बा खातून और रसूल मीर के गीतों की सदा आती है।···रानावाड़ी में अखरोट की लकड़ी पर चिनार के खूबसूरत पत्तों के नक्शो-निगार उजागर हो रहे हैं। अमीराकदल में शालों पर ऐसी बारीक सोजनकारी हो रही है कि चांद की किरनें भी देखें तो शरमा जाएं।

जड़ीबल के बाहरी सिरे पर यह मंजूर इलाही का घर है। फूस की छत और कच्ची मिट्टी की ईंटें और एक ही कमरा।···रात के दो बजे हैं और मंजूर इलाही अभी तक अपने काम में व्यस्त है। वह पेपरमाशी की एक बड़ी सुराही बना रहा है और उसपर आखिरी नक्शो-निगार उजागर कर रहा है। सुराही क्या है खैयाम की रुबाई मालूम होती है। एक कोने में उसकी बीवी जेवर रखने के लिए पेपरमाशी का बक्स तैयार कर रही है। सुनहरी और सब्ज मेहराबों के अन्दर नाजुक-नाजुक सफेद जालियां ताजमहल की जालियों की तरह आलोकित मालूम होती हैं, हालांकि यह संगमरमर नहीं है, महज पेपरमाशी है।

…नादयां छूट रही थीं।

मंजूर इलाही मेरा दोस्त है इसलिए मैं बे-तकल्लुफ उसके कमरे में चला जाता हूं और उससे कहता हूं, "इस वक्त रात के दो बजे हैं। कब सोओगे?"

"जब उंगलियां चलने से इंकार कर देंगी," वह कहता है।

"और आंखें देखने से!" उसकी बीवी कहती है।

मैं थोड़ी देर चुप रहने के बाद कहता हूं, "भाभी, शीर-चाय पिलाओ!"

भाभी समावार से गरम-गरम शीर-चाय का एक प्याला निकाल-कर मुझे देती हैं। चाय गाढ़ी और सुर्ख है और सोडे से नमकीन भी है। अजब मज़ा है इस शीर-चाय का।

"बेरा, एक बड़ा व्हिस्की लाओ!"

"डार्लिंग, एक मार्टिनी और! अभी तुम्हारी आंखों का नशा गहरा नहीं पड़ा।"

"बटलर, सबके जाम शैम्पेन से भर दो। मैं तजवीज़ करता हूं एक जामे-सेहत…"

मैं पूछता हूं, "मंजूर इलाही, कभी पैलेस होटल गए हो?"

"अक्सर जाता हूं। कल भी जाऊंगा। सुराही और ज़ेवरों के सन्दूकचे का आर्डर वहीं का है। साहब कल लन्दन जा रहे हैं, इस-लिए यह काम आज ही खत्म कर देना होगा।"

मैं उस कमरे के चारों तरफ देखता हूं। पीली मिट्टी की दीवारें, कच्चा फर्श, एक तरफ मिट्टी के दो घड़े, एक तरफ दो-चार बाल्टियां, एक तरफ चूल्हा और कुछ बरतन। एक ताक़चे में कापड़ी रखी हुई है। एक ताक़चे में दवाओं की बोतलें हैं। हवा में बदबूदार पानी की नमी बसी हुई मालूम होती है। धीरे से मंजूर इलाही की बीवी खांसती है तो उसका सारा शरीर किसी पुराने लक्कड़ों के पुल की तरह हिलता हुआ मालूम होता है।

"बस खत्म है।"

"क्या?" मैं मंजूर इलाही से पूछता हूं।

"इस सुराही का काम !" मंजूर इलाही मुझे सुराही दिखाता है। इस अंधियारे कमरे की रोशनी के दायरे में ले जाकर वह मुझे अपनी सुराही दिखाता है। एकाएक गुलनुमा रंगों में खिलकर सुराही किसी बिल्लौरी फानूस की तरह जगमगा उठती है। मैं उसकी सुन्दर आकृति को निहारता रह जाता हूं। क्या इसकी उंगलियों में ऐसी सुन्दरता, कोमलता और संयम का सृजन संभव है ? मैं आश्चर्य से उस कमरे की नंगी दीवारों को देखता हूं और उस हसीन सुराही को देखता हूं और देखता का देखता रह जाता हूं।"

"बस इतनी-सी जगह बची है, एक शेर लिखने के लिए," मंजूर इलाही मुझे सुराही पर अंतिम एक मेहराब की तरफ इशारा करके बताता है। "यहां एक शेर लिखूंगा। कोई अच्छा-सा शेर बताओ।"

मैं कभी उसकी सुराही को देखता हूं, कभी मंजूर इलाही के मुंह को, कभी अपनी भाभी को। कभी उस कमरे को, उसकी दीवारों को, उसकी फूस की छत को, और धीरे से कहता हूं :

गुरेजद अज सफ़-मा हर कि मर्द-गोगा नीस्त
कसे कि कुश्ता न शुद अज कबीलए-मा नीस्त

(जो आदमी रण का सूरमा नहीं है वह हमारी पांतों से कतराता है, जो आदमी कत्ल नहीं हुआ वह हमारे कबीले से नहीं है।)

"हां, बिलकुल ठीक !" मंजूर इलाही सर हिलाकर कहता है, फिर होले-होले सुराही पर शेर लिखते हुए मुझसे पूछता है, "किसका है ?"

"नज़ीरी ने कहा था, आज से तीन सौ साल पहले।"

"बिलकुल आज का शेर मालूम होता है।"

रात गुजरती जाती है। जेहलम बहता जाता है। ऐसे में क्यों मेरा जी चाहता है कि अपने सारे कपड़े फाड़ दूं और पगले कादिर बट की तरह ज़ोर से चिल्लाकर पूछूं : दसवां पुल कहां है ? कहां है वह मेहराब सतरंगी आरज़ुओं की, उम्मीदों की, बहारों की जो जड़ीबल को पैलेस होटल से मिला दे ?

९

सपनों का कैदी

मेरी शक्ल-सूरत ऐसी नहीं है कि कोई औरत एक बार मुझे देखकर दूसरी बार मुझपर निगाह डालने की तकलीफ गवारा कर सके। मगर मेरी बीवी यही समझती है कि इस दुनिया में हर औरत का सतीत्व मेरी वजह से खतरे में है। आम तौर पर औरतें मुझसे ऐसा सलूक करती हैं जैसे घर पर पुराने फर्नीचर से किया जाता है और इस तरह मुझे संबोधित करती हैं जैसे मेरे सर पर टोपी नहीं भाजी का टोकरा रखा हो। इसपर भी मेरी बीवी जल-जलकर खाक हुई जाती है। अक्सर मुझसे पूछती है :

"वह क्या बात कर रही थी तुमसे ?"

"कह रही थी, मटर का भाव इतना महंगा क्यों हो गया है ?"

"झूठ बोलते हो? वह तो तुम्हारे सोफे में घुसी पड़ रही थी और हंस-हंसकर बातें कर रही थी और क्या गहरा मेकअप किया था उसने और क्या कामनी रंग की साड़ी पहनी थी उसने और कैसी तेज़ खुशबू लगाकर वह रिझाने आई थी तुम्हें, मुर्दार !"

"मगर वह मेरे दोस्त की बीवी है। सात उसके बच्चे हैं। उसकी बड़ी लड़की की शादी फरवरी में होनेवाली है। वह पचास बरस की औरत है। कह रही थी, "भाई साहब, आप···"

"भाई साहब !" मेरी बीवी ने व्यंग्य से दुहराया।

मैंने फिर अपना वाक्य दुहराया, "कह रही थी—भाई साहब, पुत्री की शादी में आप बराबर शरीक रहेंगे, सब काम आपको करना पड़ेगा उनके साथ।"

"उसने कहा, आभा बेटी के फेरों के समय भार दिए तुमने भी लगवा ले।"

"अरे क्या कहती हो?" मैंने गुस्से में भड़ककर कहा, "उस शरीफ औरत पर ऐसी गंदी तोहमत लगाते हुए तुम्हें शर्म नहीं आती?"

"हरामजादी, कुटनी! आए तो सही वह दुबारा मेरे घर में। उसकी चुटिया काटकर न फेंक दूं।"

"तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है? मैं उस पचास बरस की बुढ़िया से इश्क करूंगा?"

"अरे तुम···?···तुम्हें तो अगर मिट्टी की औरत भी मिल जाए तो उससे भी इश्क कर लो। तुम्हें तो अगर कूड़े के ढेर पर गिरी-पड़ी, गली-सड़ी भिखारिन भी मिल जाए तो उससे भी आंखें लड़ा लो। मैं देखती नहीं हूं, किस बेहयाई से तुम मेरी सहेलियों को ताकते हो! तुम कोई आदमी हो!"

"हां, हां! मैं जानवर हूं!"

"जानवरों से भी बदतर!"

गुस्से से खौलता हुआ मैं घर से बाहर निकल गया। दिन-भर की आफिस की भक-भक के बाद यह सोचकर आया था कि रमा अच्छे-अच्छे कपड़े पहने, चायदानी पर उम्दा-सी टी-कोजी चढ़ाए, मेज पर चमकते हुए प्याले रखे उम्दा-सी चाय पिलाएगी। यहां यह मुसीबत गले पड़ी।

तेज-तेज कदमों से चलता, जलता-भुनता नुक्कड़ के ईरानी रेस्तोरां में चला गया और एक चाय का आर्डर दिया।

"सिंगल या डबल?" छोकरे ने पूछा।

"सिंगल।"

"स्पेशल या चालू?" छोकरे ने फिर पूछा।

"चालू।" मैंने कहा।

"हलकी या कड़क?"

"कड़क।" मैंने कड़कती हुई आवाज में कहा और छोकरा मुस्कराता हुआ पलट गया और किचेन के काउंटर के बैरे से बोला,

हड्डियाँ टूट रही थीं।

"एक सिगल, चालू, कड़क। बाबू आज फिर घर में लड़कर आया है।"

यह बड़ी सख्त दुनिया है। आदमी कारखाने में काम करे तो कोल्हू के बैल की तरह घुमाया जाता है। दफ्तर में काम करे तो मेज पर धोबी के कपड़ों की तरह पीटा और पटका जाता है। घूमने-फिरने का काम हाथ में ले तो घण्टों दफ्तरों के बाहर सड़ाया जाता है। यह बड़ी सख्त दुनिया है। पहली ही नजर में हर शख्स आपको देखकर यह समझ लेता है कि आप उसके पास उसकी पाकेट मारने के लिए आए हैं। और अगर ध्यान से देखा जाए तो हमारे जीवन का माडर्न बिजनेस एक प्रकार की शरीफाना पाकेटमारी के सिवा और क्या है और मुकाबले के माने इसके सिवा और क्या है कि कौन किसकी ज्यादा पाकेट मार सकता है। मगर मैं जो इस सर्वा-घोही और चारों ओर फैली हुई उस विराट और भयानक मशीन का एक पुर्जा हूँ, एक छोटा-सा तिनका हूँ, नन्हा-सा कण हूँ—किस तरह इसका जिम्मेदार ठहराया जा सकता हूँ? उन लोगों ने मुझे मार-मारकर और घिसा-घिसाकर और घुमा-घुमाकर बिलकुल अपनी मशीन पर फिट कर लिया है और अब मेरी दिलचस्पी केवल इसमें है कि घर किसी तरह चलता रहे और मैं किसी तरह चलता रहूँ। एक ही जगह एक ही पेंच पर फिट किया हुआ किसी मशीन में पुर्जे की तरह चलता रहूँ। मुझे मालूम है कि वे मुझे तेल नहीं देते हैं और मेरा जंग साफ नहीं करते हैं और मैं इसी तरह दिन-रात मेहनत-मशक्कत करता हुआ उस मशीन के अन्दर घिस-घिसकर टूट जाऊँगा। फिर वे मुझे मशीन से निकालकर फेंक देंगे और एक नया पुर्जा ले आएँगे। मगर फिर मेरा घर कैसे चलेगा? और कौन उसका किराया अदा करेगा? और कहाँ से मैं रमा के लिए साड़ी लेकर आऊँगा? और किस तरह छोटे बच्चों की स्कूल की फीस और बड़े लड़के के कालिज की फीस अदा होगी? और वह पेंशन वगैरह, जो हर कम्पनी अपने बूढ़े मुलाजिमों को मुरव्वतन देने के बारे में मैं जानता हूँ, कैसे मिल सकेगी? ये बड़े खौफनाक प्रश्न हैं मेरे लिए, और उनको घुमा-घुमाके देख रहा हूँ

बाल सफेद होने जा रहे हैं।

लेकिन रमा को इन प्रश्नों में कोई दिलचस्पी नहीं है। वह बाहर की उस निर्मम, भयानक दुनिया का अन्दाजा भी नहीं कर पाती जिसमें मुझे काम करना पड़ता है; और घर आते ही मुझे कांटों में घसीटना शुरू कर देती है। हालांकि उस रोज जब मेरा और उसका रेडियोग्राम के बारे में झगड़ा शुरू हुआ, वह घर के दरवाजे के बाहर एक सुन्दर फीरोजी रंग की साड़ी पहने हुए हंस-हंसकर एक औरत को विदा कर रही थी और उसकी बातों का लहजा बहुत ही मीठा और आकर्षक था और मैं उसके खुशगवार मूड को देखकर बहुत खुश हुआ और सोचा—आज शाम की चाय पर उनसे गाजर के हलवे की फरमाइश करूंगा।

मगर हुआ यह कि उस औरत के जाने के बाद रमा ने अपनी खूबसूरत फीरोजी रंग की साड़ी उतार दी और फौरन एक मट-मैली धोती पहन ली और यह मेरी समझ में बिलकुल नहीं आता कि हमारे यहां की औरतें सिर्फ मेहमानों की खातिरदारी के लिए बढ़िया साड़ी क्यों पहनती हैं और ज्यूंही मेहमान चले जाते हैं, साड़ी उतर जाती है, मुस्कराहट भी उतर जाती है, चित्त की प्रसन्नता भी उतर जाती है, फिर फौरन भवें तन जाती हैं, त्योरियों पर बल आ जाते हैं और कमर पर दोनों हाथ रखकर धमकाते हुए रमा मुझसे कहती है:

'कुछ मालूम भी है तुम्हें ?'

'क्या ?' मैंने सहमकर पूछा।

'पुशी की मां आई थी। उन लोगों ने एक नया रेडियोग्राम खरीदा है।'

'वह पुशी के दहेज के लिए होगा।'

'पुशी के दहेज के लिए अलग खरीदा है। यह घर के लिए है। और एक तुम हो, छः साल से इसी डेढ़ सौ रुपल्लीवाले खटारा सेट को लिए बैठे हो जिसकी मरम्मत कराते-कराते मेरा दीवाला पिट चुका है। कमबख्त कोई स्टेशन नहीं बजाता ठीक तरह से। रेडियो सीलोन लगाऊं तो काहिरा का स्टेशन बजने लगता है। एक

दिन उठाकर फेंक दूंगी तुम्हारे इस खटारे रेडियो को।'

'फेंक दो।'

'तो तुम लाकर क्यों नहीं देते हो मुझे रेडियोग्राम?'

'दो हज़ार लाऊं कहां से?'

'जहां से पुशी का बाप लाता है।' रमा चिल्लाकर बोली।

'पुशी का बाप तो एक बड़ी फर्म में एक्ज़ीक्यूटिव है और तीन हज़ार तनख्वाह पाता है।'

'तो तुम यह ज़लील नौकरी छोड़ क्यों नहीं देते?'

'यह ज़लील नौकरी छोड़ दूं तो दूसरी ज़लील नौकरी कहां से मिलेगी?'

'शांता के बाप को कैसे मिल गई? साढ़े तीन सौ की नौकरी छोड़कर उसे साढ़े सात सौ की नौकरी कैसे मिल गई? कुछ मालूम भी है, वे लोग किस्तों पर एक रेफ्रीजरेटर लेकर आए हैं और अब यह फ्लैट छोड़कर एक बड़े फ्लैट में जानेवाले हैं। और एक तुम हो—जब से तुम्हारे पल्ले बंधी हूं, इस गले-सड़े बदबूदार फ्लैट में कैद कर रखा है।'

'यह बदबूदार फ्लैट है?' मैंने गुस्से से कहा।

'बदबूदार फ्लैट?—इसको फ्लैट कहना लफ्ज़ फ्लैट की बेइज़्ज़ती करना है,' रमा भी गरम होकर बोली, 'दीवारों में दरारें, किचेन में काकरोच, कारीडोर में अंधेरा, कमरों में सीलन; यह घर है कि अस्तबल? मेरे मायके के नौकर इससे बेहतर घर में रहते हैं। मेरे मायके के कुत्ते इससे बड़े कमरों में लोटते हैं।'

'मैं कुत्ता हूं?' मैं गुस्से से चिल्लाया।

'टर्राओ मत, मैंने तुमको कुत्ता नहीं कहा।'

'मैं टर्राता हूं?' मेरा खून गुस्से से खौलने लगा, 'मैं मेंढक हूं, मैं कुत्ता हूं, मैं जानवर हूं, तो तुम मेरे साथ रहती क्यों हो?'

'कौन रहता है तुम्हारे साथ, मैं अभी मायके जाती हूं।' यह कहकर रमा ने चाबियों का गुच्छा साड़ी से खोलकर ज़ोर से फर्श पर पटक दिया और आंखों में आंसू लिए घर से बाहर निकल गई।

रमा घर से निकलकर नुक्कड़ के ईरानी रेस्तोरां में पहुंची और काउण्टर पर एक तरफ खड़े होकर होंठ भींचे, आंखों में आंसू पिए खड़ी हो गई और जब फोन खाली हुआ तो एक छोकरे से बोली, 'जरा बुकिंग-आफिस टेलीफोन करना, पूछना आज रात लखनऊ जानेवाली गाड़ी में फर्स्ट क्लास की सीट मिलेगी ?'

'दो सीटें खाली हैं।' छोकरे ने टेलीफोन मिलाकर बताया।

'अच्छा।' रमा बोली।

'रिजर्व कराऊं ?' छोकरे ने पूछा।

'नहीं, मैं खुद करा लूंगी,' उसने बड़ी सख्ती से जवाब दिया। और ईरानी रेस्तोरां से बाहर निकलने लगी, तो छोकरे ने कहा, 'टेलीफोन के बीस पैसे ?'

'हिसाब में लिख दो।' रमा बाहर जाते हुए बोली।

होटल का छोकरा वापस काउण्टर पर आया और ईरानी से बोला, 'टेलीफोन के बीस पैसे हिसाब में लिख लो। बाबू की बीवी मायके जा रही है।'

× × ×

लेकिन मायका तो एक अस्थायी शरण है। मायके जाकर भी पलटना पड़ता है और सपने से सचाई की तरफ लौटना पड़ता है और सपने और सचाई, ख्वाब और हकीकत में इतना अन्तर है कि मेरी समझ में यह नहीं आता कि मैं किससे किसकी बेवफाई का गिला करूं और किसके मिजाज के टेढ़ेपन को बदनाम करूं। कभी-कभी मुझे ऐसा लगता है जैसे रमा इस युग की औरत नहीं है—न उसका रूप, न उसका स्वभाव, न उसकी तबियत। उसके व्यक्तित्व की कोई अदा इस जमाने की नहीं है। उसके सारे सपने अतीत के सपने हैं जहां रंगीन चिलमनों के पीछे सरसराते हुए रेशमी परदों के अन्दर मोमी शमें रोशन होती हैं और दालान-दर-दालान परदे गिरते जाते हैं और कोरी सुराहियों के गिर्द मोगरे के हार लपेटे जाते हैं और गुलाब की सी हथेलियों पर कंवल की सी कटोरियों में खुशबुएं सजाए बांदियां चांदी की छपर-खट पर थाल खोले हुए किसी मुगल शहजादी की तरह शायराना मिजाज रमा के सोलह

शृंगार में मसरूफ (व्यस्त) हो जाती हैं। हालांकि इस बीसवीं सदी की मशीनी दुनिया में कुत्तों की तरह एक-दूसरे पर लपकती हुई इच्छाओं के जगत् में यह सब कुछ कैसे सम्भव है और कितनों के लिए सम्भव है और कैसी-कैसी कोमल भावनाओं और बेगुनाह जिन्दगियों का गला घोंट देने के बाद सम्भव है ? इसका रोना मैं किससे रोऊं और समझाऊं किसको और किसको बताऊं क्योंकि मेरे चारों ओर की दुनिया में कौन है जो इस क़िस्म के बेकार सपनों का कैदी नहीं है ? और कौन है वह जो अपनी जगह अपने परिवेश में अपने जीवन के लिए एक ऐसा निरर्थक वैभवशाली स्वप्न नहीं देखता और इसी सपने के गिर्द चक्कर लगाते हुए आधे सच और आधे सपने की धूप-छाव में अपनी पूरी ज़िन्दगी बसर नहीं कर देता। यह इस युग का बहुत बड़ा दुर्भाग्य है कि हर आदमी का अपना एक अलग सपना है और किसीको फुर्सत नहीं है कि वह झांककर अपने बिलकुल पास किसी दूसरी आत्मा के सपने को देखने या समझने की कोशिश कर सके या उसके साथ अपने सपने मिला ले।

कभी-कभी तो मुझे ऐसा लगता है जैसे इस जीवन-क्षेत्र में हर आदमी अपने-अपने सपने की बन्दूक उठाए चल रहा है या अपने सपनों की बेड़ियां और हथकड़ियां पहने यह सोचता है कि वह आज़ाद क्यों नहीं है। क्या सचमुच इन लोगों की आंखें हैं या कि ये हर जगह अपने सपनों का प्रतिबिम्ब देखते हैं ? क्या इन लोगों के कान हैं या कि ये हर जगह अपने सपनों के गीत सुनते हैं ? क्या इन लोगों के हाथ हैं या कि ये हर जगह अपने ही सपनों के जाल बुनते हैं ? क्या इन लोगों की कोई एक मंज़िल है या कि ये हर जगह अपने-अपने सपनों की टांगों से चलते हैं और अपनी प्रेमिका के चेहरे में भी अपने ही सपने का चेहरा खोजते हैं ? यह किस तरह का स्वार्थ है जिसके लिए उन लोगों ने बाहर की हर सचाई को, चांद को, सूरज को, आकाश को, धरती को, झरनों को, झील को, उषा की लाली को और अन्दर की हर खूबसूरती को, ममता को, मुहब्बत को, भाई-चारे को, समीपता के हर सेन को और

उसकी फसल की हर बाली को अपने मापनों की नलियों में बांधकर अलग-अलग खड़ा कर रखा है और अब वह हैरान है कि यह दुनिया आगे क्यों नहीं चलती ?

हर रोज की दांता-किलकिल से घबराकर मैंने आत्महत्या करने की ठानी। जब चीजें समझ में न आएं और समस्या का कोई हल न मिले और बचाव की कोई सूरत न निकले और जीवन हर क्षण एक भार बन जाए, उस वक्त आदमी बेबस होकर यूं भी सोचता है। इत्तफाक से उस दिन का झगड़ा भी बहुत लम्बा और भयानक था। घर के नौकर ने चीनी की एक प्लेट तोड़ डाली थी और रमा ने चिल्ला-चिल्लाकर आसमान सर पर उठा लिया था और नौकर को निकालने के लिए तैयार हो गई थी।

"एक चीनी की मामूली-सी प्लेट के लिए इतना गुस्सा करती हो !" मैंने रमा को समझाने की कोशिश की।

"तुम्हारे लिए मामूली होगी, मेरे लिए बहुत है। जिस घर में तीन साल से चीनी का एक ही सेट चला आ रहा हो, उस घर के लिए चीनी की एक प्लेट का नुकसान कोई कम नुकसान नहीं है।"

"दूसरी आ जाएगी।"

"दूसरी आ जाएगी मगर ऐसी तो नहीं आएगी। मेरा सेट का सेट चौपट कर दिया इस हरामजादे शूद्दर (शूद्र) ने।"

"गाली मत दो !" मैंने कड़ककर कहा, "शूद्र हुआ तो क्या हुआ, आखिर वह भी एक इंसान है।"

"हां, हां, तुम तो उसकी तरफदारी करोगे ही। एक शूद्र दूसरे शूद्र का साथ नहीं देगा तो और कौन देगा ?" रमा चमककर बोल उठी।

मैं धक्-से रह गया। बात सच्ची थी, पर आज तक मैंने रमा को नहीं बताई थी। रमा से शादी करने की खातिर, अपनी मुहब्बत को सफलता की मंजिल तक ले जाने की खातिर मैंने रमा और उसके मां-बाप से झूठ बोल दिया था। इस मुहब्बत की खातिर मैंने

अपना नाम, जात-पांत, सगे-सम्बन्धियों का अता-पता तक छुपा डाला था और आज तक मैं समझता रहा कि रमा को उसके बारे में कुछ मालूम नहीं है।

रमा मुझे चुप देखकर, बढ़-बढ़कर बोलने लगी, "हिम्मत है तो कर दो इंकार! —एक बार तो फूटो न मुंह से, कह दो ना! तुम समझते हो, मैं कुछ जानती नहीं हूं। तुम्हारी असलियत पहचानती नहीं हूं। मगर मुझे उस लंगड़े सुरेन्द्र की मां ने सब बता दिया था। वह तो तुम्हारी सात पुश्तों को जानती है। उसने मुझे बता दिया था कि तुम बांकेपुर के रहनेवाले नहीं हो, मौजा सेलू के जुलाहे हो और तुम्हारा बाप भी जुलाहा था, और मां भी जुलाहिन थी और तुम घर से भागकर शहर आ गए और किसी तरह पढ़-लिखकर कृष्णकांत शर्मा बन गए और मुझ निगोड़ी को फांस लिया।"

"फांस लिया?" मैंने गरम होते हुए पूछा।

"फांस नहीं लिया तो और क्या? अगर मुझे मालूम होता कि तुम जात के धुनिये-जुलाहे हो, बदकौम हो और सात पुश्तों तक तुम्हारी रगों में किसी शरीफ दो-जन्मे का खून नहीं रहा तो मैं एक क्षत्रिय की बेटी होकर तुम्हें मुंह लगाती, तुमसे मुहब्बत करती? तुम्हारे मुंह पर न थूकती।"

अचानक मैं गुस्से से कांपने लगा और अपनी जगह से उठकर चिल्लाने लगा, "तो थूक दो न मुझपर। थूक दो मेरे मुंह पर और अपनी मुहब्बत पर, जो इन्सान को नहीं देखती है उसकी जात को देखती है। जो उसके काम और उसकी मजबूरी को नहीं देखती है और सिर्फ अपनी ख्वाहिशों का बिगुल बजा-बजाकर हर वक्त मुस्कराने पर आमादा रहती है। लानत है ऐसी जिन्दगी पर, और इस तरह जीने से तो मर जाना बेहतर है।"

यह कहकर मैंने दरवाजा जोर से बंद कर दिया और घर से बाहर निकलकर समुद्र की तरफ चला आया। मेरे शरीर का रोआं-रोआं कांप रहा था और मैं आत्महत्या का फैसला कर चुका था। अब जिन्दा रहना बेकार है।

तारकनाथ रोड से गुजरकर मैं काट-मारा चौक की तरफ

गुड़ा और बसों का अड्डा पार करके समुद्र के किनारे पर आ गया ।

बाहर खुली हवा में आकर घर की घुटन और अंधेरे से दूर मुझे यहां समुद्र का किनारा बहुत सलोना और रोशन मालूम हुआ। अभी सूरज उगा नहीं था और समुद्र की मचलती हुई सुनहरी लहरों में लोग-बाग नहा रहे थे और खुशी की धूमें मचा रहे थे।

औरतें खूबसूरत लिबास पहने हुए चहलकदमी के लिए बाहर निकल आई थीं और अपने बच्चों को गोद उठाए या फिर उन्हें धकेलती हुई या अपने आशिकों के हाथ में हाथ दिए इठलाती हुई मटरगश्ती कर रही थीं ।

मैंने सोचा, मैं कपड़े उतारकर सीधा समुद्र में घुस जाऊंगा और नहाते-नहाते दूर निकल जाऊंगा जहां से वापस आने का कोई डर ही न हो। बस, किसीको पता ही न चलेगा। खस कम जहां पाक। जैसे लहरों पर एक बुलबुला फट गया ऐसे ही समझो मैं मर गया ।

भेल-पूरीवाले की दुकान पर ग्राहकों की भीड़ लगी थी। पीली-पीली बेसनी सिवैया और नमकीन मेव और भुना हुआ चेवड़ा और सफेद-सफेद कुरकुरे मुरमुरे और हरी-हरी मिर्चें और चटपटी चटनी—मेरे मुंह में पानी आने लगा।

'पहले एक भेल-पूरी खा लूं,' मैंने सोचा।

भेल-पूरी खाकर मैं आगे समुद्र की तरफ बढ़ गया और एक जगह रेत पर खड़ा होकर अपनी कमीज उतारने लगा। पहले कमीज उतारूंगा, फिर पतलून फिर अन्दर की चड्डी पहने सीधा समुद्र में घुस जाऊंगा आर खत्म !

इतने में मेरी निगाह बनारसी गोलगप्पेवाले रेहड़े पर पड़ी। आलू की टिकियां तली जा रही थीं और तेल में 'सूं-सूं' की आवाज पैदा करती हुई भूरी हुई जा रही थीं। शीशे के एक बड़े गोल मर्तबान में साफ, सुनहरे, करारे गोलगप्पे भरे हुए थे और बारह मसाले की चाटवाले पानी की हंडिया के गिर्द मोगरे के फूलों की वेणी उलझी हुई थी और सफेद-सफेद दही-बड़ों पर हरी और लाल मिर्चों

रही हवाइयां छूट रही थीं।

'थोड़े-से गोलगप्पे खा लूं,' मैंने सोचा, 'मरना तो है ही।'

गोलगप्पे खाकर मज़ा आ गया। होंठों से और ज़ुबान से, नाक से और आंखों से जैसे धुआं-सा उठ रहा था और ज़ुबान बार-बार चटखारे लेती हुई मालूम होती थी। खूब पेट भरके खाया और फिर मरने के लिए आगे चला।

आगे चलकर मानो समुद्र के बिलकुल किनारे जाकर मुझे आइसक्रीमवाला मिला। अलम्यूनियम के साफ़ गिलासों में कुल्फ़ियां जमाई थीं उसने। खोए की कुल्फ़ी थी और पिस्ते की कुल्फ़ी थी और बादाम की कुल्फ़ी थी। और दो तरफ़ बड़े-बड़े चमकते हुए थालों में सफ़ेद और सुनहरे फालूदे के लच्छे भरे रखे थे।

'आख़िरी बार कुल्फ़ी भी खा लें, असली पंजाबी कुल्फ़ी,' मैंने सोचा, 'इसमें हर्ज ही क्या है? उसके बाद मरना तो है ही।'

कुल्फ़ी खाकर मेरा उत्साह ठंडा पड़ गया। ऐसा मालूम हुआ जैसे दिल और दिमाग़ पर किसीने मलाई की तह जमा दी है और सारी रूह को एयरकंडीशंड कर दिया है। हवा के हलके-हलके झोंकों में मुझे नींद-सी आने लगी और मुझे यह सोच-सोचकर हैरत होने लगी कि मुझे मरना होगा, वाकई मरना होगा—'आज के बजाय कल पर नहीं टाला जा सकता?'

अभी मैं इसी तरह सोच ही रहा था कि किसीने एक तेज़ झटके से मेरा बाज़ू पीछे से पकड़ लिया। मैंने मुड़कर देखा तो रमा थी।

"घर से मरने के लिए आए थे और यहां आइसक्रीम खा रहे हो? अरे तुम पजामी!" रमा ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगी।

रमा ने बहुत सुन्दर साड़ी पहनी थी। बालों में जूही की वेणी लगाई थी और वह बहुत प्यारी और सुन्दर मालूम हो रही थी। मैंने मुस्कराकर उसका हाथ पकड़ लिया।

रमा ने मेरे हाथ को होले से झटककर आंखें मटकाकर बड़ी अदा से कहा, "अकेले-अकेले खा गए न सारी आइस क्रीम।"

"अब भी खा लो, जितनी चाहो," मैंने अपने दिल के इर्द-गिर्द समुद्र की तरह फैली हुई उदारता से कहा।